एक पीढ़ी का दर्द

(कहानी संग्रह)

एक पीढ़ी का दर्द

क्षमा गोस्वामी

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२३ दरियागंज नयी दिल्ली ११०००२

शाखाएं
चौड़ा रास्ता जयपुर
३४ नेताजी सुभाष मार्ग इलाहाबाद ३

ISBN 81 214-0275 1

मूल्य ३२ ००

नेशनल पब्लिशिंग हाउस २३ दरियागंज नयी दिल्ली ११०००२ द्वारा प्रकाशित/प्रथम संस्करण १९८९/सर्वाधिकार लेखिकाधीन/सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस ए ९५ सेक्टर ५ नोएडा २०१३०१ में मुद्रित। (247 1 11 289/N)

EK PEEDHEE KA DARDA (Short stories) by Kshama Goswami
Rs 32 00

दो शब्द

आसपास का समाज मेरी संवेदनाओं को बराबर भेदता आया है। मेरे लेखन का ऊर्जास्रोत ऐसी ही संवेदनाएं हैं। पत्रकारिता के रूप में इन्हें बराबर लिखती आयी हूं। पर न जाने क्यों कुछ ऐसा अनुभव होता रहा कि आज के यथार्थ से जुड़ी संवेदनाओं को अपनी अभिव्यक्ति के लिए कुछ और भी माध्यम की तलाश है। अपने छोटे-से आकार के बाद भी कहानी मानवीय संवेदनाओं को उसके अंतर्द्वंद्व को जितनी गहराई से उतार सकती है—ऐसी कलात्मक क्षमता अन्य विधा में नहीं। सोचती हूं मेरी संवेदनाओं को जो तलाश थी संभवतः इस प्रयास में पा सकें। यह कहानी संकलन इसी प्रयास की परिणति मात्र है।

पर इसके साथ ही इस संकलन को प्रस्तुत करते समय एक संकट का भी अनुभव हो रहा है। पाठकों की रचनात्मक अपेक्षाओं को लेकर यह उन्हें कितना संतुष्ट कर सकेगा मन में कुछ संकोच उभरता है। फिर भी लेखन में संवेदनाओं की सच्चाई ही तो रचनाधर्मिता की सबसे बड़ी कसौटी है। इसीलिए पाठकों की रचनात्मक अपेक्षाओं को लेकर मन एक तरह से आश्वस्त भी है कि वे संवेदनाओं के धरातल को छूकर इस संकलन में निश्चित रूप से कुछ पा सकेंगे।

कहानियों की घटनाएं पात्र सभी कुछ अपने आसपास के ही रोज रोज होने और मिलने वाली घटनाएं और पात्र हैं। *क्रांति का गणेश वह भोला लड़का है* जो आज से तीन वर्ष पहले मेरे ही परिचित के यहां नौकर के रूप में आया था। अंत में घर के सदस्यों की मध्यवर्गीय मानसिकता का शिकार हो उसे चला जाना पड़ा। पर्दे की

वृद्धा मां जी और कुछ नहीं आसपास के घरों में रहने वाले वृद्ध पीढ़ी के वे लोग ही हैं जो पुरातन और आधुनिक दो भिन्न संस्कृतियों और समाज के ऊहापोह में समायोजन के संकट में दबे हुए अंदर-ही-अन्दर पीड़ित हैं। स्वयंवरा की शुभा आज भी बराबर याद आती है। कार्यालय जाते समय एक ही बस के उस लंबे सफर में होने वाले वार्तालाप के दौरान अपने मन में दबी हुई पीड़ा को वह अक्सर उगल देती थी। एक पीढ़ी का दर्द का सोनू मेरे ही पड़ोसी का लड़का है। युग की भयावह घटना ने उसे इतना आक्रांत किया कि उसका अपनी ही मित्र मंडली से विश्वास उठ गया। अपने पड़ोसी मित्रों के साथ वह बहुत दिनों तक खेलने नहीं निकला। मातम की लड़की की विडंबना कुछ कम नहीं। आज भी वह छज्जे पर एक बच्चा खिलाते दीखती है। सुना है बाप ने दूसरी शादी कर ली। यह बच्चा उसकी दूसरी मां का ही है। इसी प्रकार अन्य कहानियों के पात्र घटनाएं किसी-न-किसी रूप में आज के यथार्थ में फैलती जाने वाली विसंगतियों और अनेक उन विद्रूपताओं से जुड़ी हैं जो मानव को अंदर ही अंदर खंडहर बनाती जा रही हैं।

और इन सबको लिखते समय जब लेखनी उठायी तो अनेक बार ऐसा अनुभव हुआ कि इन पात्रों में से स्वयं मैं तो कोई पात्र नहीं अथवा उनसे जुड़ी घटनाएं स्वयं मेरे जीवन से जुड़ी घटनाएं तो नहीं? अब इन कहानियों को पढ़ते समय संभवत आप भी कहीं-न-कहीं अपना प्रतिबिंब इनमें खोज पायेंगे—यदि ऐसा होता है तो मुझे खुशी होगी—मेरा यह छोटा-सा प्रयास निश्चय ही सफल हुआ।

—क्षमा गोस्वामी

क्रम

एक
पीढ़ी
का
दर्द

क्राति

उसे लकर स्वयं उसका ममेरा भाई आया था। ममेरा भाई मेरे ही कार्यालय में चपरासी है और लगभग एक साल से उसका बराबर जिक्र करता आया है।

अभी तक वह दरवाजे के बाहर ही खड़ा था। ममेरे भाई ने ही उस अंदर बुलाया और मरी आर बढ़ा दिया   लीजिए साहब मैंने आपसे वायदा किया था।

तो यह है वह लडका ' मैंने उसे ऊपर से नीचे तक पूरे गौर से निहारा। कठिनाई से दस-बारह वर्ष की उम्र। उस पर भी ठिंगना कद। गोल-गोल मुख। मक्खन-सी मुलायम गुलाबी त्वचा। उसकी नीली छोटी आंखें एक लज्जाभाव के कारण पृथ्वी की ओर गढ़ी जा रही थीं। पर उनमें एक अवस्था की चंचलता और शरारत का अहसास भरपूर था। वह लाल रंग की निकर और नीले रंग का पूरी आस्तीन का स्वेटर पहने हुए था। पैरों मे बिलकुल नये-सफेद जूते। लगता है चलते समय खरीदकर ही पहनाये गये हों। यह पूरी तहजीब के साथ तैयार होकर आया था। उसे देखकर एक बार आंखो को विश्वास नहीं हुआ कि यह लड़का मेरे यहां चौका-बर्तन और झाड़ू-पोछा करने के लिए आया है।

मेरे बगल में बैठी पत्नी तो उस लडके को लगातार देखे जा रही थी। इतने सुंदर और साफ-सुथरे तहजीब वाले लड़के को देखकर उसका मन प्रफुल्लता से भर आया। पिछल कई महीनों से नौकर के लिए रट उसने ही लगा रखी थी। इसीलिए वह विशेष रूप स गदगद हो उठी   भगवान देता है तो फिर छप्पर फाड़कर।

लड़के के साक्षात्कार की प्रक्रिया मैंने ही शुरू की   क्या नाम है तुम्हारा?

गणेश   एक तरल-सी आवाज कानों मे मिठास घोल गयी।

देखने में तो तुम बहुत छोटे लगते हो घर का काम झाड़ू-पोछा बर्तन वगैरह सब कर सकोगे?

कर लूंगा मैं तो थोड़ा थाड़ा खाना भी बना लेता हूं। फिर वही तरल आवाज पर आत्मविश्वास से भरी हुई कुछ अधिक स्थिर-सी।

क्या-क्या बना लेते हो? इस बार पत्नी ने पहल की।

सा ब दाल चावल भाजी और अंडा उबाल लेता हूं। थोड़ा-थोड़ा आमलट भी

खाने भर को तो तुम बहुत कुछ बना सकते हो गणेश मैंने बीच में ही उसकी पीठ थपथपा दी और फिर हटकर कुछ और बातों की तहकीकात करनी चाही बाप क्या करता है?

नहीं है मर गया।

और मां क्या करती है?

गाव में है सा-ब! चाचा चाची का खेत है उसी में काम करती है।

और भाई-बहन भी हैं?

बहन कोई नहीं। एक बड़ा भाई है। वह नौकरी के लिए कलकत्ता चला गया है।

क्या नाम है उसका?

शंकर। मैं गणश वह शंकर मां ने ही रखे हैं दोनों के नाम। वह कहती थी

गणेश दो-चार वाक्यों के वार्तालाप से ही काफी खुल आया। सभवत वह अपने और भाई के नाम का कुछ इतिहास उनके रखे जाने का कारण भी बतलाना चाहता था पर ममेरे भाई ने उसे वही टोक दिया। अब ममेरा भाई उसके संबंध में मुझे विस्तार से बतलाने लगा।

थोड़ा बातूनी है साहब! अपने बडे भाई से पूरे बारह साल छोटा है। हमारे फूफा ने दूसरी संतान के लिए बड़ी मिन्नतें की थीं। पहाड़ के टीले पर बने लाल मन्दिर में पूरे दस साल तक देवी-देवता पर जल चढ़ाया है। जब कहीं जाकर उनके यहा दूसरी संतान का जन्म हुआ। इसीलिए कुछ अधिक लाड़ला रहा। और इसी स बातूनी भी। इसके पिता जी की इच्छा थी कि वे इसे खूब पढ़ायगे लिखायग पर इसके भाग्य ने ही साथ नहीं दिया। अगले महीने पूरे तीन साल हो जायेंगे उन्हें गुजरे। अभी तक तो यह

भी अपने चाचा के साथ ही खेतीबाड़ी में हाथ बंटा रहा था। पर मुझे लगा गांव में इसकी जिंदगी यूं ही बरबाद हो जायेगी। साहब ! आपने मुझसे कई बार घर के काम-काज के लिए लड़के की बात की थी। आपका व्यवहार देखकर मैं इसे आपके पास ले आया हूं। अब आप इसे संभालें। लड़का नेक है। कोई चोर-चपाट नहीं। मेहनती भी है।

इसी बीच पत्नी ने भी साक्षात्कार का परिणाम निकाल दिया था लड़का बुद्धिमान है। काम सीखने की क्षमता इसमें जान पड़ती है। घर में चल जायेगा।

मैंने भी ममेर भाई को आश्वासन दिया कि गणेश निश्चय ही मेरे यहां मेरे बच्चे की तरह रखा जायेगा।

पत्नी ने गणश को समझाया कि वह हर काम भली प्रकार करे। घर को अपना घर समझे। अभी वह उससे खाना नहीं बनवायेगी। उसका काम झाड़ू-पोछा और बर्तन की सफाई का होगा। हां चौके में वह उसकी पूरी मदद करेगा। मसाले पीसने साग-सब्जी काटने में उसे पूरा हाथ बंटाना होगा और सुबह की बेड-टी भी उसे ही बनानी होगी। वह उसे सिखा देगी कि अच्छी चाय कैसे बनायी जाती है।

अंत में मैंने भी गणेश को एक और हिदायत दी देखो गणेश तुम यदि हमारे यहा मन लगाकर काम करोगे तो हम तुम्हें पढ़ायेंगे भी। घर क पास ही एक स्कूल है। हमार यहां काम ज्यादा नहीं है। इसीलिए तुम काम के साथ आसानी से पढ भी सकते हो।

मेरी इस हिदायत को सुनकर गणेश बहुत ही प्रसन्न हुआ था। इस बात को सुनते ही उसन पूरी तत्परता के साथ यह अवगत कराया कि वह गांव के स्कूल मे तीसरे दर्जा तक पढ़ा भी है। हिंदी पढ़-लिख लेता है। जब से शहर आया है टी वी में अंग्रेजी की बातं सुनना है पर उसे वे सब समझ नहीं आतीं। उसकी इच्छा है कि वह अंग्रेजी भी पढ़नी लिखनी सीख जाये।

गणेश सचमुच बहुत मेहनती लड़का था। पत्नी की एक ही आवाज में सुबह पांच बजे उठ जाता। हाथ-मुंह धोकर चाय बनाता और बारी-बारी से पहले हमारे और फिर चिरंजीव—मेरे पुत्र के कमरे में पहुंचाता। बरामदे में बैठकर खुद चाय पीता और तुरंत घर के काम में फुर्ती से लग जाता। उसक अन्दर एक बड़ा गुण यह था कि वह घर के सारे काम करते समय कभी भी थका हुआ नहीं दीखता। हमेशा स्फूर्तिमय बना

हुआ प्रसन्नचित्त ही रहता। कमरे में गणेश झाड़ू लगा रहा हो तो चौके से पत्नी की आवाज आती गणेश सब्जी पहले काट दे। अरे ! जरा मसाला भी पीस दे। मुझे कहीं बाहर जाना होता तो मैं पूरे जोर से अपने कमरे से ही आवाज लगाता— गणेश कहां है? जल्दी से नीचे जा स्कूटर साफ कर दे कहीं जरूरी काम पर जाना है।

गणेश पर पड़ने वाली आदेशों की इन बौछारों पर मेरे चिरंजीव भी कब चूकने वाले थे। वे भी मुझसे प्रतिद्वंद्विता निभाते हुए अपने कमरे से उतने ही जोरों से आवाज देते— गणेश मेरे जूतों पर अभी तक पालिश नहीं हुई। मेरा काम सुबह-सुबह सबसे पहले कर लिया करो। अब जाते समय जूतों का इंतजार करो।

गणेश एक साथ पड़ने वाली इन बौछारों को हंसते हंसते निपटा देता। उसके चेहरे पर इस आपाधापी को लेकर जरा-सी भी परेशानी न आती। कुछ-कुछ गुनगुनाता हुआ खरगोश की तरह इधर-उधर उछलता रहता।

उसकी दिनचर्या में रात के समय अंतिम कार्य बर्तन और रसोई साफ करने का था। वह इन कामों को निपटाने के बाद ही सोने जाया करता। घोर जाड़े में दिसंबर-जनवरी के महीनों में जब वह रात के समय बर्तन धोता तो सुई से चुभते ठंडे पानी के कारण उसकी फूल-सी कोमल हथेलियां सूजकर लाल कुप्पा हो जातीं। पर गणेश के लिए हथेलियों का इस प्रकार सूज जाना भी एक खिलवाड़-सा होता। रसोईघर से भागा हुआ आता और मेरे पढ़ने के कमरे के सामने खड़ा होकर दोनों हथेलियां फैला देता सा-ब देखो कितना लाल-लाल ।

मेरी इच्छा होती मैं दौड़कर उन हाथों को चूम लूं और कहूं— गणेश तेरी उम्र यह सब काम करने की नहीं। हीटर में हाथ सेंककर रजाई में दुबक जा। पर पता नहीं मेरे हृदय का यह ममत्व मेरे हृदय में ही कहीं छिपे स्वार्थ भाव से बुरी तरह रगड़ दिया जाता पूरी तरह अभिव्यक्त भी न हो पाता। बहुत कोशिश करने पर मैं केवल इतना ही कहता मेम साहब ने तुमसे कितनी बार कहा कि गरम पानी करके बर्तन धोया करो पर तुम सुनते नहीं हो। इस तरह ठंडे पानी में काम करके कहीं बीमार पड़ गये तो ?

हम पहाड़ के लड़कों को कोई ठंड वंड नहीं लगती। यह तो खून है खून ताकत। मेरी ताकत । सा-ब पंजा लड़ायेंगे? लड़ाकर देखिए। और यह कहते हुए वह अपनी उन लाल-लाल कुप्पा-सी हथेलियों को एक बार फिर से फैला देता।

दरअसल मेरे स्वयं के खुले स्वभाव के कारण ही गणेश मुझसे काफी उन्मुक्त

हाता आ रहा था। अब वह इस तरह की चुहलबाजी करने की हिम्मत भी कर लेता था। रात में काम निपटाने के बाद वह नियमित रूप से मेरे दरवाज के पास खड़ा हो जाता और खी खीं-खीं करके हंसना शुरू कर देता। हंसी का यह खनखनाता सैलाब मेरे लिए उसका सिगनल हुआ करता था। यानी उसने सारा काम निपटा दिया है और अब वह फुर्सत म है। इसीलिए मुझे भी अब सारी पढ़ाई-लिखाई छोड़कर उससे थोड़ी बात करनी होगी। कभी-कभी वह मेरे साथ देर-रात तक पढ़ने की जिद भी करता।

पढ़ने के लिए अदभुत शौक था उस बालक में। घर की अलमारियों में जितनी बाल-सुलभ पत्रिकाएं थी वे सब अब उसके सोने वाली कोठरी में एकत्र हो चुकी थीं। गणेश अक्सर देर-रात तक उन्हें पढ़ता रहता।

मेरे चिरंजीव से तो गणेश और भी घुल मिल गया था। चिरंजीव का इकलौता बेटा होने के कारण मनोविज्ञान कुछ अलग ढंग से ही विकसित हुआ था। घर में दूसरा भाई-बहन न होने के कारण सोलह वर्ष की अवस्था तक किसी से लड़ने झगड़ने शरारत अथवा चुहलबाजी करने का उसे कोई अवसर नहीं मिला था। और जब गणेश घर म आया तो उनकी दबी सारी बाल-सुलभ चपलता फूट पड़ी।

चिरंजीव साहब तो उन्हें अपने खिलवाड़ की वस्तु ही समझ बैठे। गणेश के गोरे गाल-मटोल शरीर को गटे पारचे के बबुए की तरह वे जिधर चाहे उसे तोड़ते-मरोड़ते रहते। कभी उससे कुश्ती लड़ते तो कभी दंड-बैठक का रिहर्सल। गणेश को भी इन सब बातों में आनंद आता था। अक्सर दोनों कमरा बंद करके खूब उठा पटक करते खेलते छेड़छाड़ करते और कभी-कभी खूब मन की बातें भी।

मेरी पत्नी कुछ रिजर्व स्वभाव की है। गणेश स भी वह बहुत नपे-तुले शब्दों म ही बातचीत करती है। साथ ही उसे मेरे और चिरंजीव दोनों से यह शिकायत रहती है कि हम लोगों का उसके साथ इतना घुलना-मिलना ठीक नहीं। नौकरों से थोड़ी पृथकता बनाये रखनी चाहिए। नही तो बाद में ये ही सिर पर चढ़ने लगते हैं।

मै उसे अक्सर समझाता बच्चा है। उसका मन भी तो प्यार-दुलार को करता होगा। गणेश इस तरह से प्रसन्न रहता है तो उसमें हर्ज ही क्या है?

एक दिन गणश और मेरे चिरंजीव में इसी प्रकार कोई चुहलबाजी चल रही थी। धीरे-धीरे दोनों का खिलवाड किसी वार्तालाप पर आकर टिक गया। चिरंजीव गणेश से पूछ रह थे

तू अपने गांव क्यों नहीं वापस चला जाता?

नहीं जाता मेरी इच्छा।

तुझे वहां मार पड़ती होगी। चाचा रोज मारता होगा।

चाचा वाचा कोई नहीं मारता ।

तो फिर मता गांव क्यों नहीं जाता?

मुझ तो शहर में ही रहना है।

क्यों?

पढ़ाई करूंगा यहां।

पढ़कर क्या करेगा?

अफसर बड़ा वाला।

कितना बड़ा?

बा त बड़ा आपसे भी बड़ा सा-ब से भी बड़ा खूब ऊंची कुर्सी पर बैठूंगा सबसे ऊपर सबसे आसमान ।

गणश और चिरंजीव में यह वार्तालाप किसी खिलवाड़ से ही शुरू हुआ था और इसीलिए खिलवाड़ की तर्ज में गणेश कुछ-कुछ बोल जा रहा था। पर इस बाल-सुलभ वार्तालाप के साथ दुर्घटना यह हुई कि वह उन दोनों तक ही सीमित नहीं रहा। उन्हीं दिनों मेरी पत्नी के चाचा गांव से आये हुए थ और वे भी इस वार्तालाप में शामिल हो गये। किसी जमाने म वह एक नामी तालुकेदार थ और उन लोगों म से ही एक थ जो यह समझते आये हैं कि माया पर किसी विशेष जाति का ही अधिकार होता है। गणश की बाल सुलभ बातों के अंत भावों में छिपी चपलता के मनोविज्ञान को एक किनारे कर वे उसका विश्लेषण अपनी सीमित समझदारी स कर बैठे। सामने लॉबी में आरामकुर्सी पर बैठे अखबार के पन्ने उलट-पुलट रहे थे। गणेश की बातें सुनकर वे वहां से गरजे

बहुत बड़बोला बनता है। कहता है कि साहब से ऊपर कुर्सी पर बैठूंगा। इसे तो मालिकों स बात करने का भी सलीका नहीं। इधर आ बे ! मेरे सामने आ। बतला क्या बक बक लगा रखी है?

गणेश एकाएक सहम गया। वह सिर झुकाकर चाचा के सामने खड़ा हो गया था कुछ नहीं सा-ब मैंने तो कहा था कि मैं पढ़ लिखकर बड़ा अफसर बनना चाहता हूं।

तेरा बाप क्या करता था? चाचा फिर गरजे।

मै तुरत समझ गया था कि चाचा पूरी घटना को गलत मोड़ देने जा रहे हैं। मैंने

उनसे बात को वहीं समाप्त करने का इशारा भी किया बच्चा है ! खेल-खेल में कुछ कह दिया। छोड़िए भी। उसने ऐसी क्या गाली दे डाली !

पर चाचा अपने आवेश में थे बोलता क्यों नहीं? तेरा बाप क्या करता था? चाचा गणेश के दोनों हाथ पकड़े उसे झकझारकर पूछ रह थ।

बाप भेड़ें चराता था। पर सा-ब आप मुझे इस तरह झकझोर क्यों रहे हैं?

निश्चय ही गणश का चाचा का अनपेक्षित व्यवहार अच्छा नहीं लगा। वह भी कुछ आवेश में आ गया। उसके स्वर में भी तेजी थी।

जबान लड़ाता है ! चाचा एक बार फिर गरजे अदना-सा नौकर। बात करने का सलीका नहीं और ख्वाब देखता है मालिक से भी बढ़कर अफसर बनने का ! बाप सा ला

चाचा का वाक्य पूरा भी न होने पाया था कि गणेश ने झटके से अपने दोनों हाथ चाचा की गिरफ्त से छुड़ा लिये थे। वह एक योद्धा की तरह तनकर खड़ा था।

सा-ब मेरे बाप को सा-ला क्यों कहा? उसे गाली क्यों दी? सा-ब यह सब ठीक नहीं। यह कहते-कहते गणेश अपनी कोठरी म चला गया। उसकी चाल में इतनी तजी थी मानो अभी-अभी कोई विस्फोट होगा और सारी धरती फट जायगी।

पत्नी भी दूर से चिल्लाई। उसका संबोधन मेरी तरफ था देख लिया अपने गणश को ! कितनी तेजी बढ़ गयी है ! सबको जवाब देने लगा है। न घर वालों की इज्जत न बाहर वालों की।

इसी क साथ पत्नी ने चिरंजीव को शामिल करते हुए मुझे दो चार और सुना डालीं यह सब तुम दोनों की कृपा है। नौकरो के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए यह भी नहीं सीखा। जब देखो तब गणेश गणश। हर समय हँसी-ठट्ठा। तभी यह बात-बात पर बराबरी करने की कोशिश करता है। उस दिन पूछ रहा था— मैं आप लोगों क साथ डाइनिंग टेबल पर बैठकर खाना खा सकता हूं? मैं तो हैरान हूं उसकी हिम्मत देखकर।

गणेश ने कोठरी का दरवाजा अंदर से बन्द कर लिया था। पत्नी के लाख खटखटाने पर भी उसने खोला नहीं। लगभग एक घंटे के बाद गणेश जब अन्दर से बाहर निकला तो उसकी आंखें सुर्ख लाल थीं। जाहिर था कि चाचा द्वारा किया गया अपमान उसे अंदर

तक बेध गया और वह लगातार रोता रहा है। पर जब मैने उसे प्यार से कहा कि चाचा तो बहुत अच्छे आदमी हैं। यू ही उनके मुंह से कुछ अनायास निकल गया होगा तो उसकी बाल-बुद्धि में ये बातें जल्दी ही समाहित हो गयीं।

मैने उसे अकेले में ले जाकर एक बार फिर यह हिदायत दी कि वह अपना काम ठीक-ठीक करे इस बार स्कूल के नये सत्र मे उसका नाम जरूर लिखवा दिया जायेगा। वह खूब पढ़े और बड़ा अफसर भी बनकर दिखाये।

गणेश बिलकुल नॉर्मल हो चुका था। वह रोज की तरह पूर्ववत अपने काम में जुट गया। इधर मैने चिरंजीव के कमरे मे जाकर उसे भी समझाया कि भविष्य में हम लोगों को गणेश से सम्हलकर बोलना चाहिए और उससे किसी प्रकार का हसी-मजाक नहीं करना चाहिए।

इस घटना के लगभग एक महीने के बाद मै पत्नी के साथ बाहर लॉन मे बैठा सुबह की चाय पी रहा था। आकाश बिलकुल स्वच्छ था। ठंडी-ठंडी शीतल हवा चल रही थी। हम दोना ही बहुत अच्छे मूड मे थे और कुछ इधर ऊपर की योजनाएं बना रहे थे। किसी सदर्भ मे मैने पत्नी से कहा

गणेश बहुत महत्त्वाकाक्षी लड़का है। मै सोचता हूं मई के महीने मे जब स्कूल खुलेगे तो इस बार उसका नाम भी लिखवा दिया जाये। मै खुद भी चाहता हूं कि वह पढ-लिख जाय तो अच्छा ही होगा। नहीं तो जिंदगी भर जूठे बर्तन ही मांजता रह जायेगा।

मुझ पूरा विश्वास था कि मेरे द्वारा उठाये गये इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर पत्नी गभीरता से सोचेगी और अवश्य ही कुछ अपमित जवाब देगी पर उसने ऐसा नहीं किया।

वह मुझे एकटक देखती रही जैसे मैने कोई अप्रत्याशित बात कह डाली हो।

दरअसल मेरी पत्नी भी अपने चाचा की तरह उसी दिलचस्प गलतफहमी का शिकार है। वह आज तक अपने संकुचित सोच से निकलकर यह सोच ही नही सकी है कि भाषा और पढ़ाई-लिखाई पर हर आदमी का अधिकार हो सकता है किन्हीं विशेष लोगों का नही। वह यह भी नहीं समझ सकी है कि कर्म अथवा आहार को जन्मवंश अथवा ईश्वर के किसी विधान द्वारा निश्चित किये जाने की बात कुछ लोगो द्वारा ही अपने स्वार्थ के लिए रचा गया प्रपच है जबकि वास्तविकता यह है कि मानव की क्षमता सर्वोपरि है और वह जब चाहे ऐसे विधानों को तोड़ सकता है।

पत्नी मुझे वैसे ही एकटक देखते हुए बोली   देखो ! गणेश को नौकरों की तरह रहने दो और फिर ये गड़रिये की जात   भला कहीं लिख-पढ़ सकेगी ! अपना पैसा क्यों बर्बाद करने पर तुले हो !

उसी समय ड्राइंग रूम में कुछ आहट हुई। गणेश ही था। संभवत पत्नी से रसोई क काम के लिए कुछ पूछने आया था। पर बिना कुछ कहे-सुने वह तुरंत ही रसोई में लौट गया। यह निश्चय था कि उसने हम लोगों का वार्तालाप सुन लिया था।

पत्नी के द्वारा किय गये प्रतिवाद से मेरा मूड भी खराब हो गया। इसलिए मैं भी उठकर जल्दी जल्दी तैयार होकर कार्यालय जाने का बहाना कर घर से निकल पड़ा।

शाम को जब मैं लौटा तो घर में अजीब हड़कंप मचा हुआ था। चिरंजीव तेजी से कमरे से निकले और सबसे पहले उन्होंने ही यह सूचना दी   पिता जी गणेश कहीं भाग गया।

पत्नी भी बहुत परेशान थी। बार-बार कहे जा रही थी

वैसे तो घर में कोई चीज गायब नहीं है। वह तो अपने कपड़े-लत्ते तक छोड़ गया है। पर पता नहीं गणेश इस तरह क्यों भाग गया?

उसकी परेशानी का मूल कारण यह था कि अब फिर से करो अपने हाथ से घर का सारा काम। फिर से मांजो ढेर सारे जूठे बर्तन   नौकरबाजी के ठाट-बाट की एक बार तो इतिश्री।

मैं ड्राइंग रूम में खड़ा था। मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हो रहा था। गणेश एक क्रांति कर गया था—एक मूक क्रांति

पर्दे

पिता जी की मृत्यु के एक महीने बाद ही मां को गांव में अकेला छोड़कर दिल्ली आने का उसका यह निर्णय कितना कठोर था। उस दिन पूरी रात उसे नींद नहीं आयी थी। वह रात भर जागता रहा। मां बगल वाली कोठरी में सायी हुई थी। कोठरी से पूरी रात सुबकने की आवाज आती रही। इधर वह भी कोई शांत नहीं था। उसके दिमाग की नसें बुरी तरह फूल गयी थीं। क्या वह वास्तव में निष्ठुर है? आखिर मां को जब इस समय उसके सहारे की आवश्यकता है तब उसने दिल्ली जाकर सर्विस ज्वाइन करने का निर्णय क्यों कर डाला? थोड़े दिन ठहर भी सकता था। प्रयास करने पर फिर कोई और नौकरी मिल सकती थी। उसने अपनी सारी इंद्रियों को टटोला। उसे लगा वे सभी यथास्थान हैं और भली प्रकार से काम कर रही हैं। दिल्ली जाने का निर्णय उसका सही निर्णय है। जितनी शीघ्रता से यह मां को गांव के इस गले-सड़े दायरे से निकाल ले जाता है उसके लिए उतना ही अच्छा होगा।

मां अब दिल्ली आ गयी है। पूरे दो साल से आने-आने की कहते हुए अब वह यहां पहुंच पायी। पर अब सब कुछ ठीक हो जायेगा। वह मां को तल्लीनता से देखता है—दो साल के अंदर ही मां कितनी दुर्बल हो गयी है ! आंखों के नीचे गड्ढे और गहरे लग रहे हैं। हाथ पैर से लेकर चेहरे तक झुर्रियों का जाल बिछ चुका है।

पत्नी गरम चाय का गिलास मां को पकड़वा गयी। मां उसे सुड़क सुड़ककर पीने लगी। चाय का घूंट सुड़कते समय उसके गालों की झुर्रियों का घनत्व और अधिक बढ़ जाता। उसकी संवेदनाएं और गहरा उठीं

मा बहुत दुर्बल हो गयी हो। तुम्हारी कमर और घुटनों का दर्द अब कैसा रहता है?

वैसा ही बना हुआ है बेटा बल्कि कुछ और बढ़ा ही समझो। तेरे पिता जी के बाद तो रहा-सहा आराम भी जाता रहा। तबियत पनपने को ही नहीं आती। मां के स्वर मे वेदना उमरने लगी।

मां की वेदना को उसने बीच में ही सभाल लिया। उसके घुटनों को दोनों हाथो से सहलाते हुए बोला अब यहां रहोगी तो सब ठीक हो जायगा। अच्छे डॉक्टर से इलाज करवाऊगा। और फिर जब यहां शरीर को पूरा आराम मिलगा तो वैसे ही सब ठीक हो जायगा।

मा की आखो में आर्द्रता छा गयी। दोनों कोनो से आसू निकल पडे। मां के इस वात्सल्य को देखकर उसका अंतर भी भीग उठा। अतरतल की गीली हुई मिट्टी में कुछ अकुर फूट पड़े।

उस ग्रामीण इलाके के आधे-कच्चे कोठरीनुमा दो कमरों वाले मकान में मां जब से आयी थी समवत उसकी दिनचर्या में किसी प्रकार का अतर नहीं आ सका। पिता जी का गाय रखने का शौक था और यह सयोग की बात थी कि पिता जी की कपड़े की वह छोटी सी दुकान बीच-बीच में महीनों बद क्यों न पड़ी हो घर के पिछवाड़े वाले आगन मे बधा खूटा कभी सूना नहीं रहने पाया। उसमे एक-न एक गाय अवश्य बधी रहती। घर में झाड़ू बुहारी खाने-पीने की व्यवस्था से लेकर गाय को सानी लगाने का सभी काम मा ही किया करती।

सुबह-शाम मा का घर की दोनों कोठरियों में न होने का मतलब था कि वह पिछवाड़े राधा के लिए सानी लगा रही होगी। कारण पता नही पर घर भर म राधा मां को ही सबस अधिक प्यार करती। सुबह होते ही वह रभाती तो तब तक चुप नही होती जब तक उसके पास मां पहुंच न जाये और उसकी पीठ पर अपना हाथ फेरकर राधा राधा कहकर उसे दुलार-पुचकार न ले। गाय का राधा नाम मा ने ही बड़े प्यार स रखा था। कृष्ण की प्यारी राधा । सबकी प्यारी राधा । मा कृष्ण की भक्त जो है।

अतीत चेतना के साथ ही तो जुडा हाता है इसीलिए बीत जाने पर भी वह जब भी याद आता है काफी भावुक बना जाता है। उस समय वह भी अपने गाव मे पूरी तरह खो चुका था। उसकी आंखा में उमडते गाव को उसकी पत्नी न ही रोका।

जब से मा जी स्टशन से आयी हैं लॉबी में ही बैठी हैं। उन्हें पूरा घर तो दिखाइए। मा सब कुछ देखकर कितना खुश होगी।

निश्चय ही मां के लिए घर की बनावट साज सज्जा से लेकर अन्य बहुत-सी

वस्तुएं बिलकुल नयी थीं। गांव के मकानों से शहर के मकान कितने बड़े और कितने अच्छे बने होते हैं! मा देख-देखकर प्रसन्न हो रही थी। कितने साफ-सुथरे कितना अच्छा नक्शा छत-दरवाजे—सब कुछ कितने मजबूत! चौके में हर बात की व्यवस्था है। और यह नहाने की जगह भी बिलकुल कमरे जैसी बड़ी और कितनी साफ सुथरी!

उसने मां को समझाया दिल्ली की यह पॉश कॉलोनी—अमीरों की कॉलोनी है। यहां कोई छोटा आदमी नहीं रहता। सभी बड़े-बड़े आदमी रहते हैं। इसीलिए यहां के मकान भी इतने अच्छे हैं।

उसकी आंखें कुछ अधिक फैल गयीं। नाक के नथुने भी कुछ फड़कने-से लगे। बड़ी-अमीर कॉलोनी में रहने का गर्व उसके अंदर भी गहरा आया। अब उसने कुछ जोर देकर कहा यह सब बड़े भाग्य की बात है।

मां के अंदर भी कुछ गुदगुदी आया। उसका बेटा निश्चय ही भाग्यशाली है। बड़ा अफसर है। चार हजार रुपये कमाता है और बहू की कमाई अलग से।

अब उसने घर में लायी गयी हर वस्तु को मां को दिखलाया था—टी वी फ्रिज कपड़े धोने की मशीन दाल-मसाला पीसने की मशीन पानी गरम करने की भी। उसने कहा मां! सुविधा की सभी वस्तुएं जुटा ली हैं। धीरे-धीरे और भी कर लूंगा।

उन सभी वस्तुओं में मां को सबसे अधिक टू-इन वन पसंद आया। वह मीरा सूर तुलसी—सबके खूब भजन सुन सकेगी।

पत्नी ने समझाया खासकर आपके लिए है यह। जब हम दोनों बाहर काम पर चले जाया करेंगे तो आप भजन सुना करिएगा। अकेले मे ऊबेंगी नहीं ।

पत्नी ने मां के स्वागत की तैयारी बड़े चाव से की थी। जिस दिन से मां के आने की सूचना मिली तभी से वह कुछ न कुछ तैयारी में लगी हुई थी। पिछला वाला बेडरूम ही मां का बेडरूम होगा। नया पलंग बिछाया गया है उसमें। मां के कमर और घुटने के दर्द का ध्यान रखकर उसमें रुई के कुछ कड़े गद्दे डलवाये गये। फोम के मुलायम गद्दों से शरीर में दर्द की शिकायत और बढ़ जाती है। पलंग के ठीक सामने के रैक में टू इन वन रखा गया। इसी रैक के एक खाने में मा के मन बहलाने का और ध्यान रखते हुए ताश के पत्ते घर का पुराना अलबम कुछ सहज-सरल चित्रों वाली धार्मिक पुस्तकें भजनों के पुराने कैसेट के साथ कुछ नये कैसेट भी खरीदकर सजा दिये गये। रैक की ऊपर वाली दीवार पर भगवान कृष्ण का एक बड़ा रंगीन चित्र टांगा

गया। मा को रात-सुबह सोते-जागते भगवान कृष्ण के दर्शन चाहिए। कमरे के दोनों तरफ की खिड़कियों मे गाढे पीले रंग के पर्दे लगाये गये।

वह चाहता था कि पर्दे हरे रंग के हों यह रंग आंखों को शीतलता अधिक पहुचाता है पर पत्नी की जिद थी कि पर्दे पीले रंग के ही होंगे मां जी को पीला रंग सबसे अधिक पसद है। कृष्ण के पीताबर वाला रंग जो है।

पत्नी ने ही सहज भाव से पूछा मा जी आपका अपना बेडरूम कैसा लगा? मैने बड़ी रुचि से सजाया है इसे।

पत्नी का मां के प्रति यह श्रद्धा भाव उसके मन को छू गया। वह सोचने लगा पत्नी सचमुच समझदार है। मां को उसके साथ रहने मे कोई कठिनाई नहीं होगी।

वह सोचता था—मां उसके पास आकर वास्तव मे खुश है। सुबह उठकर वह मां और पत्नी—तीनों एकसाथ घर की बीच वाली लॉबी में ही चाय पीते। इसके बाद पत्नी को चूकि ऑफिस जाना होता था तो वह सुबह से ही घर के कामो मे लग जाती। वह मां के पास ही बैठा रहता।

मां बैठी-बैठी उस गांव की बातें सुनाती रहती दीनाघाट के रमई काका ने बुढ़ापे मे भी दूसरी शादी कर ली। पिछवाड़े वाले मुरली की बड़ी बेटी अभी तक कुवारी बैठी है। दहेज का रिवाज गांव में भी बहुत बढ़ गया है। पिता जी की दुकान का बगल वाला सुनार स्वर्ग सिधार गया बैठे-बैठे ही ठीक उसके पिता जी की तरह। वह राधा की देखभाल के लिए उसे उसकी पत्नी के पास ही छोड़ आयी है

न जाने कितनी बातें। गांव का इतिहास खोलकर बैठती तो ठीक नौ बजे उठती जब तक वह स्वयं ही ऑफिस जाने के लिए तैयार न होने लगता।

दोपहर को मां को अकेला रहना पड़ता। ऑफिस चलते समय वह मा को समझाता मा खाना खाने के बाद खूब आराम करना और कोई भी दरवाजा खटखटाये खोलना नहीं। समय ठीक नहीं।

पत्नी भी मा को समझाती मन न लगे मां जी तो कोई धार्मिक पुस्तक पढ़िएगा। नहीं तो भजन लगाकर सुनिएगा। कैसेट लगाना तो आपने सीख ही लिया है।

पर उस दिन जब मां रोज की तरह सुबह चाय पीने के लिए लॉबी में बैठीं तो उसकी बातों का प्रसग गांव का इतिहास नहीं था। वह कुछ और ही था। सामने पड़ी कुर्सी पर बैठने से पहले ही उसने लॉबी में पड़े नीले पर्दों से झांककर बाहर देखा और

फिर धीरे से उसके कानों में होंठ सटाते हुए बोली क्यों बेटा तेरे सामने वाले घर में कौन रहता है?

रहता होगा कोई। हम लोगों को ठीक से कुछ पता नहीं। उसने सहज भाव से उत्तर दे डाला।

मां को कुछ आश्चर्य हुआ तुझे यह भी पता नहीं तेरे घर के सामने कौन रहता है? कैसा पड़ोस है तेरा? हर कोई अपने घरों में बंद। खिडकी-दरवाजा पर ही पर्दे नहीं पड़े हैं—यहां तो लोगों ने अपने मनों पर भी पर्दे डाल रखे हैं। तुम लोगों का इस तरह से रहते दम नहीं घुटता?

कहने के लिए उसकी मां केवल रामायण और गीता धार्मिक पुस्तक ही पढ सकती है। बहुत पढी लिखी नही है तो क्या समझदार तो है। सच कहिए तो समझदारी का पलड़ा अक्सर पढ़ाई-लिखाई से कहीं भारी पड़ता है। इसीलिए उसकी मा कभी-कभी ऐसी बातें कह जाती है जिनमें गहरी अभिव्यक्ति के साथ गहरे रहस्य भी छिपे रहत हैं।

मा ने अभी-अभी जो सरल ढंग से बात कही थी सहज होते हुए भी आज की सभ्यता की एक बडी विडबना का उदघाटन करती है।

उसकी चेतना के गर्भ म कुछ सुबकने लगा था—इन आधुनिक पॉश कॉलोनी में रहते हुए लोग भले ही कितने संभ्रांत और शिष्ट लगते हों पर यहां का हर व्यक्ति क्या अपने में अकेला हो कातर-आतुर नहीं? क्या वह अपने ही बनाये कायदे और नियमों में बधकर असहाय बेसहारा और वास्तव मे अंदर ही-अंदर घुटने को मजबूर नही?

पर जाने कैसे यह सब सोचते हुए भी एक सभ्रांत कॉलोनी मे रहते हुए आधुनिक कहलाये जाने का एक अतिरिक्त गर्व अभी-अभी उसके मन में घिर आने वाली उदासी पर हावी हो गया। वह फिर से कुछ तेवर ऊंचे करके अपनी सभ्रात और आधुनिक कॉलोनी के कुछ कायदे-कानून मा को समझाने लगा

मां यहां बिना मतलब कोई किसी के यहा आता जाता नहीं। यह कोई गांव नहीं कि बिना जरूरत सबके यहां घुस रहो। यहां का यह रिवाज नहीं। दूसरों के घर में ताक झांक करना यहां बहुत बुरा माना जाता है तभी हर घर की खिड़कियां-दरवाजों पर इतने मोटे पर्दे पड़े रहते हैं कि कहीं किसी का कुछ न दिखे।

पर मां ने ये सारी बाते सुनी अनसुनी कर उसकी संभ्रातप्रियता के सारे अनुशासनों को दुत्कारते हुए अब तक लॉबी के पर्दों को पूरी तरह खींच दिया

था।

ऐसा होते समय क्षण भर के लिए उसे भी बहुत अच्छा लगा। पता नहीं यह लॉबी में एकाएक बाहर खिली धूप के घुस आने का प्रभाव था या कोई ऐसा अनुभव जो आज तक कहीं कैद था और अचानक पर्दों के खुलने से उसे अपनी सीमाओं को लांघकर बाहर छिटक जाने का मौका मिला था।

लॉबी की खिड़की से पड़ोसी की छत स्पष्ट रूप से दीख रही थी। छत पर बैठी कोई महिला उसकी तरह ही सुबह की चाय पी रही थी। कॉलोनी में उस रहते हुए पूरा साल भर हो चुका है। उस समय वह उस महिला को केवल दूसरी बार ही देख रहा था।

मां भी उसी महिला को घूर घूरकर देख रही थी। कुछ दूसरों को समझाने वाले भाव चेहरे पर उतारते हुए बोली तो यही वह बहू है जिसके पति ने इसे तीन साल से छोड़ रखा है? पति दूसरी शादी करके यहीं पास में किसी दूसरे मकान में रहता है। इन लोगों का बड़ा परिवार है। यह घर की बड़ी बहू है। अभागिन बेचारी! कोई संतान भी नहीं हुई।

मां के द्वारा इकट्ठी की गयी इतनी सारी सूचनाओं को सुनकर वह तथा उसकी पत्नी—दोनों स्तब्ध रह गये। मां ने इतनी सारी सूचनाएं कहां से इकट्ठी कर ली—उन लोगों के सामने एक बहुत बड़ा रहस्य था।

आपको ये सारी बातें कहां से पता चलीं मां जी? पत्नी ने उत्सुकता से पूछा।

पिछवाड़े मोटर गैराज के ऊपर वाले घर पर जो आदमी रहता है उसकी औरत बतला रही थी।

आपकी बातचीत उससे कब हुई? पत्नी कुछ आवेश में आ गयी।

पर मां अभी तक पूरी तरह सहज बनी हुई थी। संभवत वह पत्नी के अंदर उमड़ आने वाले आवेश के पीछे निहित कारण से पूरी तरह अनभिज्ञ थी। वह उतनी ही सहजता से बोली अब तुम लोग तो सारे दिन बाहर चले जाते हो। मेरा जब मन नहीं लगता तो इन्हीं लोगों से बातें कर लेती हूं। अपनी खिड़की के ठीक सामने ही तो उसका कमरा पड़ता है।

पर वे लोग तो नीचे वालों के नौकर हैं। हम लोग उनसे कभी बात नहीं करते। कुछ अपना स्तर भी तो देखा जाता है। इस तरह नौकरों से बात करना यहां और भी बुरा मानते हैं। पत्नी का आवेश और भी बढ़ गया।

सभवत अब तक मा को समझ मे आ गया था कि उसने अपन बेटे-बहू की सम्प्रांतप्रियता के विरुद्ध कुछ आचरण कर डा ा है। इसीलिए उसने आग जो कुछ कहा स्पष्ट नही कुछ बुदबुदाते हुए नौकर हैं तो क्या भले आदमी तो हैं। वह औरत ता बिलकुल अपन गाव की कमला जैसी लगती है और फिर घर म पड़ पडे मन घुट जाता है। उन लोगों से कुछ बात कर ली ता कौन-सा अपराध कर डाला?

वह मा की अन्यमनस्कता को समझ रहा था। खिंचे हुए पर्दों से बद किये गये दरवाजों और खिडकी मे कैद होकर गाव के जीवन की उन्मुक्तता को रग रग मे समाये हुए मा का खुला व्यक्तित्व अपने को कैसे समायोजित कर पायगा इसका आभास उसन मां के आन के दिन ही कर लिया था। आने के कुछ ही घंटों बा उसन उससे दबी जबान से पूछा था— यहां किसी के यहा कोई आता जाता नहीं तभी तो

उस समय मां तभी तो कहकर आगे कहने से कुछ रुक गयी थी। वह मा द्वारा अपने वार्तालाप मे एकाएक उभर आने वाले शून्यभाव क अंतर्बोध को तुरंत समझ गया। सभवत मा को यह आश्चर्य हो रहा था कि पहली बार मां उसक यहां आयी है और मुहल्ले वाला को इसकी कोई सूचना नही। कैसा पड़ोस है पांच घटे बीत गये अभी तक उसे कोई देखने नही आया।

उस अच्छी तरह याद आ रहा था—रमई काका की बूढ़ी दादी जब पह ी बार उसके यहां आयी थी तो उसका इक्का रुकते ही पीछे पीछे पूरा गाव किस तरह उमड़ पड़ा था ! दादी अपन साथ बेसन के लड्डू लायी थी। रमई काका ने सबको खिलाय व लड्डू। जा आया सबको।

मां भी अपन साथ उसी तरह बसन क लड्डू बनाकर लायी है। आत हा उसन कहा था— मुह ा म बंटवा दना। लागा का खा ी-खाली नहीं बतलाना कि गांव स मा आयी है।

वह दख रहा था दस दिन बीत गय लड्डुआ का वह कनस्तर आज भी चाक क एक कान म अपनी पूर्वावस्था म पड़ा है। उसकी इस सभ्रांत कॉ ानी मं परस्पर आदान प्रदान का काई व्यवहार हा तब ता उसका उपयाग किया जाय।

पर उस मा क मन ागाय रहन का पूरा प्रयास करना हागा। अब ता मां ि ी म रहगा उसक पास। उस जान नहीं दगा। वह अब गांव वापस नहीं जायगी। उसने अपनी शक्तियां बटोरते हुए मां का समझान का प्रयास किया मां!

तुम खूब भजन सुना करो। मैं और नये कैसेट खरीद लाऊंगा।

फिर वह पत्नी की तरफ मुड़ते हुए बोला सुना कहीं से वीडियो का इंतजाम हो सकता है? मां धार्मिक पिक्चर देखेंगी तो इनका मन लगा रहेगा।

इससे पहले कि पत्नी कुछ जवाब देती मां बीच में ही बोल उठीं अरे भाई! किसलिए तुम लोग ये सब तकलीफ कराते और फिर यह टी वी यह वीडियो यह टू-इन-वन कब तक इन्हें कोई देखे और सुने? कभी-कभी इनसे भी जी ऊब जाता है। आदमी अपने मन की बात तो इनसे कर नहीं सकता।

मां ने कितने सहज ढंग से आज की सभ्यता पर एक और करारा व्यंग्य कर दिया था। ठीक ही तो कहती है मां— आदमी को अपने दुःख-सुख सुनाने के लिए आदमी की ही जरूरत होती है। नकली तरीकों से वह कब तक अपना मन बहला सकेगा? क्या इस तरह वह एक दिन अपने में टूट नहीं जायगा?

इन्हीं सब बातों के बीच पत्नी बहुत आवेग में उठी। उसने सबसे पहले मां के बेडरूम के पर्दे खींचे और फिर शीघ्रता से लॉबी के सारे पर्दे खींच डाले। ऐसा करते समय उसके चेहरे पर अजीब तीखी-सी उग्रता फैलती जा रही थी। उसके हाथ-पैर झनझना उठे थे। एक ही स्वर में मां को संबोधित करते हुए वह कह रही थी अब इन नौकरों से बातचीत नहीं करियेगा और इन पर्दों को भी खोलने की जरूरत नहीं।

पत्नी का यह व्यवहार उसे अच्छा नहीं लगा। वह कुछ कहना चाहता था पर पत्नी को इस प्रकार आवेश में देखकर उसकी उत्तेजना किसी संक्रामक रोग की तरह नहीं बढ़ती तो शायद इसीलिए कि पत्नी की उग्र हो जाने की यह स्थिति स्थायी नहीं। वह जानता है कि जितनी तेजी से वह उग्र होती है उतनी ही शीघ्रता से शांत भी। इसी बात से आश्वस्त होकर उसकी सारी इंद्रियां फिर से वस्तुस्थिति को संभालने के लिए केंद्रित हो गयीं। मां की तरफ मुड़कर उसने कहा अच्छा मां! मैं अपने दोस्त से कार का इंतजाम करता हूं। कल तुम्हें दिल्ली घुमाऊंगा और फिर उधर से डॉक्टर को भी दिखला दूंगा। सोचता हूं तुम्हारा इलाज शुरू करवा दूं। ठीक है न मां!

पर मां ने उसकी बात सुनी अनसुनी कर दी। बहुत हिम्मत बटोरते हुए वह कुछ और ही कह रही थीं मैं सोचती हूं बेटा गांव लौट जाऊं तो अच्छा है। और कुछ नहीं—पर बार-बार न जाने क्यों लगता रहता है कि गंगा रंभाती रहती है। शायद वह ठीक नहीं। दुबारा आऊंगी तो डॉक्टर-वाक्टर को दिखा देना।

मा का स्वर तरल अवश्य था पर पूरी तरह सधा हुआ। कुछ निश्चय का आभास देता हुआ-सा।

वह भी साच रहा था— यह मकान कार टी वी राडिया वीडियो यह टू-इन वन यह सुख यह सुविधा आराम—इन सबस भी अधिक मनुष्य क लिए कुछ और भी महत्वपूर्ण है—उसका अपना अतरग परिवश। वह अतरग परिवेश जिसम वह पूरी आत्मा क साथ जाता है। जहा वह पूरी तरह स उन्मुक्त है—उठन-बैठन और कहने-सुनने के लिए। उसन निश्चय किया था—वह मा का अपने शहर मे रखकर उसके शरीर को उसकी आत्मा से नहीं काटेगा। जल्दी-से-जल्दी उसे गाव लौट जान देगा।

स्वयवरा

उन लोगों क जाते ही पिता जी ने बड़बड़ाना शुरू कर दिया। सामने बरामदे में घूमते हुए बस एक ही बात कहे जा रहे थ   एक तो लड़का दहेजू ऊपर स उम्र भी काफी। लड़का नहीं पूरा आदमी   चालीस-बयालीस से कम क्या हागा वह

शुभा रसाई में ही थी। मेहमानां के लिए बनाये गय खाने में से बची हुई सामग्री का समेट रही थी। पिता जी रसाई के दरवाज के पास दा मिनट रुक और बटा का समझात हुए बाले   देख ले तुझ लड़का पसद है तो बात दूसरी है पर मैं ता इस शादी के हक में नहीं।

मा अपन बेडरूम में थी। दा वर्ष पहल एक दिन बरसात में भीग गयी थी। गठिया ने दोनां टागां को ऐसा जकड़ा कि आज तक चारपाई स न उठ सकी। उसका प्रतिवाद वहीं से हुआ   घर पर बुलाने से पहले यह नहीं सोचा था कि लडका दहेजू है और फिर यह बात सोचने की है जब अपनी बेटी   ।

मां इसके आगे कुछ कहना चाहती थी पर सामने ही रसोई में शुभा का बैठी देखकर और कुछ न कह सकी। वह जा कुछ आगे कहना चाहती थी शुभा का अतरतम स्वयं कह उठा   अपनी बेटी को भी देखा है। पिछले महीने पूरे तैतीस की पूरी हो चुकी है। और चले हैं उसके लिए वर ढूढ़ने छोकरा-सा। उसक करम में दहेजू या चालीस साल का बूढ़ा भी मिल जाये तो बहुत मानो।

मां का प्रतिवाद अभी समाप्त नहीं हुआ। उंगलियों पर हिसाब लगात हुए उसने एक लबी सास भरी   लगभग सौ रुपये की चपत लग गयी न ! आजकल दो-तीन मेहमानां को भी खिलाना काई हंसी खेल नहीं। जरा जरा करके पचासां रुपय की तो सब्जी आ गयी। पहल कहीं और जगह लड़का देख लिया होता फिर उसे घर में

बुलाते। तुम्हारी अकल तो ।

मा का वाक्य पूरा होने भी न पाया था कि पिता जी उसमे पहले गरज पड़े और तुम्हारी अकल कहां चरने चली गयी? यह सब पहले नहीं समझा सकती थी? अब तुल पड़ी भाषण देने मे!

देखते-ही-देखते दोनों का प्रतिवाद अपनी बेटी के लिए घर को तलाशने और मेहमानो के खर्चे से हटकर पूरे झगड पर उतर आया। दोनों हर अच्छे काम का श्रेय अपने ऊपर ओढते हुए और हर बिगडे काम के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण करने मे जुट गये। बीसों साल पहले की गढ़ी हुई बात उखाड़ी गयी। नाते-रिश्तेदारो से लेकर आस-पड़ोस के न जाने कितने लोग इस झगडे की चपट मे आ गये!

शुभा देखती है कि उसके यहां होने वाले इस गृहयुद्ध में मा चाहे कितना भी दम मार ले अत मे हार उसकी ही होती आयी है। पिता जी उसकी एक ही कमजोरी का फायदा उठाते हैं। उसे अपनी रणनीति का आधार बना मां को हर बार धराशायी कर देते हैं। इस बार भी उन्होने वही किया है

जब तुम्हें हमारा किया धिया पसद नही आता तो सब कुछ खुद क्यों नहीं कर लेतीं? चार दिन बाहर के चक्कर लगाने पड़ें तो सब कुछ समझ में आ जायेगा। देख लूगा खटिया मे लेटे-लेटे क्या क्या कर लोगी।

मा को मालूम है कि वह पिता जी के इस तर्क के आगे बहुत कमजोर है। बाहर के कामकाज तो क्या घर मे ही एक गिलास पानी के लिए दूसरों पर आश्रित होती जा रही है। इसीलिए आखिर मे चुप उसे ही होना पड़ता है। हार न खाने की स्थिति में भी अत मे हारना उसे ही पडता। ऐसे समय अपनी तकदीर को कोसते रह जाना अब उसकी नियति बन चुकी है

यह तो सब अपनी-अपनी तकदीर की बात है। न जाने कौन-से पाप किये थे जो उसका दड भोग रही हू।

बहुत झगड़ते हैं दोनो। जरा-जरा सी बात पर किच किच। पर आये दिन होने वाला गृहयुद्ध इसी स्थिति में आकर समाप्त हो जाता है। आज भी मां अत में अपनी तकदीर कोसते हुए करवट लेकर सोने का बहाना कर बैठी। और पिता जी कुप्पा-सा मुंह फुलाकर ड्राइंगरूम में आराम कुर्सी पर अखबार खोलकर बैठ गये।

शुभा रसोई का काम निबटाकर अपने बेडरूम में आ गयी थी। वह सोचने लगी ठीक एक कठघरे की तरह कितना घुटा घुटा-सा लगता है यह घर! एक तो दिन भर खपते रहो ऊपर से दोनों की हाय हाय। उसकी तो पूरी जिंदगी इसी तरह तबाह

हा जायेगी।

शाम को घर में आये मेहमानों को लेकर उसके मन में कोई विशेष उत्सुकता पहले भी नही थी। उसे मालूम है कि उसक लिए किसी भी लड़के को देखने के बाद, पिता जी की प्रतिक्रिया क्या होती है? मेहमानों के जाने के बाद पिता जी जिस तरह से बडबडाये थे, वह उसक लिए अप्रत्याशित नहीं। पिछले कई सालों से यह देखती आयी है। अब तक उसके लिए वर की तलाश को लेकर खेले जाने वाले सारे नाटकों का अंत इसी प्रकार स हाता आया है। पिता जी की पैनी दृष्टि हर लड़के म कोई-न-कोई दुर्गुण खोज ही लेती है। अत में उनका एक ही तर्क हाता है

लाड प्यार में पली लड़की को किसी ऐरे-गैरों के गले म कैसे बाधा जा सकता है ! फिर लड़की में कोई कमी हो तो कहीं झुका भी जाये। गोरी चिटटी तीखे नाक नक्श भरपूर स्वास्थ्य। साथ मे कमाऊ भी। सीनियर हेल्थ ऑफिसर है उसकी बेटी। पूरे पच्चीस सौ की गड्डी लाती है हर महीन। जहां जायेगी घर मे रुपये ही-रुपये पाट देगी।

पिता जी क इस रवैये का देखकर गिरीश मामा ने बहुत तीखी प्रतिक्रिया भी जाहिर की थी असल में पच्चीस सौ की बंधी गड्डी से दूसरा का तो क्या तुम्हारा अपना घर पाटा जा रहा है स्वरूप बाबू ! लड़की तो तुम्हारी निजी संपत्ति बन गयी है तुम लाग जान-बूझकर लड़की के भाग्य से खेल रहे हो।

पिता जी कितना भडक उठे थे यह सब कहने स अच्छा था कि तुमने हमारा गला ही घोट दिया होता। भला कौन मां-बाप अपनी लडकी की कमाई पर जीना चाहगा? तुमने हमारी कमजोरी का खूब फायदा उठाया। जी भरकर सुना दिया गिरीश बाबू ! यह कहते-कहते पिता जी का गला रुंध आया था। उनके में आसू ।

पिता जी की आखो मे छलछला आने वाले इन आसुओ ने ही ता शुभा की सवदना का जीत लिया था।

गिरीश मामा ने ककरीट की चोट की तरह कितनी चुभती बात कह दी ! मुसीबत ता किसी भी मां-बाप पर आ सकती है। और उस मुसीबत के समय बच्चे ही हाथ बटाते हैं। पिता जी के बेटे ने उनकी मुसीबत में हाथ नही बटाया तो क्या वह भी हाथ खीच ले?

उसके अन्दर जग इस स्वाभिमान से सहसा उसकी आख कैसे चमक उठी थीं। उसे लग रहा था वह पिता जी की लडकी न हाकर दूसरा लड़का ही तो है।

कई सालों से शुभा भी यही समझती आ रही थी कि हर मां-बाप की अपनी संतानों को लेकर बहुत-सी महत्त्वाकांक्षाएं होती हैं। पिता जी की तीन संतानों में एक वही तो ऐसी थी जिस पर वे अपना पूरा अधिकार पा सके थे। इसीलिए वे उस पर अपनी सारी महत्त्वाकांक्षाओं को केन्द्रित कर देना चाहते हैं। उसके लिए सरलता से कोई वर पसंद न आने का कारण उनकी यही मनोविज्ञान हो सकता है।

किंतु अब पिछले दो सालों से इस संबंध में किये जाने वाले सारे प्रयास उसे उसके साथ खेले जाने वाले नाटक से ही प्रतीत होने लगे हैं। न जाने क्यों उसके दिमाग में यह बात बार-बार उभरने लगी थी कि इन नाटकों के पात्रों में केवल पिता जी ही किसी भूमिका का निर्वाह नहीं कर रहे हैं एक सहकर्मी छद्म भूमिका के रूप में अब मां का भी चरित्र दिनों दिन विकसित होता जा रहा है।

पहले लड़की के सयानी होते जाने की चिंता मां किया करती थी। घर में अक्सर पिता जी से झगड़े का कारण उसका विवाह ही हुआ करता था। इधर वह देखती है—अन्य बातों को लेकर उसका विरोध पिता जी से भले ही बढ़ता जा रहा हो पर उसके विवाह के संबंध में दोनों बराबर-सी सहधर्मिता निभाने लगे हैं।

मां भी अब पिता जी के ढीले ढाले रवैये का खुलकर प्रतिरोध नहीं करती। एक सफल कूटनीतिज्ञ की तरह ऊपर से विरोध प्रकट करते हुए भी अंदर से उनकी पक्षधर बनी रहती है।

इन दिनों की बीमारी में तो मां भी अब अपने अस्तित्व की चिंता को ही अधिक प्रखर समझने लगी। बेटी दूसरे घर में चली गयी तो फिर उसकी सेवा-सुश्रूषा करने वाला और कौन होगा?

लगभग पांच साल होने को आये पिता जी बेकार बैठे हैं। किसी सरकारी कार्यालय में थे। बॉस से झगड़ पड़े। बदला लेने में तुले बॉस ने गबन के केस में पिता जी को ऐसा फंसाया कि एक दिन उन्हें नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा।

सोचा था भाग्य अभी इतना नहीं रूठा है। सरकारी न सही तो किसी प्राइवेट फर्म में नौकरी मिल जायगी। पर एक सरकारी कार्यालय में खिसट खिसटकर पंद्रह साल में असिस्टेंट बनने वाले व्यक्ति को किसी भी योग्यता के नाम पर पूरा अपाहिज ही तो करार दिया जाता है।

पिता जी भी अनेक फर्मों के लिए अपाहिज करार कर दिये गये। न जाने कितनी अर्जियां भेजीं। कहीं से लोअर डिविजन क्लर्क के लिए भी बुलावा नहीं आया।

यूं भी पिता जी कुछ झगड़ालू स्वभाव के हैं। बात-बात पर झगड पड़ते हैं सबसे। मुंह पर मुस्कान देखे तो अरसा बीत जाता है। हर समय अपना अधिकार जताते हुए छोटी छोटी बातो पर भी बच्चों को डांटते रहते हैं। बच्चों को कभी यह अनुभव ही नहीं हुआ कि बच्चे होने के नाते उनका भी घर में कोई अस्तित्व है। तीन सतानों वाले फराते-फूलते घर में सर्वत्र किसी बाझिन की गृहस्थी का सन्नाटा छाया रहता। पिता जी के भय से क्तराते हुए हर बच्चा जहा-तहां कमरो में छिपा बैठा रहता।

इसीलिए बडे होते ही हर बच्चा अपने अस्तित्व के लिए चिंतित हो उठता। बड़े भैया शादी होते ही अपनी व्यवस्था मे जुट गये। पटना ट्रासफर करवाकर अलग होने का बहाना ढूंढ लिया।

आभा शुभा से ठीक पांच साल छोटी है। उन दिनो शुभा ने उनतीस साल पूरे किये थे और आभा ने तेईस। यौवन की दहलीज को उसने भी बडे सयम से पार करने का प्रयास किया था। पर एक दिन सभवत उसका धैर्य टूट गया।

पिता जी और मां हमेशा अलग कमरे में सोते। उस दिन अभी रात के नौ ही बजे थे। शुभा रसोईघर में दूध उबाल रही थी। आभा को आवाज देकर कहा मा और पिता जी को दूध दे आ कमरे में।

वे लोग सो गये। देखती नहीं हो नौ बजे ही दरवाजे बद हो गये हैं। आभा के लहजे में कुछ अजीब-सी वितृष्णा का भाव उमड़ आया था।

कैसी बातें करती हो? कोई बात ठीक से नहीं कह सकती।

और कैसे कहू दीदी ! रोज रोज नौ बजे से ही दरवाजे बंद हो जाते हैं। कभी हमारी ओर भी ध्यान दिया है इन लोगों ने?

क्या बक-बक कर रही हो? मां-बाप के लिए ऐसा कुछ कहते तुझे शरम नहीं आती? कुछ तो लिहाज किया करो ! इसी के साथ आभा के गालों पर शुभा की पाचों उगलिया गहराई से उभर आयी।

बहन का थप्पड खाने के बाद आभा जरा भी सहमी नही थी। वह तो पूरे आवेश में आ चुकी थी लिहाज करो तुम दीदी ! इस कठघरे से घर में तुम घोटो अपनी जिदगी को। घोटो और घोटो। तुम अपनी इच्छाओं का बलिदान कर सकती हो। दूसरा लडका बनकर मां-बाप की सेवा करने का यश तुम्ही लूट सकती हो पर मुझमे तो ऐसी सामर्थ्य नही।

कोई सच्चाई से समझने की कोशिश करता तो ऐसा यश लूटने की सामर्थ्य स्वयं शुभा मे भी नही रह गयी थी। उसके अंदर की तहों तक धंसकर कोई देखे तो वह

कितना टूट चुकी है।

कभी उसके मन में भी ठीक आभा की तरह बसंत खिला था।पर उसके भीरु व्यक्तित्व ने उसे अपने ही हाथों से रौंद डाला। उस दिन न जाने क्यों किस कारण पिता जी की बात को हृदय म इस तरह स बाध रही। और उसी की जिद म उसकी मुट्ठी मे भिंचा भविष्य उसके ही हाथों से उखाड़ दिया गया। मन में एक भयंकर तूफान उठने के कारण शुभा कुछ क्षणों के लिए मूक बनी बहन को निहारती रह गयी।

सभवत इस मूक स्थिति म आभा का साहस और जुट सका था

अभी समय है दीदी अपना निर्णय स्वय क्यों नही कर लेती हो? क्या तुम्हें राहुल की बिलकुल याद नहीं आती?

आभा का सवाद उत्तरोत्तर गति पकड रहा था ठीक है तुम अपना निर्णय नहीं कर सकती हो पर मै अपना निर्णय ले सकने की हिम्मत रखती हूं। मेरी ही कक्षा का सहपाठी है वह।

शुभा के मन म उठा एक तूफान अभी समाप्त भी नहीं हुआ था कि दूसरी दिशा से आते हुए एक अन्य तूफान ने उसे पूरी तरह झकझोर दिया। तूफान मे उड़ती मिट्टी की परत उसकी आखो के सामने एक विकराल छाया सी बनाती समाप्त हो गयी। शुभा को लगा वह छाया और कुछ नहीं स्वय उसका ही क्षत विक्षत प्रतिबिंब है। अपने अन्दर एक साथ उठते तीखे अनुभवो को उसने अब सहलाया आभा के अदर लहलहाते बसत को वह मरने नही देगी वह उसे अपनी तरह क्षत विक्षत नहीं होने देगी। स्वयं के लिए न सही तो क्या आभा के लिए वह अपने अतिम निर्णय की घोषणा कल सुबह होते ही कर दगी।

दूसरे दिन चाय के समय घर म एक अच्छा खासा तहलका मच गया। इस बार वाद प्रतिवाद मां और पिता जी में नही बल्कि स्वय उसके और पिता जी के मध्य छिड़ा हुआ था। पिता जी बार-बार प्रतिवाद कर रहे थे छोटी लड़की का विवाह पहले कर देंगे तो समाज क्या कहेगा? और फिर बेटी तू क्या सोचेगी? क्या यह तेरे साथ अन्याय नहीं होगा?

और मेरे कारण आभा का विवाह न हो यह क्या उसके लिए अन्याय नहीं? और फिर आभा का विवाह करके आप एक अन्याय से तो मुक्त हो सकते हैं। शुभा ने एक बार फिर अपने अदर वर्षों स जमी ऊष्मा को टटोलते हुए कहा था।

शुभा एकांत में उभर आने वाले अतीत के साथ जब सारी बातों का विश्लेषण

करती तो उसे स्पष्ट आभास होता कि पिता जी का छोटा लड़का के ब्याह पर लोक आलोचना का भय आस पड़ोस और नाते रिश्तेदारों का नहीं था। न ही पिता के मन में बेटी के प्रति किसी प्रकार के होने वाले अन्याय की वेदना ने करवट ली थी। पिता जी को भय था तो केवल अपना और अपने भविष्य का। उन्हीं की वेदना स्वयं उनके ही दिल को कुरेद गयी थी। सम्भवत उन्हें इस बात का भय हो आया था कि शोभा के साथ कहीं वह भी कोई बवंडर न खड़ा कर दे और इस तरह अपने दूसरे लड़के से भी उन्हें हाथ धोना पड़े।

राहुल उन दिनों दिल्ली मे ही थे। कुछ दिनों पहले वर्ल्ड हेल्थ सगठन द्वारा आयोजित एक सेमिनार में उनसे भेंट हुई थी। राहुल का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था कि एक बार दिल मे उतरे तो सबी अतरा गहराइयां तक उतरते ही चले गये।

पर एक सीमा तक पहुच जाने वाली राहुल से उसकी बात एक दिन अचानक वैसे ही समाप्त हो गयी थी जैसे आसमान की ऊचाई पर उन्मुक्त गति से थिरक्ती हुई किसी पतग पर अकस्मात कोई झटका पड़े और वह एक ही क्षण में सर्राटे के साथ पृथ्वी की दिशा पकड़ती हुई कहीं विलुप्त हो जाये।

राहुल का दोष यह था कि वह केवल राहुल ही नहीं थे साथ में वे बनर्जी भी थे। इस बार पिता जी की गहन दृष्टि ने अतर्जातीय विवाहों को लेकर न जाने कितनी हानियां का विश्लेषण कर दिया था। शुभा सोचती है उस दिन उसे पितृ भक्ति ने कैसा घेर लिया था कि न चाहते हुए भी वह राहुल को अचानक ही अपना निर्णय सुना बैठी।

एक दिन राहुल स्वय ही उससे कार्यालय में मिलने आये थे। शुभा ने पहले उन्हे भरपूर स्निग्ध भाव से जी भरकर देखा फिर अन्दर से ढेर सारा साहस बटोरते हुए बोल उठी थी राहुल तुम मेरी बात का बुरा मत मानना। मैं एक लड़की होने के साथ किसी की पुत्री भी हू। और पुत्री कभी भी मां-बाप का तिरस्कार नही करती। पिता जी अतर्जातीय विवाह के लिए तैयार नहीं हैं।

आज भी वर को लेकर पिता जी का निर्णय अप्रत्याशित न होकर भी शुभा को कुछ गहराई से सोचने के लिए विवश कर रहा था। लड़के के दहेजू होने की बात पिता जी से पहले ही बगल वाले मुरली काका ने उस तक पहुचायी थी। शुभा ने बिना कुछ प्रतिवाद किये वर की स्वीकृति का संकेत दे डाला था। शुभा सोचती है कोई उससे यह क्यों नहीं पूछता कि आखिर उसने इतनी सहजता से बयालीस साल के दहेजू लड़के

को स्वीकार करने का संकेत मुरली काका को क्या दे डाला था?

न जाने क्यों कुछ दिनों से निरंतर एक अहसास उसके अन्दर उत्तरोत्तर गहराने लगा है। कुछ वर्ष पूर्व उसके अंदर बसंत को खिलाती जो वाटिका विकसित हुई थी बदलते मौसम की झुलसती हवाओं से वह मरु खंड बनती जा रही है। शुभा को लगता है उसके अचेतन मन में वास्तव में एक मरु-खंड प्रबल होता जा रहा है। दूर अंतरतम में झांककर जिधर भी देखो रेत ही रेत। कहीं कोई शीतल जल का स्रोत नहीं। कैसा दहशत से भरा होता है यह अनुभव अंदर तक थरथरा देने वाला! इसी प्रक्रिया में वह कई बार दौड़कर ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ी हो चुकी है। ऊपर से नीचे तक अपने को निहारते हुए स्वयं को तसल्ली देने का उसने कई बार प्रयास किया है अभी कहां से बूढ़ी दीखती हूं। अभी तो

यह सब सोचते हुए शुभा को उस समय भी एक घुटन-सी अनुभव हुई वही रोज की दिनचर्या एकरसता उपजाती हुई बेस्वाद-सी। रोज सुबह पाच बजे उठना मां और पिता जी के लिए चाय नाश्ते से लेकर खाने तक का प्रबंध करना। मां को सुबह के समय की दवाइयां पिलाना दोनों पैरों में मालिश करना फिर उल्टे सीधे ढंग से स्वयं तैयार होकर कार्यालय के लिए रवाना हो जाना। उस समय भी पिता जी की शिकायतों का अनवरत सिलसिला रुकता नहीं—कार्यालय से लौटते समय यह ले आना वह ले आना। बाहर के लिए यह काम कहा था वह कहा था अभी तक पूरे नहीं किये

मां की शिकायतों का ढर्रा तो और भी दमघोटू होता है। वह अब उसकी हर बात को अपने बुढ़ापे की असहायता से जोड़कर देखती। कई बार अपनी उपेक्षा का अहसास बड़े कंटीले ढंग से कराती है। नागफनी के कांटों को बिखेरती मां की आवाज में शुभा ने कई बार सुना है

बना लिया होगा फिर से कोई यार-दोस्त! रोज-रोज शाम को देर से लौटने लगी है। बहाना यह है कि कार्यालय में काम अधिक है। सोचती है, हम बूढ़ों को जैसा चाहे वैसा नाच नचा दे।

पिछले दिनों से तो मां ने उसकी हर गतिविधि पर नियंत्रण रखना शुरू कर दिया है। कहां जाना है कैसे जाना है—इन सभी बातों का निर्णय मां खटिया में बैठे बैठे अपने सप्तम स्वर में सुनाया करती है।

अचानक टेलीफोन की घंटी खड़खड़ा उठी थी। आभा का फोन है। उसने जो कुछ भी सूचना दी शुभा को एक क्षण के लिए विश्वास नहीं हो रहा है। क्या वास्तव में

एक-दूसरे के सबधों की भूमिका में टेलीपेथी का महत्त्व होता है? वह राहुल के सबंध में ही ता सोच रही थी। और उधर आमा ने फोन पर यह सूचना दी है कि राहुल अमेरिका से लौट आये है उसस मिलना चाहते हैं।

राहुल ने अपने संबंध में क्या बतलाया? शादी-वादी की या नहीं? बहुत रोकने पर भी शुभा के अंदर का औत्सुक्य फोन के चोगे पर फूट पड़ा।

आभा भी क्या सोचेगी—दीदी कितनी पागल है। मित्रता छोडे चार सात हो गये और सोचती है—अभी तक वह उसके लिए कुंआरा बैठा रहेगा ' उस लगा अभी-अभी आभा का प्रत्युत्तर कान को बेधगा अरे उसके तो दो गुलाब स बच्चे भी हैं। देखोगी तो बस

पर आभा के प्रत्युत्तर ने तो कानों तक ही नहीं पूरे हृदय तक एक गूंज पैदा कर दी थी नहीं दीदी देयर इज स्टिल होप। डोंट मिस दिस चास। राहुल इसीलिए मिलना चाहते हैं।

ठीक है राहुल से मिलूगी अवश्य मिलूंगी। मा और पिता जी को बतलाकर मिलूंगी। शुभा ने अपने अकस्मात फड़फड़ा आने वाले होंठों को दोना कान लगाकर सुना था अभी उसके सारे शब्द लुप्त नहीं हुए हैं। उसका मन बहुत कुछ कह रहा है। पिता जी से कह देगी अपने मन में उठने वाले इस तूफान को। इस बार उसका निर्णय अपना होगा।

शुभा अचानक उठ पड़ी। उसने पर्दों को खिसकाकर कमरे के सारे दरवाजों और खिड़कियों को खोल दिया। बाहर ताजी हवा चल रही थी। दूर-दूर तक फैला आसमान सर्वत्र नीला-नीला। स्वच्छ आसमान में चाद मुस्कराता हुआ बहुत अच्छा लग रहा था।

दुर्घटना

उस दिन विशेष सात्वना देने के लिए वह उस कोठी पर गया था। कोठी के मालिक कोमल बाबू एक बड़े आदमी हैं। दश-विदेश में उनका कराड़ो का व्यवसाय है। महानगर मे खड़ी अनेक आलीशान बिल्डिगें कोमल बाबू की ही हैं। तीन दिन पहले इन्हीं की एक बिल्डिंग में आग लग गयी थी।

यह उसने टी वी पर समाचार-प्रसारण के समय सुना। समाचार इतना हादसे से भरा हुआ था कि उसे सुनकर कोई भी व्यक्ति जड़वत रह जाता। भयंकर आग से चंद घटो मे सब कुछ जलाकर भस्म। टी वी पर जब जली हुई उस बिल्डिग की फिल्म दिखलायी गयी थी तो बहुत कोशिश करने पर भी वह कई स्थानों को पहचानने मे असमर्थ रहा। सब कुछ राख के ढेर में पलट चुका था। सबस हृदयविदारक दृश्य तो बिल्डिंग के सेंट्रल हॉल में सफेद चादरो मे लिपटी पचास लागों की लाशों का था। बिल्डिंग में ठहरे उन व्यक्तियों मे से कोई भी बच नहीं सका था। आग शाम को चार बज लगी थी। संभवत यह सेबोटाज का केस था।

जिस समय वह उस कोठी पर पहुचा दिन के तीन बज थ और धूप की तेजी अभी पूरी तरह से शांत नहीं हुई थी। वैसे तो दोपहर का खाना खाने के बाद जब इन कोठियों के मालिक नींद की गोद मे आराम करने चले जाते हैं ये कोठियां स्वयं ही एक गहरे सन्नाटे में डूब जाती हैं पर उस दिन उसे उस कोठी पर एक विशेष सन्नाटा जान पड़ा।

थ्री व्हीलर से उतरते ही वह अनायास ही बुदबुदाया कितना सायं-सायं कर रहा है सब कुछ। आखिर दुर्घटना भी तो कितनी बड़ी हुई कोमल बाबू के साथ!

गेट पर बैठे चौकीदार ने उसके आने की सूचना बाहर से ही कॉलबेल दबाकर अन्दर दे दी। इसीलिए ड्राइंगरूम का दरवाजा खोला जा चुका था। दोनो ओर लगे अमलतास के वृक्षा से घिरे मेन गेट से ड्राइंगरूम तक फैले उस पैसेज को पार करते समय उसके कदम तेजी के साथ बढ रहे थे। मन में कोमल बाबू से मिलने के लिए एक अजीब-सी अकुलाहट उमड आयी

पता नही किस मुद्रा में बैठे मिलेगे कोमल बाबू ! कितना बड़ा नुक्सान कितनी बड़ी दुर्घटना बिल्डिग मे ठहरे पूरे पचास व्यक्तियो की मौत। और फिर अपनी ही बिल्डिंग म ठहरे लोग आखिर कुछ तो रिश्ता हो ही जाता है !

पर जो कुछ वह सोच रहा था वैसा वहां कुछ नही था। ड्राइगरूम मे कामल बाबू नही थे। एक नौकर ने आकर उसका अभिनंदन किया था। वह बैठने का निवेदन करते हुए यह कहकर चला गया कि अभी कुछ देर उसे शायद प्रतीक्षा करनी पड़े। साहब अभी-अभी आराम करन गये हैं। सुबह से तो आने-जाने वालों का तांता लगा हुआ था।

नौकर की इस सूचना के साथ ही एक क्षण के लिए उसे कुछ गलती का अहसास हुआ पहले ही आना चाहिए। जिस दिन आग का समाचार सुना था उसके दूसरे दिन ही। मन तो बार-बार यही कह रहा था पर न जाने क्यों अपने ही मन की बात टाल गया !

पर फिर अपने मन को समझाते हुए वह कुछ आश्वस्त हो आया ठीक ही तो हुआ। उस दिन भीड़ भडक्के म आता तो कोमल बाबू से क्या बात होती ! इतनी बड़ी दुर्घटना के लिए उन्ह अच्छी तरह स सांत्वना देने की जरूरत है। तसल्ली से कुछ समझान की। अब इत्मीनान से उन्हें समझा दूंगा। कोमल बाबू से कहूंगा—कुछ पूजा-पाठ करा लें। ऐसी दुर्घटनाओं के बाद पूजा-पाठ से मन को शाति मिलती है। और यदि पूजा पाठ में उनका अब बहुत विश्वास नहीं है तो कुछ-न-कुछ ऐसा जरूर करायें जिसस मन को शांति मिल सके।

उसकी स्मृति में वह पूजा एकाएक उमड़ने लगी थी जो उसके ननिहाल में एक बार बिहारी मामा ने की थी। कोई दस साल पहले बिहारी मामा की बैठक की छत के एकाएक गिर जान स वहां बैठे पांच लोगों की ऐसे ही अकाल मृत्यु हुई थी। बिहारी मामा कई दिनों तक पागलों की तरह घूमते रहे। उस पूजा के बाद ही उनका मन कुछ ठिकाने आया था।

मन म कोमल बाबू क लिए फिर स संवेदनाएं गहरा उठीं बचारे कामल

बाबू ! उन्हें भी पागल बना दिया होगा इस दुर्घटना ने।

दरअसल उसके मन में बार-बार संवेदनाओं के इस प्रकार गहरा उठने का कारण एकसाथ उन पचास लोगों की अकाल मौत का हादसा तो था ही पर इसके अतिरिक्त एक कारण यह भी था कि कोमल बाबू उसके छोटे भाई हैं। यह बात दूसरी थी कि पैसे के अंतराल ने उनकी दूरियां एक सीमा तक अवश्य बढ़ा दी थीं। जहां उसका छोटा भाई महानगर की एक पाश कॉलोनी में सफेद संगमरमर से जड़ी तीन मंजिला कोठी में रह रहा है वहां वह अब भी उसी शहर की एक अंधेरी गली में खड़े उस खंडित मकान के तीसरे तले के एक हिस्से में। उसकी मां ने उसे इसी घर में जन्म दिया था।

इतनी बड़ी कोठी में रहने के कारण उसका छोटा भाई दूर और नजदीक के सभी नाते-रिश्तेदारों के लिए कोमल से कोमल बाबू बन चुका है। यहां तक कि पूरे चार साल बड़े होने पर भी वह भी उसे कोमल बाबू ही संबोधित करता है। और उसकी स्थिति यह है कि पूरे पचास वर्ष का होने के बाद भी केवल भगवती नाम से ही जाना जाता है। नामकरण के समय रखे गये भगवती नाम के आगे वह आज तक कुछ जोड़ नहीं सका।

नाम के आगे बाबू विशेषण लगने और न लगने का उसके भाई के साथ पारस्परिक संबंधों के गठन पर काफी प्रभाव पड़ा था। अब उसका छोटे भाई के लिए अपने किसी सुख-दु ख मे उसका सम्मिलित होना अथवा मिलना जुलना बहुत आवश्यक नहीं रह गया था। बिल्डिंग की दुर्घटना के तुरंत बाद यदि वह सहानुभूति देने चला भी जाता तो संभवत उसे भीड़ के एक कोने में ही खड़ा रहना पड़ता।

पर पैसे की इस विडंबना ने अभी उसके अंदर एक ही मां की कोख के खून की गरमाहट को ठंडा नहीं होने दिया है। उसने अपने अंदर अनेक ऐसे अवसरों पर भी उस खून की गरमाहट को अनुभव किया है जहां उसे कुछ भी लेना-देना नहीं। कोमल बाबू की छोटी से छोटी परेशानी ने भी उसे रातों रात जगाया है।

कोमल बाबू सचमुच भाग्य के बहुत तेज निकले। एक बार उन्होंने जो आगे बढ़ना शुरू किया तो फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। सच मानिए बिल्डिंग की इस दुर्घटना से पहले आज तक उन्होंने कोई दुर्घटना नहीं देखी। आश्चर्य लगेगा पर यह भी बिलकुल सच है कि सैंतालीस वर्ष पूरे होने को आये उन्होंने किसी मौत को नजदीक से नहीं देखा। घर-बाहर सगे-संबंधियों के यहां जब जब कोई मौत हुई कोमल बाबू के साथ कुछ ऐसा होता आया कि वे उस समय वहां उपस्थित

ही नहीं रहे।

अपने पिता की मृत्यु पर भी कोमल बाबू अमेरिका मे ही थे। बहुत कोशिश करने पर वे पूरे दस दिन के बाद उस समय लौट सके थे जब पिता के शव-स्थल पर दीपक टिमटिमा रहा था।

यद्यपि वह उनके लिए पिता के अंतिम दर्शन न कर पाने की विवशता को उनके दुर्भाग्य से ही जोड़ सका था पर नाते-रिश्तेदारों ने उनकी उस समय भी सराहना की। बड़ी बुआ ने आंखें मटकाते हुए कहा था— वह इस समय यहा नही हुए तो एक तरह से अच्छा ही है। पिता की मौत वह देख नहीं सकते थे। कोमल बाबू तो स्वभाव से ही कोमल हैं।

कोमल बाबू बचपन मे स्वभाव से वास्तव मे बहुत कोमल थे। जब कभी भी पिता की मार उसे पड़ती थी तो कोठरी के कोने में बैठे-बैठे सुबकते कोमल ही थे। वह उनसे पूछता

मार तो मुझे पड़ी तू क्यों रो रहा है?

मार तुम्हें पड़ी है तो क्या दुःख तो मुझे भी होता है। कोमल बाबू ... से सुबकते रहते।

बड़ी बहन की विदाई के समय तो कोमल बाबू इतना रोये थे कि रोते रोते हिचकियों की लड़ी बंध गयी।

बगल में खड़े बहन के श्वसुर का जी भर आया था अरे यह तो बड़ा नरम दिल लड़का है। लड़कियों की तरह रोता है। किसी भारी समस्या का सामना करना पड़ा तो यह कैसे करेगा?

उस समय भी ड्राइंगरूम के दूसरे कोने में रखे त्रिकोण सोफे पर बैठे-बैठे उसका मन भी बहन के श्वसुर की तरह ही भर आया— इतनी बड़ी दुर्घटना के समय सब कुछ कैसे किया होगा कोमल बाबू ने? उन्होंने तो आंखों से देखा होगा वह सब हाहाकार!

एक बार वह स्वयं को फिर से धिक्कारने लगा—उस समय उसे वहां जाने से किसने रोका था—खुद ही तो वह टाल गया था! यदि वह उसी दिन चला जाता तो कितना अच्छा होता! कोमल बाबू को कुछ तो धीरज बंधाया होता।

ड्राइंगरूम के बगल वाले कमरे में कुछ आहट हुई। अखिलेश आ रहा है। कोमल बाबू का मंझला बेटा। अखिलेश के हाथ में क्रिकेट का किट है। शायद उसके खेलने का समय हो गया।

बच्चे हैं उन्हें दुःख-गमों से क्या मतलब! उनकी उम्र तो खेलने-कूदने की ही है। खेलने का समय हुआ तो वे खेलने जायेंगे ही उसने मन-ही-मन फिर से स्वयं से बात की।

ड्राइंगरूम में घुसते ही अखिलेश ने उसका अभिवादन किया कहिए अंकल आप कैसे हैं?

अखिलेश का स्वर हमेशा की तरह सहज और सरल। कोई गम नहीं किसी तरह की परेशानी नहीं। वह हमेशा उसका इसी प्रकार से अभिवादन करता है। इसी को कहते हैं बचपन — मस्तमौला-बचपन !

पर पिछले क्षणों से मन में बराबर अकुलाती हुई बेचैनी अखिलेश की इस बाल-मस्ती को देखकर भी रुक नहीं सकी। इसीलिए अखिलेश के अभिवादन के किसी अन्य उत्तर के स्थान पर उसके मुंह से अनायास ही निकल पड़ा बेटा वह दुर्घटना

हां उस बिल्डिंग की दुर्घटना! पापा तो बड़ी चपेट में आ गये। अखिलेश का स्वर कुछ गंभीर हुआ।

जानता हूं बेटा बेचारे पर मुसीबत का पहाड़ टूट गया। बैठे-बैठे ही यह सब

वैसे तो अंकल यह सब सेबोटाज जैसा ही था— हां— आं— और क्या !

अखिलेश ने उसकी बात को बीच में ही काट दिया पर यह कहते-कहते उसकी बाल-बुद्धि न जाने कैसे बिखर गयी! वह कुछ स्मरण करने लगा अंकल आपको याद है न इसी बिल्डिंग में एक बार पहले भी आग लगी थी! तब वह आग एक फायर ब्रिगेड बुलाकर बुझा दी गयी थी। इस बार भी पापा के पास ऑफिस में फोन आया था। बिल्डिंग से ही किसी ने किया था। पापा किसी जरूरी कार्य में व्यस्त थे। यूं ही बैठे-बैठे कह दिया— एक फायर ब्रिगेड बुलाकर आग बुझवा दीजिए।

अब अखिलेश कुछ समझाने की कोशिश कर रहा था असल में पापा ने भी सोचा होगा कि पहले की तरह ही आग कंट्रोल में आ जायेगी। पर मुसीबत जो आनी थी। उसके बाद फोन के कनेक्शन ही कट गये। पापा जरा अच्छी तरह बात कर लेते तो इतनी लापरवाही न बरतते तो उनकी जरा-सी लापरवाही !

पर यह तो कोई छोटी-मोटी लापरवाही नहीं। उसने अवाक् हो अखिलेश को घूरा।

अब जो भी कह लीजिए। शायद ऐसा ही होना था। बस हो गया अंकरा लापरवाही ही है कुछ हद तक।

अखिलेश या तो इस संबंध में कुछ और अधिक नहीं कहना चाहता या फिर हो सक्ता है उसे खेलने की जल्दी हा वह इतनी बात कहते हुए शीघ्रता से बाहर निकल गया।

अखिलश ने ये सारी बातें जिस सहज ढंग से बतलायीं वह वास्तव मे उसका बालपन ही था। चंचल बुद्धि उगल डाला सब कुछ।

अखिलेश तो जा चुका था पर वह अब भी उसी तरह अवाक् अदर-ही-अंदर बुरी तरह बेचैन-सा

एक लापरवाही से इतने लोगों की मौ-त ! मानव की ऐसी लापरवाही को क्या सजा दी जानी चाहिए ! क्या ऐसी लापरवाही के लिए किसी भी व्यक्ति को क्षमा किया जा सकता है?

उसकी इच्छा हुई कि वह कोमल बाबू के कमरे में धड़धड़ाता हुआ चला जाये उसे झक्झोरकर पूछे यह क्या किया तुमने? अपने कार्यों म ऐसी भी व्यस्तता क्या कि दूसरों की अहम से अहम बात भी ठीक से सुन न सको ! कैसे उऋण हो सकोगे इस करनी से

पर वह ऐसा नहीं करेगा। कोमल बाबू को यह अहसास भी नही होने देगा कि उसे बिल्डिग की दुर्घटना को लेकर इस बात का पता चल गया है। किसी व्यक्ति को यदि किसी की कमजोरी का पता चल जाये और फिर यदि वह उसी के सामने उस कमजोरी का दोहराता है यह तो फिर उसी व्यक्ति का छोटापन हुआ।

और फिर मैं कुछ कहू या न कहू कोमल बाबू स्वयं ही बिल्डिग की दुर्घटना से दुखी ही नहीं होंगे बल्कि ग्लानि और पश्चाताप से तड़प रहे होगे। मन का दुख ग्लानि से भी आक्रांत हो जाता है तो वह व्यक्ति को कितना ताड़ देगा—कुछ पता नहीं।

यह सब सोचते हुए उसकी दृष्टि अनायास ही दीवार के उस ओर रखी उस गोल आराम कुर्सी पर पड गयी। ड्राईगरूम में रखी गोल डिजाइन की यह आराम कुर्सी विशेष तौर से कोमल बाबू के लिए ही नियत है। अपने मेहमानों से कोमल बाबू इसी कुर्सी पर बैठकर बात करते हैं।

उसे लगा कि कोमल बाबू उस गोल कुर्सी पर आकर बैठ गये हैं। उनके कपड़े कुछ गंदे से हैं। संभवत हफ्ते भर से बदले नहीं गये। बाल अस्त-व्यस्त और

एकदम सूखा। और चहरा तो ग्लानि और पश्चात्ताप से इतना स्याह हो गया है कि सूरज की कोई किरण भी यदि उसे गलती से चूम ले तो वह काली पड़ जाये। और उनके हृदय में उमड़ता हुआ वह तूफान । कोमल बाबू तूफान क समय चट्टानों से लगातार टकराने वाली समु" की लहर की तरह टुकड़े-टुकड़े होकर कहीं बिखर जायेंगे।

वह कितनी देर तक उस शून्य गोल कुर्सी को निरंतर देखता रह गया पता नहीं। उसकी तंद्रा की यह दशा स्वयं कोमल बाबू के पदचापों ने ही तोड़ी थी। कोमल बाबू अपने बेडरूम के बीच पड़नेवाली लॉबी को पार करते हुए ड्राइंगरूम की ओर बढ़ रहे थे पर ठीक उसकी कल्पनाओं के विपरीत।

उस समय कोमल बाबू नया ग्रे कलर का सफारी सूट पहने हुए थे। बाल सज-सवरे । लगता था सुबह ताजा ही कटवाये गये हैं। शायद तुरंत नहाये भी थे। उनके शरीर से उड़नेवाली चंदन के साबुन की सुगंध ने सारी लॉबी को गमका दिया था।

कोमल बाबू कुछ मुस्कराते हुए उसकी ओर बढ़ रहे थे। उसने गहराई से देखा था उनके चेहरे को। कोमल बाबू सचमुच मुस्करा रहे थे।

शायद इसीलिए कोमल बाबू के ड्राइंगरूम में घुसते ही वह अजीब ढंग से कुछ सकपका गया। हड़बड़ाकर एकदम खड़ा हो बिना कुछ बोले उन्हें घूरता रह गया था।

कमरे मे फैला मौन कोमल बाबू ने ही भग किया था बैठिए-बैठिए। आपने नौकर से अपना नाम क्यों नहीं कहला दिया? मैंने तो सोचा कोई होगा। यहां तो आने जाने वालों का यूं ही तांता लगा रहता है।

उसके मन में घिर आने वाली स्तब्धता अभी तक किसी वार्तालाप को जन्म नहीं दे सकी। वह अभी तक मौन बना हुआ था।

कोमल बाबू ही आगे बोले थे आज एक आवश्यक मीटिंग है। रविवार है। मैंने सोचा दोपहर के बाद ही मीटिंग रखना ठीक रहेगा। उसी की तैयारी में था।

मीटिंग क नाम से ही उसकी स्तब्धता कुछ टूटी—कोमल बाबू वास्तव में परेशान हैं। उसी चक्कर में मीटिंग-वीटिंग होगी। कैसी मुसीबत! बेचारो का रविवार को भी छुट्टी नहीं।

उसी के सबंध में कोई मीटिंग है क्या? उसने कुछ संभलते हुए

पूछा।

तो आपको भी मेरे नये कांट्रेक्ट का पता चल गया? इस शहर में कोई बात कहीं छिपती नहीं।

कोमल बाबू ने कुर्सी पर बैठने के साथ ही सामने रखी मेज पर अपना ब्रीफकेस खोल लिया था। वे उसमें से कुछ कागज निकाल रहे थे। उनके मुंह पर फैली मुस्कराहट कुछ और निखर आयी थी।

उसी नये कांट्रेक्ट के कागजात   सुबह से बैठकर सारे कोटेशंस तैयार करवाये हैं

कोमल बाबू के हाथ में कोई एक विशेष कागज था। और अब वे पूरी दृष्टि गड़ाकर उसे पढ़ रहे थे   देख रहा हूं   कुछ छूट तो नहीं गया   नहीं तो सारा परिश्रम

बिल्डिंग की दुर्घटना के स्थान पर नये कांट्रेक्ट की इस प्रकार से बातें सुनकर उसे एक बार फिर से अवाक् रह जाना चाहिए था   पर इस बार वह अवाक् नहीं हुआ और गंभीर हो गया।

जब वेदना बहुत गहरी होती है तो व्यक्ति जानबूझकर उससे तटस्थ बने रहने का प्रयास करता है। स्वाभाविक है   कोमल बाबू भी वही कुछ कर रहे हैं। अंदर से तो वे बहुत पीड़ित हैं। उसे कुछ समझाने का प्रयास करना चाहिए। उसने प्रकट रूप से अपनी संवेदनाओं को जतलाने की कोशिश की

वह दुर्घटना

उस बिल्डिंग की   बहुत बुरा हुआ

अल्प-सा उत्तर। कोमल बाबू अभी तक उस कागज पर आंख गड़ाये बड़ी गंभीरता से कुछ पढ़े जा रहे थे।

बड़ी मुसीबत में आ गये

हां मुसीबत में तो आ ही गया   वही अल्प उत्तर।

बड़ा नुकसान हो गया   उसने इस बार अपने स्वर में कुछ विशेष जोर डालने की कोशिश की।

नुकसान तो हुआ ही। पर आपको तो मालूम ही है   बिल्डिंग का बहुत कुछ इन्श्योर्ड था

संभवत कोमल बाबू नुकसान शब्द का अंतर्बोध दुर्घटना में होने वाली धनराशि से ही कर सके थे। इसीलिए वे इतना कहकर एक बार फिर चुप हो

गये।

सुना है दुर्घटना मे बिल्डिंग में ठहरे वे सारे आदमी मर गये कोई नही बच सका उसने कोमल बाबू का ध्यान दुर्घटना के असली केंद्र बिंदु पर खींचना चाहा।

कोई नहीं बचा। सबके-सब केवल दो घंटे में ही आंखें अभी तक कागज पर गड़ी हुईं। नये कान्ट्रेक्ट के उन कागजों म उलझकर कोमल बाबू के भाव न जाने कहां विलीन हो गये थे!

पर यह कैसे कैसे हो गया यह सब लगातार बढ़ती अकुलाहट के कारण उसके स्वर में कुछ अधिक तेजी आ गयी थी।

आग जो बहुत भयकर थी। उसका दमघोंट धुआं इस तरह कमरों में घुस गया था कि कोई आदमी वहां से निकल ही न सका

उसके स्वर में उभर आयी तेजी ने कोमल बाबू का ध्यान उसकी ओर खींचा अवश्य था पर चंद क्षणों के लिए ही। अब तक कोमल बाबू ने ब्रीफकेस से कुछ और कागज निकाल लिये थे। वे उन सबको जल्दी जल्दी पढ़ लेना चाहते थे। उनकी नजरें तो उन कागजों पर थीं और मुंह जल्दी-जल्दी चल रहा था।

ये जो कुछ कह रहे थे एक ही लहजे में। हृदय में उठने वाले किसी आलोड़न विलोड़न उतार-चढ़ाव से नितांत रहित बिलकुल सपाट ढंग से।

वह सारा दृश्य तो बहुत हृदय-विदारक होगा! उसने कोमल बाबू के अन्दर से कुछ जबरन खींचने का प्रयास किया।

बड़ा दर्दनाक था। मुंह से उगला हुआ वही संवेदनहीन उत्तर।

पर इस बार न जाने क्यों कोमल बाबू ने वार्तालाप का सिलसिला टूटने नहीं दिया। सारे कागजों को ब्रीफकेस में रखते हुए वे स्वयं ही आगे कहने लगे वह दिन तो जिंदगी में कभी भूलने वाला नहीं। शहर का कौन-सा ऐसा बड़ा आदमी नहीं जो उस समय पहुंचा न हो! लेफ्टिनेंट गवर्नर भी पहुंचे थे। दो-तीन कैबिनेट रैंक के मिनिस्टर भी ।

कोमल बाबू जल्दी में थे। बातचीत के दौरान दो-तीन बार यह कह भी चुके थे कि उन्हें जल्दी ही पंद्रह मिनट के अन्दर मीटिंग में पहुंच जाना चाहिए। पर मिनिस्टर और बड़े आदमियों की जब बात आयी तो वे बड़े इत्मीनान से वह सब बताने में तल्लीन हो गये यानी कौन मिनिस्टर किस विभाग का उसे वे कब से जानते हैं। इसलिए कांट्रेक्ट में भी किसने उन्हें कितनी मदद की है वगैरह-वगैरह।

कोमल बाबू का सारा ध्यान अपने कागजों से हटकर मिनिस्टरों पर टिक गया था।

बिल्डिंग में इतनी गहरी आग लग कैसे गयी? उसे बुझाने का प्रबंध

मिनिस्टरों पर टिकी कोमल बाबू की बात को उसने बीच में ही काटा था। ऐसा उसने यह सब हिम्मत जानबूझकर किया था। शायद आग लगने और बुझाने की बात को एक बार फिर सुनकर कोमल बाबू के अंदर कहीं कोई ग्लानि पश्चाताप कोई करुणा कोई क्रंदन जाग जाये।

अब इन्क्वायरी होने दीजिए इन्क्वायरी तो बिठा दी गयी है न वैसे तो सेबाटाज ही था

वही संवेदनहीनता पर अब तक कोमल बाबू कुछ आवेश में जरूर आ गये थे ये बड़े आदमी साले खून पीते हैं। शाम से ही पीना शुरू कर देते हैं। उस समय भी नशे में धुत थे। खतरे की घंटी बजती रही पर उन्हें सुनायी ही नहीं पड़ी।

यह कहते-कहते कोमल बाबू एकाएक खड़े हो गये और अपना ब्रीफकेस उठाते हुए बोले अच्छा तो मैं चलूं। मीटिंग में देर हो जायेगी। बाहर ड्राइवर इंतजार कर रहा है।

कोमल बाबू के जाते समय उसने उनके अंदर एक बार पूरी गहराई से तलाशने की कोशिश की। शायद लुके-छिपे ढंग से ही कहीं कुछ गहरा आया हो। अंदर-ही-अंदर कुछ फूट पड़ा हो।

पर कोमल बाबू के अंदर तो अपने नये कांट्रेक्ट और उनके कागजों के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। इन सूखे कागजों ने उनके अतल की गहराइयों तक सब कुछ ऐसा सोख लिया था कि वहां बंजर रगिस्तान ही-रगिस्तान दिखायी पड़ता।

रेगिस्तान भी नहीं संभवत इससे भी कुछ और अधिक। बंजर रगिस्तान में भी कभी-कभी रेतीले पत्थरों के आपस में रगड़ने की आवाज सुनायी पड जाती है पर कोमल बाबू तो बिलकुल ही शून्य हो चुके थे।

वह हताश अवश्य था। पर उसके लिए यह अहं का सवाल था व्यक्ति मन का इस प्रकार संवदेनशून्य हो जाना क्या उसके स्वयं की कोई दुर्घटना नहीं? क्या यह दुर्घटना उस बिल्डिंग की दुर्घटना से बड़ी नहीं कही जायेगी?

पर ऐसा क्यों? क्या कोमल बाबू वास्तव में इतने कठोर हो गये हैं? कहां

विलीन हो गयी हैं उनकी वे संवेदनाएं?

लौटते समय वह सोच रहा था प्रतिष्ठा पूंजी व्यवसाय मीटिंग दौड़ धूप और इसी प्रकार की निजी हाय-हाय में कितना विलीन हो गया है व्यक्ति का सब कुछ! व्यक्ति का अपने प्रति उमड़ता यह अतिरिक्त मोह स्वयं उसी को कितना छलता रहता है—ठीक उस भूल-भुलैया की क्रीड़ा की तरह जो उसे बरबस ठीक से प्रकट नहीं होने देती।

पर व्यक्ति को बार-बार गुमराह कर देने वाली यह छल क्रीड़ा किसी-न किसी स्थिति में समाप्त अवश्य होती है। और जब यह स्थिति आती है तो उन्मुक्तता का आभास पाते ही व्यक्ति प्रकट ही नहीं होता यह प्रकट होता है तो पूरे आवेश के साथ। मानव-स्वभाव की यह स्थिति अपने विकास को अनछुआ नहीं कर सकती।

उसे लगा कोमल बाबू अपने पुराने मकान की उसी अंधेरी कोठरी के एक कोने में बैठे बिल्डिंग की दुर्घटना को लेकर फूट-फूटकर रो रहे हैं। वह जल्दी-जल्दी उन्हें कुछ समझाने के लिए कदम बढ़ाने लगा।

एक पीढ़ी का दर्द

सोनू बहुत तेजी से घुसा और घर के रवाजे बंद करने लगा। पहले उसने दरवाजे पर लगी नीचे की सिटकनी बंद की फिर चककर ऊपर की बंद करने की कोशिश। ग्यारह वर्ष के सोनू का हाथ सिटकनी को छूने में असमर्थ था। उसने हड़बड़ाते हुए लॉबी में रखे स्टूल को झटपट खींचा। उस पर तत्परता से चढ़कर ऊपर वाली सिटकनी भी बंद कर दी।

सामने ही चौके में काम कर रही मां यह सब देख रही थी। उसने वहीं से पूछा क्या हुआ सोनू इस तरह दरवाजा क्यों बंद कर रहा है? कौन है बाहर?

सोनू ने मां को जवाब दिये बिना ही दरवाजे के हैंडल को तीन-चार बार खींच कर परीक्षा कर डाली—दरवाजा ठीक से बंद तो हो गया है।

चौके से ही मां ने फिर पूछा कौन है बाहर? किसी से लड़ाई तो नहीं कर आया? बताता क्यों नहीं?

सोनू बेतहाशा घबराया हुआ था। जिस तरह से वह लंबी-लंबी सांसें ले रहा था उससे साफ जाहिर था कि वह रास्ते में किसी बात से भयभीत हो दौड़ता हुआ घर लौटा है। वह अभी तक रवाजे से ही सटा खड़ा था। वहीं से हांफते हुए बोला मां पहले दरवाजा देख लो। ठीक से बंद तो हो गया है। कोई अंदर ता नहीं आ सकेगा?

अब तक मां रसोईघर से निकलकर सोनू के पास आ चुकी थी। उसने कुछ जोर डालते हुए एक बार फिर पूछा क्या खेलते समय किसी से मारपीट तो नहीं कर आया?

मारपीट नहीं मां। पर वे लोग इस बार फिर से बदला ले सकते

हैं।

सोनू का स्वर अन्दर के आतंक को उगल रहा था। पूरा शरीर बुरी तरह भय से कांपता हुआ।

क्या हुआ मेरे बेटे को मां ने लपककर सोनू को छाती से लगा लिया।

सोनू की एक-एक सांस लुहार की तपती हुई धौंकनी की तरह आग उगल रही थी।

सोनू की आंखों में एक अजीब विषैलापन उमड़ आया था। यदि भावनाओं का कोई साकार रूप होता तो यह स्पष्ट देखा जा सकता था कि उस नन्हे-से शरीर में नागफनी के जंगल की तरह एकसाथ हजारों कांटे उमड़ पड़े थे।

मां ने बेटे को और कसकर छाती से भींच लिया कौन है तेरा ऐसा दुश्मन? किसने तुझे इस तरह डराया है?

राकेश दिनेश राजू सतपाल—सब फिर से दुश्मन बन जायेंगे। सोनू ने इस तरह अपने कई दोस्तों के नाम एकसाथ गिना डाले। खेलते समय सभी घूर घूर कर देख रहे थे जैसे अभी सब मिलकर मुझे खा जायेंगे।

अब उसने मां के कंधे झकझोर दिये थे तुमने सुना नहीं मां! इस बार उन लोगों ने साउथ दिल्ली में किसी परिवार पर हमला किया है। एकसाथ ग्यारह लोगों को गोली से भून दिया। सुना है—उस समय वहां बर्थ डे पार्टी चल रही थी।

उसी तरह हांफता हुआ सोनू एक ही सांस में यह सब कह रहा था बाहर जाकर सुनो। सब तरफ इसी खबर की चर्चा है। अब हिंदू इसका बदला नहीं लेंगे क्या? इसीलिए तो खेल के मैदान में वे सब मुझे घूरे जा रहे थे।

सोनू की बात सुनकर मां सकते में आ गयी।

तो क्या आतंकवादी दिल्ली में भी घुस आये? पंजाब की तरह यहां भी अब अमन चैन नहीं? हाय भगवान यह कैसी आग भड़की है जो शांत होने का नाम ही नहीं लेती! पर उसे अपने बेटे के धड़कते दिल को इस समय फिर से समझाने की जरूरत है। पिछले सालों से जब कभी भी वह ऐसी बातें सुनता है इसी प्रकार आतंकित हो उठता है। उसका इस प्रकार आतंकित हो जाना स्वाभाविक भी तो है। आखिर उसने सब कुछ स्वयं देखा और सुना है सोनू छोटा है तो क्या सब कुछ समझता है। बच्चों के

कोमल हृदय पर तो इन सब बातों का प्रभाव और भी गहरा पड़ता है।

यह सब सोचते हुए मां के अंदर भी कुछ कसैला सा आया, कैसा खूंखार होता जा रहा है आज का आदमी! अपनी बदहवासी ने उसे कितना अंधा बना दिया है! जिस देश में जन्मा जिन लोगों के बीच पला बड़ा हुआ उसी देश से उन्हीं लोगों से अब द्रोह

उस कसैलेपन की कड़वाहट एक गहरी नि:श्वास छोड़ गयी— इस बदहवासी का सिलसिला कब खत्म होगा? रोज रोज कितनी नृशंस हत्याएं और फिर इन खूंखारों की मांग भी तो कितनी विद्रूप! कहीं देश के टुकड़े को लेकर कोई मांग भी होती है

और फिर इस बदहवासी का वह दूसरा रूप भी तो कम घृणास्पद नहीं। कितना भयानक था वह दिन! पूरा शहर आग की लपटों में जल रहा था उसी दुष्चक्र की लपेट में ही तो सोनू का अपना दोस्त बिट्टू भी आ गया था। कितना सुन्दर फूल-सा कोमल लड़का एक साथ दस-बारह लोगों ने उसके घर पर आक्रमण किया था। पहले लूटपाट की फिर घर में आग लगा दी। मां-बाप तो भाग लिये पर बिट्टू बेचारा अभागा पीछे छूट गया मौत जो बुला रही थी। वे लोग उसकी तरफ झपटे और जलती लपटों में झोंक दिया। कुछ मिनटों में स्वाहा।

अपने दोस्त की यह खबर सोनू को एकदम गुमसुम बना गयी थी। पूरे चार दिन तक उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। सोनू सारा दिन बिस्तर पर लेटा हुआ आंखें फाड़-फाड़कर चारों ओर देखता रहता। कोई पांचवें दिन जाकर उसकी वाणी फूटी थी—एक युग की नादान पीढ़ी में अकस्मात् उठ पड़ने वाले एक भयानक दर्द से लड़खड़ाती वाणी में छिपी उस अप्रत्याशित पीड़ा को देखकर तो एक बार उसकी मां भी सन्न रह गयी थी। सोनू मां से पूछ रहा था

मां! मैंने सिर पर जूड़ा क्यों बांधा है?

सिख हो तो जूड़ा तो बांधना ही होगा और दाढ़ी भी रखनी होगी।

पर मैं अब से जूड़ा नहीं बांधूंगा। तुम कैंची लेकर मेरे सारे बाल काट डालो। नहीं तो वे लोग मुझे भी बिट्टू की तरह आग में झोंक देंगे।

आगे से उसका बेटा ऐसी निरर्थक बातें नहीं करेगा। मां को बहुत देर तक सोनू को समझाना पड़ा था जीवन में कुछ बातें ऐसी होती हैं जो किन्हीं दूसरों से किसी प्रकार की अलग पहचान बनाये रखने के लिए नहीं बल्कि कुछ धर्म-कर्म से जुड़े रहने कुछ संयम बरतने के लिए की जाती हैं बाल रखना तेरा धर्म है। इन्हें कटवा

देना तो कायरता होगी।

इसी तरह मां को अपने लाडले की आत्मबुद्धि को जाति और विजातीय तत्त्वों में अंतर को समझाने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ा। समय की भयावहता ने सोनू के अंदर न जाने कितनी शंकाएं भर दी हैं। वह एक के बाद दूसरा प्रश्न किये जा रहा था—

हमारी प्रधानमंत्री—इंदिरा जी की हत्या सिखों ने ही की है न?

इंदिरा जी की हत्या सिखों ने नहीं की है। सिख हत्यारे नहीं होते मेरे बेटे! सिख तो देश-प्रेमी होते हैं। फिर भला वह अपने नेता की हत्या क्यों करेंगे?

तो अब हिंदू सिखों से बदला क्यों ले रहे हैं? बिट्टू जैसों को वे क्यों मार रहे हैं? क्या हिंदू सिख आपस में दुश्मन हो गये हैं?

सोनू ने अपने युग का उभरता हुआ एक जटिल सवाल पूछ डाला था।

पर मां उस सवाल के आग हताश नहीं हुई। उसक स्वर म निश्चय का बोध लेशमात्र भी डगमगाया नहीं था— बेटा हिंदू सिखों से बदला नहीं ले रहे हैं? यह सब कुछ दंगइयों ने किया है। और हिंदू दंगई नहीं होते।

बेटा अपनी बुद्धि से उन कुतर्कों को निकाल सके इसके लिए मां ने उसे एकसाथ अनेक उदाहरण गिना डाले कि पहले भी और इन दंगों में ही किन किन हिंदुओं ने सिखों की जान बचायी और किन किन सिखों ने हिंदू परिवारों की।

बिट्टू के मां-बाप ने भी तो भाग कर एक मंदिर में शरण ली थी। फिर तेरी बुद्धि में यह कुतर्क कैसे आ गया कि हिंदू सिख आपस में दुश्मन हो गये?

इस समय भी मां ने सोनू को उसी प्रकार स समझाने की कोशिश की। वह बहुत देर तक बेटे को छाती में उसी तरह भींचे उसकी पीठ थपथपाती रही इस तरह की निरर्थक बातों से डरते रहोगे तो जीवन म कुछ भी नही कर सकोगे। तुम्हें तो पढ़ लिखकर अच्छा लड़का बनना है। अपने देश का नाम रौशन करना है। मां ने सोनू के दोनों गालों को बारी-बारी करके चूम लिया जा अपना बस्ता ले आ। होमवर्क करवा दूं। नहीं तो सुबह स्कूल जाने समय रोता फिरेगा कि मेरा होमवर्क नहीं हुआ।

पर मां कल मैं स्कूल नहीं जाऊंगा।

स्कूल क्यों नहीं जायगा बता तो?

स्कूल में वे सभी लोग मुझे घूरेंगे। वे लाग ऐसे घूरते है मानो हम सिखों ने ही सब कुछ किया हो। जब वे ऐसे देखते है तो लगता है—एक-एक को

नोच लूं।

सोनू का शरीर फिर से किसी आवेश के कारण बुरी तरह कांपने लगा। उसके दांत बुरी तरह किटकिटा रहे थे। अकस्मात उसने पास ही मेज पर रखे गुलदस्ते में से फूल की कुछ डडियां निकाल लीं। सोनू उन्हें एक-एक करके नोचने लगा।

मा को लगा उसके अदर उग आने वाला नागफनी का जंगल इतना कुछ समझाने के बाद भी साफ नही हुआ। इस बार हताश हो मां ने भगवान के सामने मन-ही-मन हाथ जाड दिये

कैसा जहर घुल गया है देश की हवाओ मे ! नफरत घृणा वैर और दुश्मनी फैलाती ये हवाए कब बंद होगा इन हवाओं का चलना? हे भगवान ! नन्हे-मुन्ना पर तो तरस खा बचपन से ही इनके मन ऐसी हवाओं से झुलस गये विषाक्त हो गये उनमे जहर घुल गया तो इस पीढ़ी का क्या होगा ?

मां ने इस बार भी अपने अदर उमडते प्रवाह को वही रोककर बेटे को फिर स कुछ और अधिक दृढता के साथ समझाने की कोशिश की सोनू तुझे स्कूल तो जाना ही पड़गा। अब तू बेकार की शकाएं बहुत करने लगा है। तेरे सगी-साथी तुझे यूं ही देखते होगे। पर तेरे अदर का कुतर्क तुझे यही समझाता है कि वे लोग तुझे किसी और नजर से देख रहे हैं।

सोनू बिस्तर पर लेट चुका था। घर का सारा काम निपटाने के बाद मां भी उसकी बगल मे लेट गयी। उसे लगा था कि उसका बेटा अब तक पूरी तरह सो गया होगा। पर सोनू अभी तक सो नही सका था। वह अभी भी अनेक शंकाओ के जाल से घिरा हुआ था। शकाओं के इस कंटीले जाल से वह जितना ही बाहर निकलने की कोशिश करता समवत उतना ही उसमें उलझता जाता। देर रात तक कुछ-न-कुछ बड़बड़ाता रहा। बीच-बीच म मां को बुरी तरह झकझोर भी देता

तुम कहती हो वे बच्चे यूं ही देखते होंग। मै सच कहता हू वे सब बुरी तरह से घूरते हैं जैसे घृणा उगल रहे हों वे लोग अब मुझे उतना नहीं चाहते। पहले मै कक्षा मं दिनेश पकज और राकेश वाली सीट पर ही आगे बैठता था। अब मुझे उस सीट पर बैठना अच्छा नहीं लगता। एकदम पीछे वाली सीट पर बैठने लगा हूं उस दिन भी स्कूल क उत्सव के समय मैं सबस पीछे अकेला खडा रहा। किसी ने मुझे अपने पास बैठने क लिए बुलाया भी नही मा ! और वे दो लड़के तो मुझे चिढ़ाते भी हैं। पास से निकलते समय कुछ-न-कुछ फुसफुसाते रहते हैं।

तो जब व बच्च कुछ चिढ़ात हैं तो तू अपनी क्लास-टीचर से उनकी

शिकायत क्यों नहीं करता? इतना सब सहता क्यों है? मां की अब खीज आ गयी थी। उसका स्वर कुछ तेज हो आया।

पर मिस नंदा भी तो मुझे वैसे ही देखती है। हाजिरी लेते समय मेरा नाम आते ही वे भी तो घूरती है। आजकल तो नंबर भी कम देने शुरू कर दिये हैं। मैं सब जानता हूं। सिख लड़का हूं न मैं। इतना कहते-कहते सानू का स्वर पूरी तरह से बदल चुका था।

अब मां की खुशामद करता हुआ-सा वह कुछ कह रहा था मां मेरा नाम किसी ऐसे स्कूल में लिखवा दो न जहां सारे सिख बच्चे ही पढ़ते हों। वहां मुझे ऐसा-वैसा तो नहीं लगेगा। सोनू इसी तरह बड़बड़ाता खीजता खुशामद करता सो चुका था।

मां ने एक बार फिर से भगवान को हाथ जोड़ दिये— हे भगवान! तेरी दया दृष्टि कब होगी? कब बुझेंगे दिलों के जलते हुए ये शोले?

दूसरे दिन सोनू उठा तो उसने स्कूल न जाने की कोई हठ नहीं की। वह जानता था मां कुछ मामलों में बहुत कठोर है। उसे स्कूल भेजे बिना वह मानने वाली नहीं। इसीलिए जब वह सोकर उठा तो खुद ही स्कूल जाने की तैयारी करने लगा। जूतों पर पालिश की। नहाया। बस्ता ठीक किया। और यूनीफॉर्म पहनी।

तब तक मां मक्खन लगे दो टोस्ट और गरम दूध नाश्ते के लिए ले आयी थी। सोनू ने टोस्ट खाये दूध पिया और फिर पीठ पर बस्ता लादकर स्कूल चल दिया।

स्कूल का रास्ता उसके घर से लगभग बीस मिनट का था। पूरी कॉलोनी को पार करके गली के मोड़ पर बनी वह लाल बिल्डिंग उसके ही स्कूल की है।

इस स्कूल मे वह पिछले तीन साल से पढ़ रहा है। चौथी कक्षा में नाम लिखवाया गया था। अब वह सातवीं कक्षा मे पहुंच गया है। सोनू हर कक्षा में अव्वल दर्जे से पास होता आया है।

चार साल से जाते जाते सोनू के लिए स्कूल का रास्ता नपा-तुला-सा है। वह कब घर से निकलता कब स्कूल पहुंच जाता—रास्ते का उसे पता भी नहीं चलता। पर उस दिन उसके लिए स्कूल का वह रास्ता भी पता नहीं कितना भारी हो उठा! आतंकित मन का सारा बोझ उसके पैरों पर उतर आया हो। सानू मन ही-मन एक बार फिर से झुंझला उठा

मां ने उसे जबरन स्कूल भेज दिया है। अब उस फिर सबका सामना करना पड़ेगा। कक्षा मे क्ल होने वाली आतंकवादियो की घटना की चर्चा जरूर होगी। सभी लड़के कुछ-न-कुछ कहगे। और यह सब कहते समय उसे बीच-बीच म घूरते भी जायेग उसक जूड़े का भी।

वह रह-रहकर झुंझला रहा था

मां को क्या पता—हम लोगो पर बाहर क्या बीतती है ! खुद तो हरदम घर में घुसी रहती हैं। मैं कहता हू क्ल वाली घटना को लेकर दंगे फिर से भड़केंगे—जब ऐसा होगा तब मां को होश आयेगा कि सोनू सब कुछ कितना ठीक कहता है।

यह इत्तफाक था कि उस दिन वह रास्ता भी बहुत वीरान हो उठा था। दूर-दूर तक सड़क पर कोई आदमी नही। हो सकता है सड़क पर फैली यह वीरानगी शनिवार के कारण रही हो। शनिवार के दिन नगर के अधिकाश कार्यालय और कई स्कूल बंद होने के कारण अक्सर पुरुष-स्त्री बच्चे सुबह देर तक सोते रहते हैं और सुबह अपनी दिनचर्या के लिए सड़कों पर जल्दी नही निकलते।

सड़क की यह वीरा गी सोनू के मन में उठने वाली शंकाओं और झुझलाहट का और भी सहयोग दे रही थी।

ऐसे भय वाले माहौल मे कोई भी समझदार व्यक्ति घर से बाहर क्या निक्लेगा? सबको अपनी जान प्यारी है।

उसी समय जब स्कूल अभी थोडी दूर और शेष था उस मोड़ के दूसरे छोर पर तहमद-कुर्ता पहने हुए दो आदमी आते दिखायी दिये। दोनों ही काफी लबे और चौड़े। वे दोनो सोनू के रास्ते की ओर ही बढ रहे थे। पर चलते-चलते वे दोनों सहसा रुक गये और कुछ सलाह-मशविरा-सा करने लगे।

सोनू का आतंकित मन और कातर हो उठा था— ये लोग एकाएक क्यों रुक गये? क्या सलाह कर रहे हैं? ये दानो वे लोग ही तो नही? कही बदला तो नहीं लेना चाहते? मे सड़क पर बिलकुल अकेला हू

सोनू दौड़ रहा था—स्कूल की ओर। अब उसके पैरो में उतर आया वह बोझ एकाएक न जाने कहां गायब हो चुका था। वह भागता जा रहा था। उसे हर कदम पर केवल एक ही अहसास हो रहा था—जितना वह भागने की कोशिश करता है वे लोग उतना ही उसका पीछा करने में जुटे हैं। इसीलिए वह और तेजी से भागता। भागते समय उसने अपनी सारी इंद्रियों की शक्ति अपने दोनों पैरों को सौप दी थी।

सोनू स्कूल पहुचने तक पूरा थक चुका था। उसके दोनों पैर बुरी तरह से

राड़खड़ा रहे थे। गेट पर पहुचन तक हांफत हुए उसकी अजीब ढग से घिग्घी बध गयी।

गेट पर बैठे चपरासी ने ही उसे संभाला और गोद में उठाकर सीध उस मडिकल रूम में ल गया था।

सोनू को स्कूल म सुरिंदर कहते हैं। मिनटों में पूरे स्कूल मे यह खबर हवा की तरह फैल गयी थी कि सुरिंदर सिंह स्कूल आते-आते बुरी तरह बेहोश हो गया है।

जब उसकी कक्षा में यह बात पहुची तो कक्षा-अध्यापिका मिस नंदा कक्षा मं छात्रों की प्रात कालीन हाजिरी ले रही थी। खबर सुनते ही वह तुरंत मेडिक्ल रूम की ओर दौड़ पड़ी थी।

कक्षा के बहुत-से लड़के भी मिस नंदा के पीछे दौड़ पड़े। यदि स्कूल के अनुशासन प्रभारी ने उन्हें राका न होता तो मेडिक्ल रूम में उन राड़कों की एक बडी भीड़ जमा हो जाती। पर फिर भी आगे की सीट पर बैठने वाले ये तीनों लड़के दिनेश पंकज और राकेश सानू के लिए पानी आदि लान का बहाना करके मडिकल रूम मं घुस गय थे।

मडिक्ल रूम म नर्स सानू क प्राथमिक उपचार मं व्यस्त थी। उधर मिस नंदा सोनू के सिरहाने बैठी बड़े प्यार से उसका माथा सहला रही थी।

बहुत शीघ्र ही सोनू को होश आ गया। वास्तव में उसे कोई बेहोशी नही बल्कि तेज दौड़ने के कारण चक्कर आ गया था।

नर्स मिस नदा को समझा रही थी कई बार खाना न खाने के कारण यानी खाली पंट के कारण भी इस तरह के चक्कर आ जाते हैं। इसलिए घबराने की कोई बात नही।

सामने ही खड़ा दिनेश भावातुर हो बीच में ही बोल पडा मैं म सुरिंदर आज जरूर खाली पेट आया है मैं अपना टिफ्नि ले आऊं? गोभी क पराठे हैं। सुरिंदर को बहुत पसंद हैं।

पंकज भी उतना ही भावाकुल था मेरे टिफिन में इडली और दही-पुदीने की चटनी है। सुरिंदर को बहुत अच्छी लगेगी।

दानों लड़के कक्षा से टिफिन लाने के लिए दौड़ गये। दिनेश भी पीछे पीछे।

मिस नंदा सुरिंदर का समझाने लगी घर से खाली पेट क्यों आ गये? इस तरह बीमार पड़ गये तो इस बार कक्षा में अव्वल कैसे आओग?

ि्निश पंकज टिफिन ले आये थे। अपने बीमार मित्र को ठीक करने में दोनों में हाड़ लगी थी।

ि्निश न भाभी के परांठे का कौर तोड़कर सोनू के मुंह की ओर बढ़ाया ही था कि पंकज ने बीच म ही दिनेश का हाथ हटा दिया नहीं-नहीं पहले इडली यह ज्यादा स्वािष्ट है।

उधर भावनाओं का ज्वार सुरिंदर के अंदर भी उमड़ आया था। संभवत वह कहना चाहता था कि वह घर से खाली पेट नहीं आया है। भरपूर नाश्ता करके आया है। वह यह भी कहना चाहता था कि दोस्तो ! तुम दोनों भी तो खाओ। अकेले वह इतना सारा पर उसके मन में उठने वाल ये संवाद सीधे होठों तक आगे बढ़ना चाहकर भी बीच मे ही न जाने कहा विलुप्त हो गये। भावनाओं के प्रवाह में आकर वे अब आखा के रास्त स कोमल गालो पर उतर आय थे। सुरिंदर रो रहा था। पर उसे यह रोना बहुत शांति द रहा था।

तबियत ठीक हो गयी। फिर अब क्यों रो रहा है? दिनेश ने पैंट की जेब से रूमाल निकाला और सुरिंदर के दोनो गाल पोंछ दिये।

पकज न भी अपन माता-सहज शब्दों मे मित्र को धीरज बधाया पागल कहीं का ! इतनी छोटी-सी बीमारी को लकर कहीं मन छोटा किया करते हैं !

एक घटा आराम करने के बाद सुरिदर को कक्षा में जाने का आदेश मिल गया था। उसके बहुत मना करन पर भी दिनेश और पकज ही उसे पकड़कर कक्षा में लाये थे। सुरिदर के कक्षा में घुसते ही सारी कक्षा एक बार फिर से उमड पडी थी

सुरिदर को इधर ले आओ इधर उसे खुली खिड़की के पास बैठने दो ताजी हवा लगेगी।

कुछ अन्य लड़कों का स्वर दूसरे ढंग से सुनायी पड़ा

नही उधर पखे के ठीक नीचे वाली सीट पर सुरिदर बैठेगा। पंखे की हवा ज्यादा तेज लगेगी।

दिनेश और पकज अपनी बात पर अड़े रहे

सुरिदर कही नही हम दोनों के बीच म ही बैठेगा। अब इसकी तबियत यदि फिर से खराब हुई तो इसे हम तुरत सभाल लग।

कक्षा मे उस दिन पूरे समय सुरिंदर की बीमारी और स्वास्थ्य की बात होती रही। शहर में हाने वाली कल की उस बड़ी दुर्घटना का उन बच्चों के कोमल मस्तिष्क

पर असर न पड़ा हो अथवा उसका उन्हें ख्याल बिलकुल न आया हो ऐसा नहीं था। पर उस दिन तो कक्षा के उन नन्हे मुन्नों के लिए सबसे अहम् और बड़ी घटना सुरिंदर की अपने मित्र के इस तरह अक्स्मात् बीमार हो जाने की ही थी। जब अपना ही मित्र बीमार हो तो फिर ध्यान कहीं और जा भी कैसे सकता था?

चलते समय प्रधानाचार्या की ओर से सुरिंदर को उसकी माँ के लिए एक पत्र दिया गया था। पत्र में खास हिदायत यह थी

सुरिंदर के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें। उसे खाली पेट स्कूल कभी न भजें। वह एक होनहार लड़का है। उसके प्रति बरती जाने वाली जरा-सी भी लापरवाही उसकी प्रगति में बाधक हो सकती है।

छुट्टी के समय गर्मी अपनी पूरी पराकाष्ठा पर थी। दो बजे का समय। तेज तपती धूप। आग उगलती उस दोपहरी में सड़क की नीरवता और गहरा उठी। उस समय भी उस लंबी सड़क पर दूर-दूर तक कोई व्यक्ति आते-जाते नहीं दीख रहा था। संभवत उस समय चिलचिलाती धूप से बचने के लिए लोग घरों में दुबक गये थे। पर दोपहर की उस वीरानगी में अब आसपास फैली प्रकृति भी अपना पूरा साथ दे रही थी। धूप के कारण सड़क के किनारे लगे पेड़ों के पत्ते भी झुलसकर बिलकुल मूक हो चुके थे। पत्तों के झुरमुटों में कोई खरखराहट नहीं। उसमें छिपे पक्षियों का स्वर भी निशांत। कड़कती दोपहर में वीरान बनी वह सड़क सायँ-सायँ करती अब एक अजीब-सा सन्नाटा उगल रही थी।

सोनू घर लौट रहा था। पर अब सड़क के उस भयाकुल सन्नाटे में भी उसके अन्दर कोई भय पैदा नहीं कर सका था। वह बहुत जल्दी-जल्दी भी नहीं चल रहा था। पूरा आश्वस्त होकर धीरे-धीरे सधे कदमों से घर की ओर बढ़ रहा था।

इसी बीच उसने प्रधानाचार्या का माँ के लिए दिया गया वह पत्र अपने बस्ते में से निकाला और उसके टुकड़े-टुकड़े करके हवा में उछाल दिये।

बौने

बस-स्टॉप पर पहुंचते ही उसे एक अप्रत्याशित सुख की अनुभूति हुई। यह एक इत्तफाक था कि स्टॉप पर पहुंचते ही उसे कार्यालय के लिए सीधी बस मिल गयी। इसके साथ ही यह दूसरा इत्तफाक था कि उस दिन वहां पर बहुत अधिक भीड़ नहीं थी। बस सही प्वाइंट पर आकर भी रुकी थी। बस पकड़ने के लिए उसे दायें-बायें घड़ी के पेंडुलम की तरह दौड़ना नहीं पड़ा था।

उसने बहुत इत्मीनान से बस पर चढ़ने का प्रयास किया पर पायदान पर पैर रखते ही उस लंबे चौड़े नौजवान ने उसका रास्ता रोक लिया था। बेहूदी हरकतों के साथ दायें-बायें करता वह एकाएक उतरा और तेजी से कहीं ओझल । और फिर एक के बाद एक छह-सात दूसरे नौजवानों के उतरने का सिलसिला जारी रहा। सभी शक्लों से आवारा और बदमाश लगते थे।

उन सभी ने उसको बस में चढ़ने से रोका ही नहीं बल्कि कुछ अभद्र हरकतें करते हुए एक के बाद एक शीघ्रता से उतरकर चले गये।

ओफ्! ये लोग जरा-सा लिहाज नहीं करते । युवती के मुंह से गहरी निःश्वास। अन्दर ही-अन्दर वह दंतविहीन नागिन की तरह फुंफकार उठी ये बदमाश फिर से कहीं मिल जायें तो उनकी खैरियत नहीं

गेट के पास ही अपनी सीट पर बैठा हुआ कंडक्टर टिकट की गड्डियों को गिन-सा रहा था। बस के अन्दर आते ही वह तूफान की तरह उस पर टूट पड़ी कंडक्टर यह क्या बात है? जब यात्रियों के बस से उतरने के लिए आगे गेट है तो फिर उन्हें पीछे से क्यों उतरने दिया जाता है? अपना काम तो ठीक से किया करो!

कंडक्टर ने कुछ उत्तर नहीं दिया। उसकी अघड़-सी कड़कती आवाज ने कंडक्टर के कानों को बेधा न हो ऐसा नहीं। पर अपने को व्यस्त दिखाने के प्रयास में हाथ में पकड़ी टिकट की गड्डियों को गिनने का जान-बूझकर अभिनय करता हुआ वह पूरा मौन बना रहा।

उसने कंडक्टर को अच्छी तरह देखा। वही कंडक्टर था जो इन दिनों सुबह की नौ बजे वाली बस में लगातार आ रहा है। वह सोचने लगी—अच्छा ही हुआ कंडक्टर ने किसी तरह का प्रत्युत्तर नहीं दिया। इससे किसी प्रकार की तू-तू मैं-मैं हो जाने का मतलब था कि कल से इस स्टॉप पर बस का न रुकना। फिर दूसरी बस की पूरे पच्चीस मिनट इंतजार । बेमतलब कार्यालय लेट पहुंचने से फायदा क्या?

दरअसल उस दिन भी उसे ठीक समय पर कार्यालय पहुंचकर कुछ फाइलों को तुरंत निपटाना है। ये कुछ महत्त्वपूर्ण फाइलें हैं। किसी प्रकार के तनाव और उत्तेजना की स्थिति में कार्य के बिगड़ जाने की संभावना हो सकती है। इसीलिए सब तरह की उत्तेजना पर नियंत्रण करते हुए उसने स्वयं को शांत करने का प्रयास किया। मन में सुलगती आग एक बार फिर से दबा दी गयी पर मन में एक घुटन-सी होती रही—कितनी स्वकेंद्रिता छोटी छोटी सुख सुविधाओं के लिए गलत बातों का भी प्रतिरोध नहीं। कहीं न-कहीं अपनी ही आपा धापी में दब-दब से बौने बने हुए हम लोग स्वयं को पूरी तरह प्रकट भी नहीं होने देते।

पीछे की सीट पर बैठे वे चारों आदमी उसे बराबर घूरे जा रहे थे। सभी अधेड़ अवस्था के। उसे उन व्यक्तियों से वितृष्णा हो आयी। इच्छा हुई उनसे यह पूछा जाये—उनके घर की बहू-बेटियां के साथ यदि बदमाश ऐसी हरकत करते तो क्या वे इसी प्रकार चुप बने रहते?

पर कुछ सोचते हुए वह शांत होने का फिर से प्रयास कर बैठी—खैर समझा तुम्हें देखकर ये लोग केवल घूर ही रहे हैं। किसी प्रकार का और भाव नहीं है इनके चेहरों पर। कितना घिनौना होता है ऐसे अवसरों पर इनके चेहरों पर उभर आने वाला वह भाव! मितली को पैदा करने वाली इनकी मुस्कान!

अब वह बहुत कुछ सामान्य स्थिति में लौट आयी थी। अभी-अभी शिथिल सी हो जाती हुई टांगों में उसने फिर से तत्परता का अनुभव किया। कंडक्टर से टिकट लेने के बाद बिना कुछ कहे-सुने वह तेजी से आगे बढ़ी। दो सीटों के बाद उस वृद्ध पुरुष के पास वह सीट अब भी खाली पड़ी है। वह शीघ्रता से उस ओर लपक

गयी।

टिकट नहीं लेना क्या? नीयत क्यों खराब कर रही है?

कंडक्टर की आवाज काफी तेज तर्रार थी। वह चौंक पड़ी—क्या कंडक्टर उससे कुछ कह रहा है? उसने अभी भी अपनी मुट्ठी में दबाये टिकट को एक बार अच्छी तरह देखा। टिकट सुरक्षित है। उसने पूरी तरह आश्वस्त हो सीट पर आराम से बैठने का प्रयास किया।

इस पर कंडक्टर विशेष संबोधन के साथ टर्राया ताऊ क्या बात है अभी तक पैसे नहीं निकाल सका? क्या बटुआ खो गया है?

उसके बगल में बैठा वह वृद्ध पुरुष वास्तव में कुछ देर से अपनी मटमैली धोती के फेर और कुर्ते की जेबों को टटोल रहा था। वह अपना बटुआ ही ढूंढ रहा था। पर उसके हर प्रयास के साथ आशंका और भय की स्याह लकीरें एक के बाद एक उसके चेहरे पर खिंचती जा रही थीं।

अरे! मैं तो लुट गया। मेरी रुपयों की थैली—किसने निकाल ली मेरी थैली

वह बार-बार अपनी जेबों में हाथ डालता कुछ ढूंढता और चिल्ला उठता लाल रंग की थैली थी। पूरे ढाई सौ रुपये थे उसमें ।

वृद्ध पुरुष के ढाई सौ रुपये की बात सुनकर अब तक बस में कुछ हड़कंप मच उठा। एक ही पल में सबकी समझ में आ गया था कि उस वृद्ध पुरुष की जेब से ढाई सौ रुपये निकल गये हैं।

सबसे पहले इर्द गिर्द बैठे यात्रियों ने अपनी जेबों का निरीक्षण किया। किसी ने बार-बार अपनी जेबों में हाथ डालकर तो किसी ने पर्स में रखे रुपयों को पूरी तरह गिनकर।

उसने भी तुरंत अपने पर्स की तीनों जिपों को खोलकर उसकी हर जेब को अच्छी तरह देखा। चीजें ज्यों-की-त्यों सुरक्षित हैं। हाथ में इम्पोर्टेड रिस्टवाच भी ज्यों-की-त्यों बंधी हुई थी। बस में चढ़ते समय गुंडों ने उस पर हाथ मारने की कोशिश की थी।

अब तक अपनी सीट से उठकर वह वृद्ध पुरुष तेजी से पीछे के गेट की ओर पहुंच गया था। गेट के हैंडल को पकड़कर जोर-जोर से दहाड़ रहा था रोको बस रोको। मेरी थैली यहीं कहीं गिर पड़ी

क्या करता है ताऊ? मरेगा क्या? चलती बस से कूद रहा है अपनी सीट पर

जाकर बैठता है कि नहीं कि अभी बतलाऊं तुझे कंडक्टर की तेज तर्रार आवाज फिर से पूरी बस का दहला गयी।

वृद्ध पुरुष अपनी सीट पर फिर स लौट आया था। अब वह सीट क कभी दायें ता कभी बाये आग पीछे देखता और चिल्ला उठता मै तो लुट गया पूरी थैली चली गयी मेरे पास तो एक भी पैसा नहीं बचा!

वृद्ध पुरुष बिलकुल निश्चित था। उसके स्वर में जरा भी शका नहीं थी। वह ढाई सौ रुपये लेकर चला था।

सामने बैठा वह व्यक्ति दो चार बार समझाकर पूछता अच्छी तरह याद करो! थैली लेकर तुम घर स चले भी थे? कही घर म ही न रह गयी हो?

वृद्ध पुरुष का हर बार यही उत्तर अच्छी तरह याद है। मै रुपये की थैली लेकर चला था। कुर्ते की जेब म रखते समय उसे दो-तीन बार टटोल भी लिया था।

पीछे बैठे यात्री आलोचना पर उतर आये थ। व वृद्ध पुरुष को ही दोषी ठहराने लग लगता है दिल्ली में पहली बार बस में चढ़े हो। क्या यहां की बसों का हाल नहीं जानते? रुपया को संभाल कर रखते। रुपये कुर्ते की जब म रखकर चल पडे।

आग की सीट पर बैठे वे दो यात्री प्रारभ स ही किसी पत्रिका म तल्लीन थे। बस मे मचे हड़कप के कारण उनकी तल्लीनता मे कुछ क्षण के लिए व्यवधान अवश्य आया था। उन्होने भी पीछे मुड़कर दो चार बार इधर-उधर देखने की कोशिश की थी पर बहुत शीघ्र ही वे उसी प्रकार पत्रिका मे डूब गये।

कुछ यात्रियों ने एक बार फिर से अपनी जेबो का निरीक्षण किया। अब वे निश्चित हो कुछ और अधिक आश्वस्त दीखने लग।

पंजाबी बाग का बस स्टॉप था। बस एक झटके से रुकी और कुछ यात्री तत्परता से आगे बढ़ते हुए नीच उतर गये।

अब तक वृद्ध पुरुष की आंखें बुरी तरह स भर आयी थीं। वह रो रोकर बतला रहा था। सभवत वह बिहार के किसी गाव का रहने वाला है। दिल्ली में दूसरी बार आया है। उसके बडे लड़के को कोई गभीर बीमारी हो गयी है। दो महीने से गंगाराम अस्पताल म भर्ती है। इस बार उसी की दवा-दारू के लिए गाव स रुपयों का इतजाम करके दिल्ली आया है।

उसकी रामकहानी सुनकर वह युवक कुछ सवेदनशील हो उठा था कंडक्टर

बस को थाने ले चलो। सभी यात्रियों की तलाशी होनी चाहिए। शायद रुपये मिल जायें।

और अभी-अभी जो पांच-छ यात्री उतर गये उनका क्या होगा? तलाशी तो सभी की होनी चाहिए थी? कंडक्टर के स्थान पर उसी के बगल मे बैठे एक दूसरे युवक ने ही उत्तर दे डाला।

उसे यह संवेदनशील युवक बहुत प्रभावित कर गया बस के और यात्रियों से कितना अच्छा! कम-से-कम दूसरे के दुःख में बोला तो। दूसरों को भी उसकी बात का समर्थन करना चाहिए था।

ठीक उसके पीछे बैठी वे दो महिलाएं भी उस संवेदनशील युवक की बात का प्रतिरोध कर रही थीं। वे कंडक्टर से बस को सीधे ले जाने का आग्रह करने लगीं हम लोग तो वैसे ही लेट हो गये। थाने थाने के चक्कर में बस और लेट हो जायेगी। महिलाएं तर्क कर रही थीं और फिर बस को थाने पर ले जाने का फायदा क्या होगा? जेब-कतरे तो बस से न जाने कब के उतर गये!

कंडक्टर पूरा शांत बैठा हुआ था। मानो उसे भी इस बात की जानकारी हो कि जेबकतरे अब बस में नहीं। वे बहुत पहले बस से भाग चुके हैं।

यह संवेदनशील युवक अब कुछ उत्तेजित हो आया। वह तेजी से उन महिलाओं की ओर मुड़ा आपको कैसे मालूम कि जेबकतरे बस से उतर चुके हैं?

अरे! जिस समय बाबा बस में चढ़े थे गुंडे भी उनके पीछे पीछे चढे। उन्होंने कंडक्टर के पास आते-आते बाबा को पूरी तरह से घेर लिया था। टिकट खोने का बहाना लगाते हुए उन्होंने उसी समय जेब से रुपयों की थैली निकाल ली थी। बडे गुंडे थे। उनमें से एक महिला बहुत सहज और स्थिर स्वर में यह सब बतला गयी।

जेबकतरे जेब काटते रहे और आप देखती रहीं! कुछ बोली नहीं! इंसानियत की भी हद होती है।' युवक कुछ और उत्तेजित हो उठा।

भाई साहब इसमें इंसानियत की क्या बात है? बदमाशों के पास चाकू छुरा हो सकता था। शोर मचाने पर कहीं वे लोग मुझ पर ही वार करके चले जाते तो? अब उस महिला के स्वर में भी थोड़ी तेजी आ गयी थी।

ठीक ही तो कहती हैं ये बहन जी। आजकल जमाना बहुत खराब है। बेमतलब किसी से दुश्मनी लेने का समय नहीं। इसी से तो मैं भी चुप बनी रही दूसरी महिला ने भी उसी स्वर में पहली महिला की बात का पूरी तत्परता से समर्थन

किया। वह बात को कुछ और आगे बढ़ाते हुए बताने लगी बदमाशों ने तो इनको भी घेरा था। पर ये समझिए—ये बाल-बाल बच गयीं। उनके कुछ हाथ नहीं लगा। ये पर्स बगल में दबाये हुए जो थीं।

उसी महिला ने इस बार उसकी ओर संकेत किया था और स्वर में एक गहरी सहानुभूति घोलने का प्रयास भी।

पर पता नहीं उसे एक बार फिर से अपने लिए संवेदना हो आयी थी अथवा यह संवेदना उस वृद्ध पुरुष के लिए थी। महिला की यह सहानुभूति भी उसे अन्दर तक काट गयी। इस बार वह महिला पर उत्तेजित हो रही थी गुंडों की हरकत देखकर भी आप चुप बैठी रहीं! कैसी हैं आप? शोर तो मचा ही सकती थीं ।

तो क्या उन गुंडों ने मेरे बटुए को हाथ लगाया था? मेरे बटुए को हाथ लगाया होता तो देखती कैसा हंगामा करती!

सम्भवत उस महिला ने उसके लिए जिस प्रकार सहानुभूति दिखायी थी उसे पूरी आशा थी कि वह भी उसे उसी प्रकार कोई विनम्र उत्तर देगी। पर उसके इस प्रकार उत्तेजित हो जाने के कारण ही उस महिला ने उसकी बात बीच में ही काट दी और स्वयं भी उतना ही उत्तेजित होने लगी। इस बार उसे और उत्तेजित होना चाहिए था पर वह बात को आगे न बढ़ाकर एकाएक पूरी तरह शांत हो गयी।

कितना घिनौना तर्क! ऐसे तर्क पर कौन विवाद करे?

अब तक वह वृद्ध पुरुष रुपयों को लेकर और भी बेचैन हो उठा था। थाने और तलाशी की बात को सुनकर वह भी कंडक्टर से बस को थाने ले चलने का आग्रह करने लगा। पर कंडक्टर ने एक बार यह समझाकर कि जेबकतरे बस से उतरकर चले गये हैं बस को थाने ले जाने का कोई फायदा नहीं—पूरी चुप्पी साध ली थी।

सहसा वृद्ध पुरुष की दृष्टि ड्राइवर के पीछे वाली सीट पर धवल श्वेत सफारी सूट पहने हुए उस अधेड़ उम्र के आदमी पर पड़ी थी कंडक्टर से निराश वह उस आदमी की ओर बढ़ गया था। दोनों हाथों को जोड़कर वह उस व्यक्ति के सामने बुरी तरह गिड़गिड़ा रहा था ये कंडक्टर बाबू बस को थाने नहीं ले जा रहे हैं। बाबू जी! आप तो कोई बड़े अफसर हैं। आप ही बस थाने ले चलिए। कुछ तो मदद करें

वृद्ध पुरुष को अफसर जैसा दीखने वाला वह व्यक्ति जो अब तक मौन बना हुआ था सम्भवत देहाती जैसे दीन हीन दीखने वाले व्यक्ति के पचड़े में शुरू से ही नहीं पड़ना चाहता था। इसीलिए वह केवल इतना कहकर कि अब शोर मचाने से कुछ

फायदा नहीं अच्छा हो वह अपनी सीट पर जाकर बैठ जाये—एक बार फिर मौन हो गया।

बस में एक बार पूरी निस्तब्धता छा गयी। वह संवेदनशील-सा लगने वाला युवक भी कुछ शांत सा हो चुका था। लगता था या तो अपनी बात का कोई अधिक समर्थन न पाकर अब वह भी इस मामले में और पड़ना नहीं चाहता अथवा उसका गंतव्य स्थान आने को था और वह बस से उतरने के मूड में आ चुका था।

सहसा बस रुकी। रेड लाइट थी। वह संवेदनशील युवक आगे के गेट पर खड़े दो चार लोगों को चीरता हुआ एका के छलांग लगाकर उतर गया।

अन्य यात्री भी खिड़की से बाहर देखते हुए अपने-अपने गंतव्य स्थानों की प्रतीक्षा करते-से एक सामान्य मनोदशा में बन्द चुके थे।

हर व्यक्ति के जीवन के अनुभवों की एक शृंखला होती है। कोई-कोई अनुभव छोटे अंतराल का होकर भी इतना तीखा होता है कि अपने अल्प समय में ही एक गहरा घाव कर जाता है। देहात से आये उस वृद्ध पुरुष का भी महानगर की उस बस यात्रा का अनुभव उतना ही तीखा था। वह पूरा असहाय और निरुपाय होकर खिड़की से बाहर लगातार देख जा रहा था। उसके अंतरतम में उभर आने वाला वह घाव संभवत अब रिस रिसकर बाहर फूटने लगा था।

वह देख रही थी—वृद्ध के चेहरे पर झुर्रियां और सघन होती जा रही हैं। दुबले-पतले हाथों की सिकुड़ी हुई चमड़ी पर छायी नसों का उभार एकाएक और उभर आया है। और इसी के साथ उसकी आंखों के नीचे पड़े गड्ढे और अधिक गहरा उठे।

बगल में बैठी हुई वह उस वृद्ध पुरुष की एक-एक भंगिमा का निरीक्षण किए जा रही थी। उसे लगा उसके अंदर भी कुछ दबा हुआ-सा गुदगुदाने लगा है। उसने अपने पर्स में रखे छोटे बटुए को निकाला। पूरे सौ के खुले नोट। कुछ रेजगारी भी।

दस-बीस इस वृद्ध को दे देना चाहिए। बेचारे के पास एक पैसा भी नहीं रहा। बेटा बीमार है। कुछ मदद हो जायेगी। उसके अंदर की इंसानियत तो अभी मरी नहीं है।

उसी बीच बस एक बार फिर पूरे झटके के साथ रुकी थी— ओह ! उसके ही कार्यालय का भवन। आज तो बस में हुए हड़कंप में सफर के समय का पता ही नहीं चला।

अभी-अभी निकाले गये उस छोटे बटुए को पर्स में बंद कर वह भी शीघ्रता से उतर गयी थी और एक ही क्षण मे कार्यालय की ओर तेजी से बढते हुए न जाने कहां ओझल हो गयी।

यह निश्चित था कि बस दूसरे स्टॉपो पर भी रुकेगी। उस समय भी कुछ यात्री उतरेग और चद मिनटा मे ही महानगर की हा-हा-हूती में छाटे-छोटे बौनों की तरह न जाने कहा विलीन हा जायगे।

मातम

मां के अतिम सस्कार करने के बाद घर लौटते ही पापा अमेरिका ट्रंककाल मिलाने बैठ गये। सुधीर चाचा पिछले तीन साल से अमेरिका मे थे। पापा ने दादी-मा को बतलाया सुधीर परसो की फ्लाइट से दिल्ली पहुच रहा है।

कमरे के सामने वाले दालान मे दादी-मा को घेरे पडोस की दो चार औरतें अभी भी बैठी थी।

दादी-मां ने वही से चिल्लाकर पूछा सुधीर अकेले ही आ रहा है कि बाल बच्चे भी साथ मे होगे?

यह पता चलने पर कि सुधीर चाचा किरण चाची ऋचा और निधि के साथ दिल्ली पहुच रहे हैं दादी-मां कुछ अधिक तनकर बैठ गयीं।

उस समय घर का नौकर माधो बाहर बरामदे की धुलाई कर रहा था। दादी-मां ने इस बार उसी तरह चिल्लाकर माधो को आवाज दी देख माधो ! पीछे वाला कमरा जरूर धो देना। ऊपर से चारपाइयां उतारकर वहा बिस्तरों का भी इंतजाम कर देना। सुधीर और उसके बच्चे शोरगुल मे नीचे नहीं सो सकेगे।

वह दालान मे ही सामने के तख्त पर बैठी थी। मां का बीमारी से दमघोट चेहरा उसकी आखो के सामने से हटता ही नही। पिछले पांच साल से कैंसर की बीमारी ने मां को कितना जर्जर बना दिया था ! हड्डियो का ढाचा मात्र ! पर उस स्थिति मे भी मां की चेतना पूरी तरह लुंठित नही हुई। वह एक सचेत भाव से बराबर इधर-उधर देखती।

मरते समय भी तो वह ऐसे ही कुछ देख रही थी। मां आंखें फाड़-फाड़कर क्या देख रही थी? सभवत आखिरी समय मे वह अपने तीन वर्ष के छोटे लाडले मोनू को ही

दखन का प्रयास कर रही थी। मां की मृत्यु क समय घर के लोगों ने उसे पड़ोस के घर म भेज दिया था।

मोनू उसका छोटा भाई। पूरा नाम है मयंक। मां उसे दुलार से मानू पुकारती।

मोनू उससे ठीक चौदह वर्ष छोटा है। एक लबे अतराल के बाद हड्डी का ढाचा मात्र रह जाने वाले शरीर में उस जर्जर शक्ति के रह जाने पर भी अपनी कोख में इस बटे को पोषित करने क लिए मा ने निश्चय ही कर्मठता दिखलायी थी।

उन दिनों दादी-मां की यह शिकायत बहुत बढ चुकी थी कि उनका दो मंजिला मकान पोते की किलकारिया क बिना कितना सूना सूना लगता है! किरण तो दो लडकियां पैदा करके ही ऑपरेशन करा बैठी। फिर उसके कोई लडका होने या न होने से इस मकान में कौन-सी रौनक आ जायेगी? अब तो वह अमेरिका से लौटने वाली नहीं।

मां के लिए किये जाने वाला दादी-मां का सकेत बहुत ही कड़वा होता था—वह तीखा नि श्वास फेंकता इधर से तो पहले ही बहुत आशा नही थी। इसने तो चुपचाप ही न जाने क्या करा लिया। एक बेटी को जन्म देने के बाद पूरे तेरह वर्ष होने को आये अब तक कोई दूसरा गर्भ ही नही। और जो थोडी-बहुत आशा बची भी थी वह तो इस बीमारी से बिलकुल ही टूट गयी।

मां ने दादी-मा की नि श्वासों को और अधिक तीखा नहीं होने दिया था। एक दिन उसने यह घोषणा कर दी कि वह पुत्र जन्म देने जा रही है। दादी-मां की महत्त्वाकांक्षा के लिए बीमारी की उस अवस्था मे भी मां अपने कर्त्तव्य से पीछे नही हटी।

मा ने पूरी कर्मठता स मानू को जन्म दिया था। इसीलिए तो मानू मां का इतना दुलारा बेटा! जरा-सा ओझल हुआ नहीं कि मां कितना बेचैन हो उठती! आंखें फाड़ फाडकर उसे ढूंढने लगती।

माधा को आदेश देने के बाद दादी-मां की दृष्टि उसकी ओर उठी।

बेटा कल जमादार से पीछे वाला गुसलखाना ठीक से साफ करवा लेना। तू तो जानती ही है तेरे चाचा चाची की पहली शिकायत यहां के गुसलखानो को लेकर होती है।

उसे रोता देखकर दादी-मा कुछ बोली न हो ऐसा भी न था। पूरा स्नेह घोलते

हुए उन्होने उसे अपने पास बुलाया। अपने आचल से उसकी दोनों आंखें भी पोंछीं। आंसू दादी-मां के भी निकल आये थे। उन्हीं तप्त आंसुओं के साथ रुंधे कंठ से उन्होंने उसे समझाया बेटा दादी-मां तो अभी जिंदा है न!

उसकी बांहो मे गिरी दादी-मां की आंखो से निकली तपतपायी आंसू की बूंद ने उसके अन्दर मरती हुई जिजीविषा को फिर से जगा दिया। कुछ क्षणों के लिए वह उनकी गोद मे अपने मुंह को वैसे ही छिपा लेना चाहती थी जैसे उसके कमरे की दुछत्ती पर बने उस घासल में गौरैया का वह नन्हा बच्चा रोज शाम को दिन भर के बाद अपनी मां के लौटने पर ममत्व को फैलाते उसके कोमल पंखों में एक आतुरता के साथ छिपता ही जाता है।

पर एक ही क्षण में दादी-मां की समस्त चिंताओं में फिर से सुधीर चाचा प्रमुख हो उठे। उन्होंने अपनी बात फिर से दुहरा दी देख बेटा! गोदरेज की अलमारी में धुले हुए तौलिये रखे हैं उन्हें निकाल देना। सुधीर के बच्चे हम लोगों की तरह एक ही तौलिये से शरीर नहीं पोछते। उन्हें अलग-अलग तौलिये लगते हैं।

तीसरे दिन सुधीर चाचा ठीक समय पर घर पहुंच गये थे। सुधीर चाचा और किरण चाची दोनों ही डॉक्टर हैं। मां की बीमारी को वे अच्छी तरह जानते थे। उसके परिणामों के प्रति वे पूरी तरह आश्वस्त भी थे। इसीलिए मां की मृत्यु उन्हें बहुत सहज और जानी-बूझी लग रही थी।

आने के बाद दो घंटे तक चलने वाले उनके निरंतर वार्तालाप में वह उनके चेहरों पर किसी प्रकार की उदासीनता का भाव बहुत कोशिश करने पर भी खोज नही सकी।

चाचा और चाची पापा से केवल एक ही बात कहे जा रहे थे हम लोगों ने सविता भाभी को बचाने के लिए कोई कसर तो नहीं छोड़ी। पूरा पैसा खर्च किया। इसलिए अब यह तो पश्चात्ताप नहीं रहेगा कि हम लोग उनके लिए कुछ कर नहीं सके।

चाचा चाची की बातों में बार-बार उगल आने वाली अमेरिकन लहजे से आरोपित संवेदनाओं की दुर्गंध से पूरा कमरा घुटने-सा लगा था। उसमें वहां टिकने का और साहस नहीं रह गया। एक उबकाई-सी भरती वह कमरे से शीघ्र ही चली गयी।

दरअसल चाचा और चाची दोनों की ही बातें हमेशा से विशुद्ध तर्क भरी होती हैं। मां की बीमारी के दिनों में भी जब उनका दिल्ली में रहना बहुत आवश्यक था वे

लोग अमेरिका से आये सर्विस के प्रस्ताव को टाल नहीं सके। मां का जितनी गंभीर बीमारी थी उस स्थिति में घर में अपने ही दो-दो डॉक्टर हों और वे उपलब्ध न हो सकें संकट के समय दूर चल जायें पापा इस बात से काफी हताश हो आये थे। उनका आग्रह था कि वे दोनों मां की थोड़ी-सी तबियत संभलने के बाद ही अमेरिका जायें तो अच्छा होगा। पर चाचा चाची का बराबर यही कहना था जिंदगी में यदि आगे बढ़ना है तो जैसे ही कोई अवसर मिले हर बात को किनारे रखते हुए केवल उसकी ओर मूव करना चाहिए।

उन्होंने अमेरिका जाने के लिए एक बहुत बड़ा तर्क खोज लिया था। वे पापा से कहते सविता मामी की दवा के लिए जिस तरह से रुपया बहाना पड़ सकता है वह भारतवर्ष में आपकी इस छोटी-मोटी कमाई से संभव नहीं। हम लोगों के अमेरिका चले जाने से वह सहूलियत हो सकेगी।

और इस प्रकार चाचा चाची एक दिन पापा के ऊपर कृपा भाव को जतलाते हुए अमेरिका चले गये। वहां जाने के बाद चाचा का पापा के पास हर तीसरे चौथे महीने मनीऑर्डर आता रहा। पर पिछले तीन सालों में दूर-दूर तक बिखरी स्मृतियों को कुरेदने के बाद भी उसे यह याद नहीं आता कि चाचा-चाची ने मां की बीमारी को लेकर कभी उधर से कोई खत भी लिखा हो।

हां अमरिका जाने के कोई सात महीने बाद वे लोग एक बार दिल्ली आये अवश्य थे। पर वह भी दिन-रात सारे समय बाहर ही रहते। किसी सेमीनार में आये थे उसी में व्यस्त। एक सप्ताह बाद सेमीनार खत्म होते ही यह कहकर कि ऋचा और निधि अमेरिका में अकेले हैं—वे तुरंत लौट गये थे। इस अंतराल में वे मां के पास कभी ठीक से बैठे हों उसे यह भी याद नहीं।

मां की मृत्यु को लेकर एक दिन तक थोड़ी-बहुत औपचारिकता निभाने के बाद दूसरे दिन से ही चाचा चाची अब अपने पेशे पर उतर आये थे। सुबह होते ही दादी-मां के पूरे शरीर का निरीक्षण किया गया।

दादी-मा के पलंग के पास में पड़ी तिपाई पर बैठते हुए चाचा ने घोषणा की थी मां के अंदर खून की जिस तरह से कमी है यदि उसकी ओर ध्यान नहीं दिया गया तो घर में दूसरी आफत खड़ी हो सकती है।

पास में ही खड़े पापा को देखकर उन्हें भी बतलाया गया कि उनके शरीर में भी आयरन की बहुत कमी जान पड़ती है। आंखों के नीचे गड्ढे इसी कारण पड़ गये हैं। उन्हें भी अपनी खुराक का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

इसके बाद चाची का एक लंबा सभाषण हुआ। मूल विषय घर में बन रहे खाने-पीने की कमियो को लेकर था। इस सभाषण में अपना घर दादी-मां पापा मोनू और स्वय वह—यानी नीतू ही सम्मिलित नहीं रहे पूरा भारतवर्ष सम्मिलित हो चुका था। लबे समाषण का पूरा सार यही था कि इतने बड़े भारतवर्ष में कहीं भी खाने पीने पर ध्यान नहीं दिया जाता। हम लोग इस मामले मे बिलकुल अनभिज्ञ हैं।

पूरे एक घटे के बाद मां की मृत्यु को लेकर चलने वाली वह शोक-सभा समाप्त हो सकी। सभा क अत मे एक आवश्यक निर्णय लिया गया। अब से—जब तक किरण चाची दिल्ली मे रहगी घर में खाने-पीने की व्यवस्था अपनी देख-रेख मे वे स्वयं किया करेंगी। स्वास्थ्यवर्द्धक खाने की व्यवस्था के लिए इस घर म चाची के ज्ञान की कोई बराबरी नहीं कर सकता।

चाचा-चाची द्वारा हम सब लोगों के लिए एक और निदेश दिया जा चुका था। चाची का तो सख्त निर्देश था कि घर मे मां को लेकर कोई भी किसी तरह की बात नहीं करेगा। कारण यदि मोनू मां की बात सुनकर भड़क गया तो उस समालना मुश्किल हो जायेगा। मोनू के दिन दिमाग पर मा को लेकर किसी प्रकार का बोझ नहीं पडना चाहिए।

और मां को लेकर जब भी उसकी आखों मे आसू झलकने वे उसे बी नार्मल - बी नार्मल कहकर वही पर रोक दिया करतीं। यह निषेधाज्ञा बाहर आने वालों पर भी लग चुकी थी।

चाचा-चाची पापा को लेकर अक्सर ऊपर वाले कमरे मं ही बैठे रहते। वहां पापा को भी नार्मल रखने का पूरा प्रयास किया जाता। इस प्रयास में पापा स्वयं भी पूरी दिलचस्पी दिखाते। उन्हे राजनीति से प्रेम था। खूब राजनीति लड़ाते। बीच-बीच में किसी-किसी प्रसंग को लेकर कभी भड़कते भी।

मां की मृत्यु के तेरहवे दिन शाम को पगड़ी की रस्म थी। तेरह दिन तक पापा घर से नहीं निकले थे। उस दिन शाम को मदिर से लौटने के बाद उन्हे किसी क घर पैर पलटने जाना था। इससे पहले बड़े मामा ने पापा के सिर पर पगडी बाधकर रस्म अदा की।

बड़े मामा जब पापा के सिर पर पगड़ी बाध रहे थे सहसा उसकी आंखों में उमड़ आने वाला प्रवाह रोके नहीं रुका। वह फूट-फूटकर रोने लगी थी। वह कवल रो ही नहीं रही थी उसके मुंह से निरंतर अनायास ढंग से पापा पापा शब्द निकलता

जा रहा था। उस इस तरह बिलखता देखकर दालान में बैठे और लोगों की भी आखें नम हो आयी थीं। उस समय के उसके क्रंदन स तो किरण चाची के अन्दर के ऊसर रेगिस्तान मे भी पीड़ा का स्रोत प्रवाहित हो आया था।

बगल में बैठी बनारस वाली बुआ स उन्होंने कहा नीतू का गम तो देखा नहीं जाता। मां क बिना कैस रह सकेगी यह लड़की?

किरण चाची नही समझ सकी कि उस समय वह मां के लिए नहीं रो रही थी। वह स्वयं भी समझ नहीं सकी थी कि एकाएक वह इस तरह स क्यों बिखर पड़ी। वह स्वयं अपने लिए भी नहीं रो रही थी। संभवत उस समय एकाएक उसकी आंखों में उफन आये तालाब के पीछे उसके पापा का दुख था। निश्चय ही वह केवल अपने पापा के लिए कुछ सोचकर फूट पड़ी थी बेचारों की उम्र ही क्या है उनकी लड़की सत्रह वर्ष की हो गयी है तो क्या पिछले महीने ही तो उन्होंने केवल अड़तीस साल पूरे किये हैं।

दादी-मां न पापा का अपने बड़े बेटे का विवाह केवल इक्कीस वर्ष की ही अवस्था में कर दिया था। इतनी जल्दी बेटे का विवाह करने के पीछे उनकी कुछ विशेष विवशता थी।

एक दिन पडोस की किसी स्त्री से वार्तालाप के समय उनके मुंह स अनायास ही निकल गया था अब तो सुनील (पापा) बहुत सभल गया है। बाल-बच्चों के साथ अपनी गृहस्थी में फसा रहता है। पहले तो यह लड़का बहुत गैर जिम्मेदार कुछ फक्कड़-मस्त तबियत का हुआ करता था। अच्छा हुआ जल्दी विवाह कर दिया नहीं तो

उसे दादी-मां की यह बात बिलकुल भी अच्छी नहीं लगी। पापा तो सबका ध्यान रखते हैं। मम्मी का भी हम सबका भी—वे कैसे गैर-जिम्मेदार और फक्कड़ मस्त हो गये?—उसे दादी-मा से घृणा हो आयी थी।

इसीलिए तो उसे सबसे ज्यादा आश्चर्य उस दिन पापा को देखकर हुआ।

पापा मन्दिर में दर्शन करने के बाद तुरंत ही अपने पड़ोसी मित्र वर्मा अंकल के यहां चले गये थे। वर्मा अंकल का घर ठीक उनके घर के सामने था। उसके कमरे से उनका ड्राइंगरूम स्पष्ट दिखायी देता था। पापा सामने ही सोफे पर बैठे वर्मा अंकल से खुलकर बात कर रहे थे।

अब तक वर्मा आंटी पापा के लिए चाय बना लायी थीं। उनके हाथ से चाय का

प्याला पकड़ते समय पापा न जाने किस बात पर पहले मुस्कराये और फिर खुलकर हंस पड़े। उसे पडोसिन से कही गयी दादी-मां की बात पर विश्वास हो आया था। इस बार उसे पापा से घृणा हो आयी।

पापा की बड़ी बहन बनारस वाली बुआ मां के मरने के चौथे दिन ही आ गयी थीं। रिक्शे से उतरते ही उन्होने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया। दादी-मां ही उन्हें अपने कंधे का सहारा देकर अन्दर लायी थी। दालान तक आते-आते बुआ दादी-मां से कैसे लिपट गयी थीं। वह रो-रोकर कह रही थीं बुढ़ापे मे तुम्हे यह कैसा दुःख दे डाला भगवान ने! हाय रे! ये बच्चे कैसे पलेंगे? नीतू की तो कोई बात नहीं। चार दिन बाद अपने घर की हो जायेगी। पर मोनू? हाय राम!

इतना सब कुछ बुआ एक सांस मे कह गयी। पर मां को लेकर अभी तक उनके मुंह से एक शब्द नहीं निकल सका था। संभवत किरण चाची की तरह मां की मृत्यु के लिए बुआ भी पूरी तरह आश्वस्त थीं। उनके आने पर अंतर केवल इतना था कि बुआ की आंखें किरण चाची की तरह सूखी नही थी। वे अपनी धोती के पल्ले से आंखों के कोनों को बार-बार पोंछती जाती।

मोनू कहां है? अरे नीतू भी दिखायी नही देती—कहां चले गये दोनों?

अब तक बुआ का ध्यान घर के बच्चो पर जा चुका था और वे अपनी गोल-गोल आंखों को चारों तरफ इधर-उधर घुमाते हुए पूछ रही थी।

मोनू उस समय किरण चाची के बच्चों के साथ कहीं चला गया था और वह सामने वाले मां के कमरे मे थी। रवि कुछ सामान लेकर आया था। असल मे वह सब मां की ही तेरहवीं का था। इसीलिए उसने सोचा सारे सामान को अलमारी में अच्छी तरह लगाकर मां का काम पूरा करने के बाद ही बाहर निकलेगी। तुरंत बाहर निकलकर बुआ से न मिलने के पीछे उसकी मां के प्रति उमडी ममत्व के रूप में वह कर्त्तव्य भावना की विवशता ही थी।

वह किसी तरह जल्दी-जल्दी उस सारे सामान को अलमारी में रखने का प्रयास करने लगी। बस इसी अंतराल मे फिर से बुआ की आवाज सुनायी पड़ी अरे नीतू क्या कर रही है? क्या तुझे पता नहीं चला कि बुआ आ गयी है?

बुआ का स्वर काफी तेज था।

संभवत उन्होने दालान से उसे उस कमरे मे बैठे देख लिया था। वह मां के सामान को और जल्दी-जल्दी रखने का प्रयास करने लगी। जल्दी मे मां के सिगार के

लिए आयी आलत की शीशी नीचे गिर पड़ी। वह किसी तरह बिखरे हुए आलते को समेटकर बाहर निकलन का ही थी कि उससे पहल रवि कमरे से निकल पड़ा।

यह लड़का कौन है? —बुआ न रवि को घूरते हुए दादी-मां से पूछा।

पड़ोस का लड़का है। घर क काम-काज म बहुत मदद करता है। आजकल तो बाजार का सारा काम यही देखता है।

घर का काम करे या बाजार का—सयानी लड़की वाले घर म लडका का इस तरह आना जाना ठीक नहीं अरे नीतू अब तो तुझे फुर्सत मिल गयी होगी

दादी-मां को यह निर्देश देते हुए बिना किसी अतराल के उसी एक ही सांस मे बुआ ने उसे भी आवाज दे डाली।

बुआ का वह कर्कश स्वर जिन शकाओ और व्यंग्य को उगल रहा था उसे लगा कि उसमे न जाने कितने जहरीले कीडे एकसाथ तिलमिला आये हों ओफ ! कितनी शंकालु हैं बुआ—इस समय भी अपने स्वभाव को बदल न सकीं।

उसने यह निश्चय कर लिया—चाहे कुछ भी हो वह बुआ से मिलन नहीं आयेगी।

पर न जाने क्यों दूसरे ही क्षण उसके पैर एक स्वाभाविक गति से कमरे से बाहर निकल पडे। हां इस बीच उसन एक बार और यह निश्चय किया था कि यदि रवि को लेकर बुआ ने कुछ हगामा मचाया तो वह किसी भी प्रकार चुप नही रहेगी। सच पूछा जाये तो मा की बीमारी से लकर अब तक उसे यदि किसी न सच्चे दिल स सांत्वना पहुंचायी है तो वह रवि ही तो है। आखिर मा के मातम के लिए इन दिनों रोज राज खेले जाने वाले उन नाटकों में एक वही तो है जो किसी नाटक का पात्र नहीं है।

पिछल सालों स उस घर में रवि लगातार आता रहता था। उन दिनों एक दिन मां की हालत बहुत खराब हो गयी थी। पापा और दादी-मां डॉक्टर और दवाइयों की दौड़ धूप में लगे थे। और उधर उसके आंसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थ। वह चुपचाप किसी कमरे में छिपकर अन्दर स उफनती उष्मा को सुनकर बाहर निकाल दना चाहती थी।

उसकी इस वन्ना को रवि बहुत दर स दख रहा था। उसके कमरे में घुसन ही वह भी पीछे-पीछ चला आया। पैंट की जेब से रुमाल निकालकर उसन उसक आंसुओं

को पोंछा और पीठ को थपथपाते हुए कहने लगा इस तरह रोते नहीं । घबराने से क्या

रवि इससे आगे कुछ नहीं कह सका। उसका स्वयं का ही गला रुंध आया था। उसकी बड़ी-बड़ी आंखें बुरी तरह भर आयी थीं।

उसे लगा था ये रवि के आंसू नहीं बल्कि किन्हीं बरसाती बादलों ने आकर उसे चारों ओर से घेर लिया हो और अपनी तरल-वृष्टि से उसकी सारी ऊष्मा को शांत कर देना चाहते हों।

रवि जब-जब आता था उसके लिए ऐसी ही तरलता अपने साथ लेकर आता। अब तक उसके और रवि के बीच बस यही एक रिश्ता था।

वह बुआ के सामने खड़ी थी। अब तक माधो बुआ को चाय का गिलास थमा गया था। बुआ चाय पी रही थी। उसे सामने खड़ी देखकर भी वह कुछ बोलीं नहीं। पर चाय की घूंट की हर चुस्की के साथ बुआ के मुख-मंडल पर किसी तीखी प्रतिक्रिया के भाव उमड़ते जा रहे थे।

बुआ का वह तीखा मौनव्रत तोड़ने की हिम्मत उसने ही बटोरी बुआ चाय ठीक बनी है न? चीनी तो कम नहीं।

चाय तो ठीक है पर तेरे लक्षण ठीक नहीं लगते। देखो सत्रह-अठ्ठारह साल की होने को आयी हो ऐसा वैसा कदम न उठ जाये कि तेरी मां का कोई नाम धर सके।

कितना कर्कश स्वर था बुआ का! मानो अकस्मात् पहाड़ से किसी कोने में दबा दहकते हुए लावों को बिखरता कोई ज्वालामुखी फूट पड़ा हो।

बुआ मां की मृत्यु पर आयी थीं। और यह था ममत्व से बिलखते उसके मन के लिए संवेदनाओं और सहानुभूति के नाम पर बुआ का पहला संदेश। उसकी इच्छा हुई कि वह बुआ का मुंह नोच डाले और हाथ पकड़कर घर से बाहर निकाल दे। चिल्ला चिल्लाकर बुआ से कहे— बुआ तुम यहां मां की मृत्यु पर शोक मनाने आयी हो या कि परपंच रचने।

पर न जाने क्यों अंदर से उठे इतने विकराल झंझावात के समय भी वह जड़वत बनी खड़ी रह गयी—ठीक एक सन्नाटे की तरह!

उसे देखकर कोई भी अनुमान लगा सकता था कि उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है और वह मौन बनी बुआ से क्षमा-याचना कर रही है।

क्या हो गया था उसे उस समय? वह सोचती तो केवल इतना ही निष्कर्ष

निकाल पाती—संभवत यह उसकी जिंदगी का एक बहुत बड़ा समझ का क्षण था जिसकी गरिमा ने आकर उस चारों ओर से घेर लिया था। मां के सारे काम शांतिपूर्वक निपट जाने चाहिए। बुआ से कुछ बताने का परिणाम होगा—घर में एक भयंकर तूफान । बुआ जिस तरह से तूफान मचा सकती हैं—शायद कोई शक्ति उन्हें रोक नहीं सकेगी। जितने दिन बुआ रहेंगी घर उस तूफान के थपेड़ों से अशांत और उद्विग्न बना रहेगा।

तेरहवीं वाले दिन सुबह से ही ब्राह्मणी को खिलाने पिलाने की तैयारी शुरू हो गयी थी। दादी-मां मां का बक्सा खोल बैठी थीं और कपड़ों को उलट पुलट रही थीं। किरण चाची और बुआ भी उनके पास आकर बैठ गयी थीं।

दादी-मां उन दोनों से पूछ रही थीं तुम्हीं लोग बतलाओ इनमें से आज ब्राह्मणी को देने के लिए कौन-सी साड़ी ठीक रहेगी?

मां को वह साड़ी बहुत पसंद थी। दो वर्ष पहले ही उस लाल रंग की अमेरिकन जार्जेट की साड़ी पर उसने जरी तिल्ले का खूब भारी काम करवाया था।

पापा ने मां को टोका भी था क्या करोगी इतना भारी काम करवाकर? यह तो नयी ब्याही-दुल्हन की पहनने जैसी

पापा की बात पूरी भी न होने पायी थी कि मां बीच में ही सहज भाव से बोल उठी थी यही तो। अरे इसे अपने लिए नहीं बनवा रही हूं। नीतू के लिए है। सोचती हू अपने हाथ से ही उसके लिए जयमाला का एक जोड़ा तो सजा जाऊं।

बुआ का हाथ बार-बार उसी साड़ी पर जाता। वह उलट-पुलटकर उसी साड़ी को देखती।

साड़ी को देखकर किरण चाची ने भी कहा था बड़ी महंगी होगी ।

उसे मां के ममत्व ने एक बार फिर से घेर लिया और वह भी चुप न रह सकी मां ने यह साड़ी बड़े शौक से बनवायी थी। आज यही साड़ी ब्राह्मणी को पहनाना। वह तो मां बनकर आयगी न! सच मे मां खुश हो जायेगी।

दादी मां ने भी उसकी बात का समर्थन किया।

ठीक ही तो कहती है नीतू। सविता को यह साड़ी वास्तव में बहुत पसंद थी। बेचारी एक दिन भी इसे नही पहन सकी।

बुआ को सुबह से ही पान खाने की आदत थी और उस समय भी वह पान चबा रही थीं। उनके मुह में पीक भर आयी थी। कमरे के पास वाले वाश-बेसिन तक वे

गयी। पीक की पिचकारी मारती हुईं वहीं स कहने लगीं   अ म्मा यह साड़ी ब्राह्मणी को नहीं दी जायेगी। तुम्हारे फिर काम आयेगी।

दादी-मां का लगा शायद बुआ का संकेत उसकी आर है। उसी के अनुसार उन्होंन भी बुआ को तत्काल जवाब दिया   अरे नीतू के ब्याह म ता अभी चार-पाच साल बाकी हैं। कम-से-कम बी ए ता कराऊगी उसे। तब तक तो यह जरी भी काली पड़ जायगी।

अब तक बुआ कमरे में फिर से लौट आयी थी। वह दादी-मां के और नजदीक बैठ गयीं। इस बार वह दादी-मा के कान से मुंह सटाते हुए कुछ समझाने लगी   वही बलदेव राम की लड़की है न   अर बनारस वाल बलदेव   बिचारा बहुत परेशान है   लड़की पूरे पच्चीस की हा चली   जहा जाता है लड़के वालो की माग बहुत । पैसा है नहीं उसके पास। पद्रह दिन हुए वह घर पर आया था। कह रहा था अब तो कोई दुहजू भी हागा तो वह मान जायगा   बनारस जाकर मैं सुनील की बात उसकी लड़की स चलाऊगी।

किरण चाची ने भी धीरे स कहा था   इस तरह कुछ सोचना ता पडेगा ही अब। भाई साहब कब तक ऐसे बैठे रहगे?

उसे लगा था कमरे म कोई घातक विस्फोट हुआ हो।

मृत्यु के बाद मनुष्य कितनी जल्दी अस्तित्वहीन हा उठता है! उसकी अस्तित्वहीनता का अहसास कितना भयानक है! किसी भी मनुष्य की मृत्यु ससार के क्रमों को नहीं बन्लती। उसकी गतिविधियां ज्यों-की त्यों चलती रहती हैं। यहा तक कि अपने प्रिय स प्रिय व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी लाग जी लते हैं। और वे जीते ही नहीं कभी-कभी अधिक अच्छे ढग से जीते हैं।

उस घातक विस्फोट के दहकते हुए कण उसके हृदय का बघते हुए उसे बार-बार इस बात का—मानव नियति की इस घोर विडबना का—अनुभव करा रहे थे।

आक्रोश

उस दिन विश्वविद्यालय क उस विभाग क सामने जा आदालन हा रहा था वह कुछ विशेष मुन्दों को लेकर खड़ा हुआ था। छात्रो द्वारा लगाये जाने वाले जो नारे सुनायी पड रहे थे वे विश्वविद्यालय स्तर में जुड़ने वाल कुछ नये तजुबों का उदघाटन करते थे।

विभाग की गैलरी के दायीं आर के सबस किनारे वाले कमरे नबर 9 मे ठीक ग्यारह बजे कक्षा लगनी शुरु हुई और लगभग पन्द्रह-बीस मिनट के बाद ही एक के बाद एक छात्र मडकते हुए से कमरे से निकल पडे। कक्षा एम ए क छात्रा की थी। इन छात्रो की सख्या कोई पच्चीस के लगभग रही होगी।

कमरे से निकलकर ये छात्र ऊंचे ऊंचे स्वरों मे नारे लगाते हुए मूल रूप से तीन प्रकार की माग कर रहे थे। छात्रा की पहली माग थी

कक्षा मे गाली बकने वाले अध्यापक का तुरंत दडित किया जाये।

कक्षा मे पढाते समय अध्यापक अपने पाठ को अच्छी तरह से पढ़कर आये। वे अपने पाठ को भूले नही। यह छात्रा की दूसरी माग थी।

छात्रो की तीसरी माग अध्यापक की नियुक्ति की न्यायिक जाच का लकर की जा रही थी।

उस समय कमरा नबर-9 मे मणिनाथ की कक्षा चल रही थी। और यह आन्दोलन मुख्य रूप से उन्हीं के खिलाफ था। कक्षा म छात्र जिस तरह से भमके थे उन्हाने जिस तरह से मुटिठया तान ली थीं उससे मणिनाथ को यह स्पष्ट हो आया कि इस बार छात्र रुकने वाला नहीं।

इसीलिए मणिनाथ ने यह सोचा कि उनके लिए यह उचित हागा वे तुरत

जाकर प्रा भीमदेव को आज की घटना की सारी जानकारी कराये। उन्हे तत्काल चुपचाप कमरे के पिछले दरवाजे से निकलकर उनके यहा चल देना चाहिए।

प्रा भीमदेव उस विभाग क पिछले दो साल से अध्यक्ष थ। जिस दिन यह घटना हुई उनका स्वास्थ्य कुछ ठीक न था। व छुट्टी पर थे।

प्रा भीमदव का घर विश्वविद्यालय क कैंपस मे ही था। विभाग से वहा पहुचने म लगभग आधे घंटे का रास्ता तय करना पडता था।

मणिनाथ को उस समय एक-एक मिनट भारी हो आया था। उन्हाने जल्दी जल्दी चलाकर उस रास्ते को कम स कम समय मे पूरा करने की पूरी कोशिश की। आधे रास्ते का पूरा करन तक ही उनका भारी-भरकम थुलथुल शरीर बुरी तरह हापन लगा था। सासं धौकनी-सी चलन लगी। वे पैंट की जेब से रुमाल निकालत और माथे पर उभर आन वाले पसीने की तह को बार-बार पोछ दत।

मणिनाथ क अन्दर कुछ अजीब-सी बेचैनी हा रही थी। वे पूरी शक्ति के साथ इस विचार में लगे हुए थ कि इस बार आदोलन को किस प्रकार से दबाया जा सकता है?

व साच रह थे— प्रा भीमदव का इस मामले मे उनका साथ निश्चय ही दना चाहिए। यह आदोलन बहुत हद तक उनके भी खिलाफ है। मेरी नियुक्ति में उनका सीधा हाथ जो है।

जिस समय मणिनाथ प्रा भीमदव के यहा पहुच यह इत्तफाक था कि उनके ड्राइगरूम के दरवाजे अधखुल थे। वे वही एक कोने मे पड दीवान पर आराम कर रह थे।

मणिनाथ ने बिना कॉलबेल बजाये एक झटके स दरवाजा खोला और फिर बडी तजी से प्रा भीमदेव क दानो पैरों की ओर लपक पड़े। व सब कुछ कह देने क लिए बुरी तरह बेचैन थे। यह बेचैनी उनकी गुदगुदी माटी हथेलियो म उतरती जा रही थी। मणिनाथ प्रा भीमदेव क पैरों को एक विशेष दबाव के साथ जल्दी-जल्दी दबाने लग।

हथेलियो के इस दबाव क कारण प्रो भीमदेव स्वय ही समझ गये कि मणिनाथ फिर स परेशानी मं हैं। इसीलिए उन्हान स्वय ही कुछ पूछन की पहल की आज कक्षा नही थी क्या?

थी सर! पर आज वही हा-दसा

ता क्या फिर स कक्षा म गाली-गाली बक दी?

प्रो भीमदव क स्वर में कुछ तजी आ गयी थी और वे अपने चश्मे क अन्र स मणिनाथ का सन्ह मरी दृष्टि म घूर रहे थ।

पर म र आज तो कक्षा म बहुत पालाइट जनन की कोशिश की थी। उस पर भी ताड़क भड़क उठे। मरी नियुक्ति की जाच की फिर स माग कर रह हैं तगता है अब य चैन स नहीं रहन दग। स र इस बार ता आपका काई न काई उपा य ।

यह कहत कहते साप्टाग दण्डवत् की मुद्रा में मणिनाथ प्रो भीमदव क दाना चरणों को अपन माथे पर तगाकर उसी प्रकार गिड़गिड़ा उठे जैसे कि विश्वविद्या तय में अपनी नियुक्ति क समय वे गिड़गिड़ाय थे।

दरअसल मणिनाथ का पूरा कैरियर ही इसी प्रकार से गिड़गिड़ात हुए आग बढ़ा है। यद्यपि उन्हाने एम ए तक शिक्षा प्राप्त की है पर सब कुछ थर्ड डिविजन म। वह भी हर बार फाइनल परीक्षा के समय किसी-न किसी रूप मे दूसरा के सामने गिड़गिड़ाने के बाद ही हासिल हो सका। एम ए की परीक्षा में उनका एक पर्चा बुरी तरह बिगड़ा था। मणिनाथ ने पता लगा लिया था कि यह पेपर उनके ही विश्वविद्यालय क प्राध्यापक जाच रहे हैं। इन प्राध्यापक का उनके छात्र गुरुदेव कहकर सबाधित करते थे।

ता उस दिन से ही मणिनाथ ने गुरुदेव के यहां नियमित रूप से हाजिरी बजानी शुरू कर दी थी। मणिनाथ गुरुदेव के यहां सुबह ठीक आठ बजे दस्तक दे दते। गुरुदेव के घर पहुचने पर सबस पहले उनके मझले कद क दुब्ले पतले शरीर पर मालिश करत। गुरुदेव नहाने चले जाते तो उधर मणिनाथ उनका धोती-कुर्ता प्रस करन तगते। इसके बाद उनके काल रग की पशावरी सैडिल को आखिर तक इतना रगड़ते रहत जब तक कि वह शीशे की तरह चमक न जाती।

मणिनाथ में अध्ययन को लेकर कभी कोई रुचि देखन का ही नहीं मिली। विश्वविद्यालय म जब स नियुक्त हुए हैं वहां की मेन लाइब्रेरी मे कभी किसी न उन्हें पैर रखते हुए नहीं देखा। खाली समय में वे अपने छात्रों से पढ़ने पढ़ाने की बात कम इधर-उधर की बात अधिक करते यानी किस व्यवसाय में पैसा अधिक है किसमें कम।

उन्हाने अपनी पत्नी के नाम लाइफ इंश्योरेंस की एक एजेंसी ले रखी है। अपने छात्रा का व अक्सर लाइफ इंश्योरेंस की अलग-अलग स्कीमा क गुण-दाष भी

समझाते रहते।

सिनेमा की बातें करना भी उन्हें बहुत पसंद था। पुराने जमाने के हातिमताई जल-परी उड़न तश्तरी जैसे सिनेमा उन्हें वास्तव में बहुत अच्छे लगते। उन्हें दु:ख इस बात का था कि आजकल ऐसे सिनेमा क्यों नहीं बनाए जाते।

मणिनाथ के पिता की अपनी इकलौती संतान को लेकर सबसे बड़ी आकांक्षा थी कि उनका बेटा अच्छे नंबरों से एम. ए., पी एच डी. करके विश्वविद्यालय न सही किसी कॉलेज में लेक्चरर हो जाये। पर लाचारी। पुत्र के लक्षणों को देखकर उन्होंने होम मिनिस्टरी के एक विभाग में ही उसे एक क्लार्क की नौकरी दिलवाकर संतोष कर लिया।

होम मिनिस्टरी में कुछ दिन काम करने के बाद मणिनाथ को एक दिन लगा—जिस लाइन को पिता जी उनके कैरियर के लिए चुनना चाहते थे वह वास्तव में बहुत अच्छी थी। क्लर्की की इस घिसी पिटी नौकरी में रखा ही क्या है? हर रोज फाइलों का बोझ। और ऊपर से आये दिन बॉस की डांट-फटकार

उधर कॉलेज और विश्वविद्यालय में अध्यापक चाहें तो कितना मजा लूट सकते हैं। और फिर आये दिन कभी छात्रों की तो कभी स्वयं अध्यापकों की हड़ताल

मणिनाथ ने एक दिन निश्चय कर लिया—कुछ भी हो होम-मिनिस्टरी की यह घिसी पिटी नौकरी वे अवश्य छोड़ देंगे। और अब कॉलेज की बात तो दूर अपने महानगर के उस नये खुले विश्वविद्यालय में ही पढ़ाने का काम करेंगे। ऑक्सफोर्ड स्तर के कहलाये जाने वाले उस विश्वविद्यालय में नौकरी पाने के लिए उनके पास कोई कैरियर नहीं तो कोई हर्ज नहीं। उनके पास कुछ और बातें तो उससे भी बढ़कर हैं।

मणिनाथ मन ही-मन प्रसन्न हो रहे थे—विश्वविद्यालय के उस विभाग के अध्यक्ष को करीब से उनके एक एक गुणों को जानता हूं। अध्यक्ष महोदय बड़े भारी विद्वान हैं तो क्या—खुशामद पसंदी में तो अव्वल दर्जे के हैं। उनके बार-बार चरण छूने का कुछ तो असर होगा ही।

यह सब सोचकर एक दिन मणिनाथ प्रो. भीमदेव के यहां पहुंचे थे। उनका प्रस्ताव सुनते ही पहले तो प्रो. भीमदेव निश्चय ही अवाक् रह गये। कुछ कह सकने के लिए उनका मुंह खुला का-खुला रह गया। पर फिर कुछ समझाते हुए से बोले थर्ड डिविजन के साथ उच्चस्तरीय विश्वविद्यालय में नौकरी कैसे मिल सकती है

मणिनाथ ! विश्वविद्यालय में पढ़ाने के लिए पी-एच डी न सही तो कम-से-कम प्रथम दर्जे में एम ए तो होना ही चाहिए। और फिर तुम्हारे पास कहीं पढ़ाने का अनुभव भी नहीं। यह भी होता तो कुछ सोचा जा सकता था।

यह सब सुनते समय मणिनाथ के नथुने एक दो बार फूले अवश्य थे पर उनकी नि श्वास-प्रक्रिया सामान्य गति से चल रही थी। संभवत वे पूरी तरह आश्वस्त थे कि जो बात उनके स्वयं के पास है प्रो भीमदेव को वे सब अन्य उम्मीदवारों में कहां मिलने वाली हैं? एक बार अपने विभाग में उन्हें नियुक्त करके तो देखें—ऐसा तर कर दूंगा ऐसी सेवा करूंगा कि अध्यक्ष महोदय धन्य हो उठेंगे। यह सब करने में मैं तनिक भी पीछे नहीं

यह सब सोचते हुए मणिनाथ के अंदर आत्म स्तुति इस प्रकार उमड़ आयी थी कि वे उसके प्रवाह में एकाएक उठे और प्रो भीमदेव के दोनों चरणों को अपने मस्तक में लगाकर बुरी तरह गिड़गिड़ाने लगे आप यही सोचते हैं कि मुझे कहीं पढ़ाने का कोई अनुभव नहीं। पर और बहुत-से अनुभव तो हैं मेरे पास पिछले तीन साल से होम मिनिस्टरी के कागज पत्तर देख रहा हूं। आपके विभाग के सारे कागजाती कामकाज मैं देख लिया करूंगा। मेरे होते हुए आपको किसी पर्सनल सेक्रेटरी की जरूरत नहीं पड़ेगी सर और भी बहुत सी बातें पर्सनल होती हैं। वाराणसी में आपके गुरुदेव का मकान मैंने ही बनवाया था। आपके मकान बनवाने में भी मदद कर सकता हूं। आजकल सीमेंट की बड़ी किच किच है सर यह तो एक बड़ी बात है। रोज-रोज आपकी सेवा करने में भी पीछे नहीं रहने वाला। घर का राशन पानी साग-सब्जी लाने की ड्यूटी अब से मेरे जिम्मे समझिए सर !

मणिनाथ ये सारी बातें एक सांस में कह गये थे। आत्म स्तुति का प्रवाह प्रबल वेग पर जो था। अंतिम वाक्य पर पहुंचने तक तो वह अश्रुधारा में परिणत हो अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था।

अब तक मणिनाथ रोते हुए कुछ घिघियाने से लगे। भावावेश में स्पष्ट रूप से बात कहने में असमर्थ हो प्रो भीमदेव के दोनों चरणों को बार-बार उठाते और अपने मस्तक से लगा लेते।

विश्वविद्यालय के उस सत्र में अनेक विभागों में नये प्राध्यापकों के साथ उस विभाग में मणिनाथ की भी नियुक्ति हो चुकी थी। विश्वविद्यालय में नियमित रूप से कक्षाएं लगने का सिलसिला शुरू होने जा रहा था। इसीलिए सभी विभागों में वर्ष के पाठ्यक्रम

आदि का लेकर प्राध्यापका की मीटिंग बुलायी जा रही थी। उस विभाग म भी इसी उद्देश्य से मीटिंग बुलायी गयी थी। मीटिंग में प्राध्यापकों का आवश्यक निर्देश दिये गये। प्रो भीमदेव ने मणिनाथ को रोककर कुछ अ ाग से निर्देश दिये थ

मणिनाथ ! यह ता तुम जानते ही हा कि तुम्हारी नियुक्ति म मैने स्पष्ट रूप स पक्षपात किया है और यदि तुम एक याग्य प्राध्यापक सिद्ध न हुए ता इससे मरी बहुत बदनामी होगी।

प्रा भीमदव ने मणिनाथ को समझाते हुए कुछ विशष हिदायतं भी दीं

मुख्य बात ता यह है कि बात-बात मे जो तुम घिघियाने जैसा भाव चहरे पर लाते हो अब उसे छाड़ना होगा। अपन अदर आत्मविश्वास पैदा करो। इसलिए कक्षा म हर समय एक दार्शनिक मुद्रा बनाय रखन का तुम्हें प्रयास करना हागा जिससे तुम्हारे छात्रा का यह न पता चलने पाये कि तुम्ह किसी प्रकार का पढाने का तजुर्बा नही या तुम कक्षा में पहली बार पढ़ा रह हा।

प्रा भीमदेव की इन हिदायतां क बाद मणिनाथ न भी निश्चय कर लिया कि वे किसी न किसी तरह दार्शनिक मुद्रा के साथ ही कक्षा म पढ़ाने का प्रयास करेंग जिससे उनक पूरे व्यक्तित्व स आत्मविश्वास जैसा कुछ टपकता रहे। ऐस प्रयास से एक बार कक्षा को प्रभावित कर लिया तो बस

मणिनाथ की यह पहली कक्षा थी। कक्षा मे लगभग सभी लड़क उपस्थित थे। मणिनाथ ने पढाना शुरू किया। दस मिनट के बाद ही पीछे की सीट पर बैठे लडका म से किसी न कोई प्रश्न पूछ लिया था। पहल तो मणिनाथ ने यू ही चलत फिरते ढग से प्रश्न का उत्तर दने का प्रयास किया पर जब लडको न उसका और स्पष्ट विश्लेषण चाहा तो मणिनाथ गहरे असमंजस मं पड गये थे। दिमाग पर बहुत जोर डालने पर भी उन्हे कोई उत्तर समझ मे नही आ रहा था। उनके मस्तिष्क मं एक तनाव सा उभरने लगा। माथे की नस फूलकर कुछ उभर सी आयी थी। लगातार पसीने के कारण चश्मा फिसलता जा रहा था। वे उसे बार-बार पाछत और पहनने का प्रयास करते। मणिनाथ अपन ऊपर मन ही मन बुरी तरह झुझला रह थे।

थाडी सी भी पुस्तक दखने की आन्त हाती तो इस सहज से प्रश्न का उत्तर द न डाला हाता!

मणिनाथ रह-रहकर झुझलाते रहे। अत मं हार खाकर वे छात्रों के सामने बुरी तरह घिघिया उठे क्या करू ! मुझे माफ करना। आज का पाठ तो मै भूल

ही गया।

पर तत्काल ही उन्हें कुछ याद आ गया था। यह कक्षा में पढ़ाया जाने वाला पाठ नहीं प्रो भीमदेव की हिदायतें—उनकी स्मृति में अचानक उभर आयी थीं। अब वे मन ही-मन पछता रहे थे— ओफ यह क्या गलती कर डाली ! छात्रों पर अपना गलत प्रभाव क्यों डाल रहा हूं ! कक्षा में मुझे इस तरह घिघियाना नहीं चाहिए। दार्शनिक मुद्रा में छात्रों से कुछ न-कुछ कहते रहना है

इसी के साथ मणिनाथ बड़ी शीघ्रता से तनकर सीधे खड़े हो गये। फिर कुछ सोचते हुए से कक्षा की छत की ओर एकटक देखने लगे। इस प्रकार उन्होंने कुछ ऐसी दार्शनिक मुद्रा बनाने की चेष्टा की ताकि उनके छात्र यह समझें कि वे प्रश्न के सही उत्तर के लिए गंभीरता से चिंतन कर रहे हैं।

कुछ क्षणों के बाद जब उन्होंने निगाहें नीची की तो छात्रों की सभी सीटें खाली हो चुकी थीं। कक्षा में चारों ओर नीरवता लोट रही थी।

इसके बाद पूरे एक हफ्ते तक मणिनाथ की कोई कक्षा नहीं हुई। दस दिन के बाद उनकी दूसरी कक्षा लगी। संयोग से उस दिन भी कक्षा में सभी छात्र आये थे। लगभग दस मिनट के बाद मणिनाथ ने कुछ सोचते हुए प्रवेश किया था।

वे सोच रहे थे—प्रो भीमदेव ने कक्षा में पढ़ाने की जो हिदायतें दी हैं वे तो ठीक हैं लेकिन आज वे अपने अनुभवों का प्रयोग करते हुए पढ़ाने का प्रयास करेंगे। आदमी के लिए उसके अपने तजुर्बों और अनुभवों की बात ही कुछ और होती है। उसका लाभ भी तो उसे उठाना चाहिए।

होम मिनिस्टरी में मणिनाथ ने पूरे तीन साल तक काम किया था। अक्सर उन्हें कभी फाइलों के बोझ तो कभी बॉस के बात-बात पर दिये जाने वाले निर्देशों पर झुंझलाना पड़ जाता था। मणिनाथ का विश्वास था कि कभी-कभी शिष्ट भाषा से भी अधिक उसके गर्हनीय प्रयोगों में बड़ी शक्ति होती है। कुछ अवसरों पर इनके प्रयोगों से मन को बड़ी शांति मिलती है। सभी कार्य पूर्ववत् होने लगते हैं। इनके माध्यम से दिमाग से एक बार झुंझलाहट निकली नहीं कि काम की गति स्वयं ही रफ्तार पकड़ लेती है।

इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि इस बार वे कक्षा में अपने ऐसे ही अनुभवों का प्रयोग करके देखेंगे।

मणिनाथ के कक्षा में घुसते ही छात्रों ने आग्रह किया कि वे फिर से वही पाठ पढ़ायें जिसे वे अपनी पिछली कक्षा में पूरा नहीं कर सके थे।

मणिनाथ ने छात्रों का आग्रह मानकर फिर से वही पाठ पढ़ाना शुरू किया था। पर इस बार तो तीन-चार वाक्यों के बाद ही उसी पिछली सीट से आवाज उठी और कक्षा में भेद गयी। मणिनाथ से ठीक वही प्रश्न पूछा गया था।

यह वही लड़का है झबरीले बालों वाला। शरारत करने पर तुला है साला ।

पहले मणिनाथ मन ही-मन बुदबुदाये फिर वे अपने अनुभवों से मुखरित हो लड़के को स्पष्ट रूप से सबोधित कर कहने लगे सा ले शरारत करने पर तुले गये हो। ऐसा ठीक करू-गा

मणिनाथ का वाक्य पूरा होने भी न पाया था कि पिछली सीट का वह छात्र अपनी सीट पर पूरा तनकर खड़ा होकर बहुत आवेश म आ गया आप गाली क्यों बक रहे हैं सर ?

गाली कहां बकी है? इसे तुम गाली कहते हो? लगता है तुमने कभी गालिया नही सुनीं

आपका मतलब क्या है सर?

अब तक कुछ और छात्र भी आवेश मं आ गये थ।

मतलब मतलब अभी समझाता हू

इतना कहते हुए मणिनाथ ने इस बार अपने पूर्व अनुभवों की सभी मर्यादाओं को पूरे मनोयोग से समेटने की कोशिश की हरामजादो ! हिंदुस्तान मे तुम लोगों को कुछ करने को नही तो निकल पड़े हो बी ए एम ए करने के लिए। और फिर यहां आकर अध्यापकों को तग करते हो। कमी नो ।

अगल वाक्य में मणिनाथ समवत अपने अनुभवों की मर्यादा का प्रदर्शन कुछ और भी अधिक दिखाना चाहते पर तब तक पूरी कक्षा सम्मिलित स्वर में गुर्रा उठी थी

गाली बकने वाले अध्यापक को बर्खास्त किया जाये !

छात्र यहां अध्यापकों की गालियां सुनने नही आते !

हमारी अपनी प्रतिष्ठा है।

इस प्रकार गुर्राते हुए ये सभी लड़के एक-एक करके कक्षा से निकल आये थे और एक अजीब शोर-शराबे में मणिनाथ की वह कक्षा भी समाप्त हो गयी।

पर उस दिन विभागाध्यक्ष ने इस मामले को तुरंत संभाल लिया। वास्तविकता यह थी कि यह सब कुछ उन्होने केवल मणिनाथ के लिए नहीं बल्कि अपना ध्यान

रखते हुए भी किया था।

यह सच है कि मणिनाथ की नियुक्ति में प्रो भीमदेव का सीधा हाथ था। इसे विभाग का एक एक आदमी जानता है कि तीन वर्ष का कॉलेज में पढ़ाने का अनुभव प्राप्त और प्रथम श्रेणी मे एम ए पी-एच डी किये हुए उस योग्य उम्मीदवार को छोड़कर मणिनाथ की नियुक्ति की जिद उन्होंने ही की थी।

उस समय इस मुददे को लेकर चुनाव-समिति में काफी तू-तू मै-मै भी हुई थी। एक-दूसरे को डराया धमकाया भी गया था। आखिर में एक दूसरे की इसी प्रकार कमजोरियों को उघाड़ते और परस्पर पगड़ी उछालते हुए मणिनाथ की नियुक्ति हो गयी थी।

मणिनाथ की ही कक्षा के कुछ छात्रा ने तो शुरू मे ही इस नियुक्ति को लेकर एक आदोलन भी खड़ा करना चाहा था पर न जाने क्यो वह सब उस समय दब-सा गया।

भीमदेव सोच रहे थे—वास्तव में इनमें से कुछ छात्र तो पूरे लौह पुरुष हैं। गलत बातो के आगे बिलकुल नही झुकने वाले। उन्हें इस मामल को किसी प्रकार बड़ी होशियारी से संभाल लना चाहिए।

भीमदेव ने तत्काल विभागीय अध्यापकों तथा छात्रों की अलग-अलग मीटिंग बुलाने के आदेश निकाल दिये थे।

विभागीय प्राध्यापकों की उस मीटिंग में प्रो भीमदेव ने पहले सभी को अच्छी तरह समझाया कि वे कक्षा में अधिक से-अधिक पोलाइट रहने की कोशिश करें।

इसके बाद उन्होंने मणिनाथ को विशेष रूप से समझाया था

आज का छात्र अधिक चैतन्य है। उसे अपनी मान मर्यादा का पूरा खयाल है। उसे जितना प्यार-दुलार उसकी भावनाओं को सम्मान देते हुए किसी बात को समझाया जा सकता है उतना डांट फटकार अथवा गाली-गलौच से नहीं।

विभाग के ही दो चार अन्य प्राध्यापकों के उदाहरण देते हुए मणिनाथ को यह भी समझाया कि वे अपने ही विभाग के डॉ सिंह डॉ पांडे से कुछ आदर्श सीखें। वे अपने छात्रों के लिए कितने कर्मठ और उनके कितने शुभ चिंतक हैं!

विभागीय मीटिंग के बाद प्रो भीमदेव ने उस कक्षा के छात्रों की भी तुरंत मीटिंग बुलायी और उन्हें भी समझाने की कोशिश की

मेरे पुत्रो! मैं तुम्हारी पूरी इज्जत करता हूं। तुम लाग वास्तव में गौरवशाली

व्यक्तित्व वाले हो। ऐसे व्यक्तित्व की रक्षा करना हमारा धर्म है। मणिनाथ की कक्षा में जो कुछ हुआ है उससे तुम्हारे सम्मान को निश्चय ही ठेस पहुंची है। जो भी तुम्हारा अपमान करता है उसे दंड मिलना ही चाहिए पर जो व्यक्ति अपनी गलती का इस प्रकार स्वीकार रहा है उसके प्रति इस समय कोई अनुशासन की कार्रवाई करना स्वयं कोई नीति नहीं जान पडती। हां भविष्य में ऐसे मामलों को लेकर किसी को भी क्षमा नहीं किया जायेगा।

और उस दिन मणिनाथ की यह तीसरी कक्षा थी। उस दिन की मीटिंग क बाद वे कई बार मन मं यह दोहरा चुके हैं—वे अब कक्षा में किसी प्रकार का तनाव पैदा नहीं होने देंगे। कुल मिलाकर पूरे पोलाइट बने रहेंग। छात्रों को जतला देंगे कि उस दिन कक्षा मे जो कुछ हुआ था वह उनके मूड न ठीक होने के कारण ही वास्तविकता तो यह कि वे बहुत ही सीधे-सादे सहज आदमी हैं।

इसीलिए उस दिन कक्षा मे कुछ पढ़ाने से पहले उन्होंने अपने सीधे-सादे व्यक्तित्व की ओर छात्रों का ध्यान खीचना चाहा। मणिनाथ ने कक्षा में जाते ही अपने छात्रों से सीधे यह प्रश्न किया जानते हो अध्यापक कितने प्रकार के होते है?

उनके मुंह से इस प्रकार का अप्रत्याशित सवाल सुनकर पूरी कक्षा म एक औत्सुक्य जाग पड़ा था।

मणिनाथ को लगा आज वे निश्चय ही छात्रों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहे हैं। उन्होने मुंह पर कुछ मुस्कराने का प्रयास किया। होंठों को मुंह के दोनों कोनों तक खीचते हुए वे छात्रों को पुचकारने लगे बतलाओ बतलाओ मेरे लाडलो ! सुनकर बतलाओ अध्यापक कितने प्रकार के होते हैं?

मणिनाथ की इस तरह की बातें सुनकर संभवत छात्रों को अब वास्तव में आनद आ रहा था। कक्षा में एक औत्सुक्य से भरा सम्मिलित स्वर तत्परता के साथ सुनायी पडा स-र आप ही बतलाइए। आप तो स्वयं अध्यापक हैं। उत्तर गहराई से दे सकेंगे।

छात्रों की अपने प्रति यह श्रद्धा देखकर मणिनाथ कक्षा मे अपनी सफरलता को लेकर और भी आश्वस्त हो उठे। उनकी सहजता और बढ गयी। अपने गोल चश्मे से छात्रों की आंखों में झांकते हुए पूरी क्लोजअप की प्रक्रिया में उन्होंने अध्यापकों की श्रेणियां गिनानी शुरू की थीं अध्यापक चार प्रकार के हाते हैं—यानी पहली श्रेणी में वे अध्यापक आते है जो पढ़ते और लिखते दोनों हैं। और दूसरी श्रेणी उन अध्यापकों

की होती है जो पढते ता हैं—पर लिखते बिलकुल नहीं मणिनाथ छात्रों को जितना यह सब समझाते जाते उनका स्वर विनम्रता से भरकर उतना ही लड़ियाता जाता।

मणिनाथ के इस विश्लेषण के बीच में ही कुछ छात्रों का सम्मिलित स्वर एक बार फिर से गूज उठा था आज का पाठ निश्चय ही रुचिकर है आज तो आप

मणिनाथ भी गदगद और आवेश में थे। छात्रों के स्वर में स्वर मिलाते हुए व भी कहने लगे निश्चय ही। आज का पाठ वाकई रुचिकर है। आगे सुना तो तुम लोगों को और आनंद आयेगा तो अध्यापकों की अगली यानी तीसरी श्रेणी में वे अध्यापक आते हैं जो लिखते तो खूब हैं पर पढ़ते बिलकुल नहीं मणिनाथ और लड़ियाये।

मणिनाथ ने अध्यापकों की ये तीनों श्रेणियां बड़ी सहजता के साथ गिनायी थीं, पर चौथी श्रेणी तक आते-आते वे अकस्मात् रुक गये। अब वे लड़ियाये नहीं बल्कि खीसें निपोरकर हंसने लगे। वह केवल इतना ही कह सके और अध्यापकों की चौथी श्रेणी— खि-खि-खि ।

कक्षा में एक बार फिर छात्रों का औत्सुक्य भरा स्वर सुनायी पड़ा। कुछ छात्र निवेदन कर रहे थे सर! इतन दिलचस्प विश्लेषण के समय रुकिये नहीं चौथी श्रेणी भी बताइए सर!

पर अब तक कक्षा के कुछ छात्र थोड़ा उखड़ने भी लगे थे। उन्होंने अपने साथियों को समझाया था अध्यापकों की चौथी श्रेणी क्या होगी? तुम लोग सोच नहीं सकते। बकवास में तुम लोगों को क्या आनद आ रहा है?

निवेदन करने वाले छात्रों ने इन छात्रों को तत्काल शांत कर दिया था या-र चुप भी रहो। सर के ही मुंह से जरा सुनने दो अध्यापकों की चौथी श्रेणी।

अब फिर कुछ सम्मिलित स्वर थे हां हां सर! अपना वक्तव्य जारी रखिए। अच्छा तो यह है कि इस बार कुछ उदाहरण देकर भी समझाइए।

इस बीच उस किनारे वाली सीट से एक अन्य स्वर भी पूरी तत्परता से आया था सर यदि उन्हारण आप न दे सकें तो मैं दे दूं? बिलकुल साकार प्रत्यक्ष उदाहरण ।

इस स्वर के साथ ही कक्षा में अकस्मात जोरों का ठहाका गूंज गया था। सभी छात्रों ने इस वाक्य में निहित अंतर्बोध का आनंद लूटा था।

पर मणिनाथ तो पूरे भावावेश मे आ चुके थे। उन्हें लग रहा था कि वे कक्षा में एक उन्मुक्त वातावरण के निर्माण में पूरे सफल हुए हैं।

उन्होने अपनी वाणी में छात्रों के लिए और गहरा प्रेम भाव भरने की कोशिश की मेरे लाडलो ' इतने आतुर क्यो हो रहे हो? सब कुछ समझाऊंगा। सोदाहरण बिलकुल नि सकोच होकर ।'

मणिनाथ ने एक बार फिर अपने गाल चश्मे से पूरे क्लोजअप की प्रक्रिया से छात्रों की आंखों में झांका

तो चौथी श्रेणी उन अध्यापकों की होती है जो न पढते हैं और न ही कभी लिखते हैं। ऐसा समझ लो—बिलकुल निर्लिप्त जिन्हें कुछ लेना-देना नहीं। सरल सीधे-सादे सहज-सा व्यक्तित्व और उदाहरण—दूर नहीं तुम सबके सामने प्रस्तुत है यानी

मणिनाथ बुरी तरह से लड़िया उठे मुझ जैसे अध्यापक। स्वयं—यह सीधा-सादा बंदा

अध्यापकों की चौथी श्रेणी का इस प्रकार विश्लेषण करने के साथ ही मणिनाथ केवल लडियाय ही नहीं थे। उन्होंने एक बार फिर अपने मोटे होंठ मुंह के दोनों कोनों तक खींच लिये थे। अब वे उसी तरह हंस रहे थे—खिं खिं खिं

खिं-खिं-खिं ।—इस प्रकार लगातार खिं-खिं-खिं करने में मणिनाथ को पता नहीं चल पाया था कि वे क्या कर रहे हैं? वे स्वयं के ऊपर हंस रहे हैं अथवा वे छात्रों के सामने एक बार फिर से घिघियाने-से लगे हैं।

कुछ भी हो मणिनाथ को पूरी उम्मीद थी कि उनको इस तरह देख-सुनकर उनके छात्र एक बार फिर ठहाका अवश्य लगायेंगे। पूरा कमरा ठहाकों से गूंज उठेगा। ठहाकों की गूंज दूर-दूर तक सुनायी पड़ेगी।

पर इस बार उन छात्रों ने ठहाका नहीं लगाया। सभी छात्रों ने अपनी मुट्ठियां कसकर तान ली थीं।

एक पीढ़ी अपने भविष्य को इस प्रकार बर्बाद होने से बचाने के लिए भभक उठी।

सन्नाटे मे

उस दिन कॉलेज पहुंचने मं उसे कुछ देर हो गयी। कक्षा में छात्राएं एकत्र हो गयी होंगी और दस पन्द्ह मिनट तक उसकी प्रतीक्षा करने के बाद वे सभी तितर-बितर होकर कॉलेज की बिल्डिंग में फैल जायंगी—यह सोचते हुए वह अपनी कक्षा की ओर जल्दी-जल्दी कन्म बढ़ाने लगी।

कॉलेज के गेट के दायीं ओर बन उस लंबे बरामदे के बीच वाले कमरे मं ही उसकी कक्षा लगती है। वह अभी वहां तक पहुंचने भी न पायी थी कि इसी बीच बरामदे के उस पार खड़ी मिसेज चड्ढा ने जोर से आवाज दी मिस कुकरेजा पहले इधर आइएगा।

वहां मिसज चड्ढा अकेली नहीं थीं। उनके साथ स्टाफ के कुछ अन्य लोग भी थे। वे सभी गंभीर मुद्रा में खड़े थे। सभी एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करते दीख रहे थे। एक सहयोगी उसकी कक्षा की ओर बार-बार कुछ इंगित-सा कर रही थी।

सहयोगियों को इस प्रकार खड़े हुए दखकर मन मं शंका गहराने लगी। उसकी अनुपस्थिति मे कक्षा मे कोई गड़बड़ी तो नहीं हो गयी? फिर से किसी छात्रा ने कोई नया हंगामा तो नही खड़ा कर दिया?

पिछले दिनों ही इसी कक्षा की एक छात्रा के घर से भाग जाने की एक खबर ने कुछ ऐसा ही माहौल पैदा कर दिया था। चार दिन के बाद पता चला कि वह लड़की पड़ोस के ही किसी लड़के के साथ घूम फिर कर वापस आ चुकी है। पर अभी तक वह कॉलेज मं उपस्थित नहीं हुई।

प्रिंसिपल के साथ अक्सर इस बात को लेकर बहस होती रही है कि अब उस

छात्रा को कॉलेज में रखा जायेगा अथवा नही। बहस के दौरान इस बात का ही पलड़ा भारी रहता गलती तो किसी भी व्यक्ति से हो सकती है और फिर यह तो कच्ची उम्र का तकाजा है।

इसी संबंध में कल ही हुई स्टाफ मीटिंग में यह स्पष्ट रूप से निर्णय लिया गया था— उस छात्रा के आने पर उसे कक्षा में सामान्य छात्रा की तरह ही बैठने दिया जायेगा।

मीटिंग के समय मिनिट-रजिस्टर में उसने ही तो विस्तार से लिखा था

कॉलेज में पहुचत पहुचते छात्राओं की अवस्था लगभग अठारह को अवश्य छूने लगती है। इस अवस्था का मनोविज्ञान अपने लिए जिन बातो की मांग करता है उनके लिए अलग से समय न तो आजकल के अभिभावकों के पास होता है और न ही अध्यापकों के पास। इसलिए ऐसी किसी गलती के लिए केवल छात्र-छात्राएं ही जिम्मेदार नहीं। और फिर मुख्य बात तो यह है कि ऐसी गलतियों के समय उनका मनोविज्ञान सहानुभूति और समझाने-बुझान की अधिक मांग करता है। इसलिए उस छात्रा के आने पर कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही न करक उसे सामान्य छात्रा की तरह कक्षा में बैठने दिया जायगा।

उसे एक क्षण के लिए लगा—कहीं वही भागने वाली छात्रा तो लौटकर नहीं आ गयी है?—इसी उत्सुकता में उसन भी वहीं से पूछा क्या हुआ? क्या वह लड़की वापस आ गयी?

अरे यहां तो एक नया बखड़ा खडा हो गया है। जरा जल्दी आइए। मिसेज चड्ढा ने ही उत्तर दिया।

वह और तेज चलन लगी। अभी-अभी मन में फिर आने वाली उत्सुकता शकाओ में बदलती जाती—मिसेज चड्ढा इतना क्यों परेशान हैं?

समवत उसकी आवाज सुनकर उसकी कक्षा की कुछ छात्राएं भी बाहर निकल आयी थीं। वे सभी घबराई हुई थीं। एक छात्रा उसे कुछ जल्दी-जल्दी बतला देना चाहती थी मैडम रजीता

रजीता क्या हुआ उस?

नही नहीं मर गयी बचारी

रंजीता परसों तक तो कॉलेज में आयी थी। कल ही तो केवल नही आयी। परसों तक तो वह बिलकुल ठीक थी। कैसे हुआ यह सब ?

उसे रंजीता की इस अकस्मात मृत्यु पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह यह सब इतने आश्वस्त ढंग से कह गयी मानो परसों अथवा कल तक ठीक रहने वाला व्यक्ति आज या कभी मर ही नहीं सकता।

वह अपनी कही गयी बात की निस्सारता का अनुभव कर ही रही थी कि मिसेज चड्ढा की आवाज एक बार फिर बेध गयी छात्राओं से बाद में बात करिएगा। इधर आइए सब कुछ पता लग जायगा।

उन दिनों मिसेज चड्ढा कॉलेज की एक्टिव प्रिंसिपल के रूप में काम कर रही थीं। इसलिए कॉलेज के अनुशासन से सबंधित जरा जरा-सी बातों को लेकर वे अक्सर घबरा जाती थीं। वह जितना ही उनके निकट पहुंचती जाती उनके चेहरे पर उभर आये घबराहट के लक्षण और भी प्रखर जान पड़ते। उसे यह निश्चय हो आया—रंजीता की मृत्यु की बात कुछ अधिक गंभीर है। उसने और अधिक तेज चलने का प्रयास किया।

वह उनके पास तक पहुंचने भी न पायी थी कि मिसेज चड्ढा अब आदेश के तौर पर बतलाने लगीं अपने रजिस्टर में रंजीता की उम्र आदि का सारा ब्यौरा नोट करके रखिए। पुलिस कभी भी यहां इंक्वायरी के लिए आ सकती है।

आखिर बात क्या है? कुछ विस्तार से बतलाइए तो सही।

तुम्हारी कक्षा की रंजीता की लाश यहीं झूमरी महल के पास एक तालाब में मिली है।

यह आत्महत्या तो नहीं? उसका स्वर भी घबड़ा आया।

आत्महत्या नहीं। सुनोगी तो जी दहल जायेगा। रैप जैसा मामला लगता है। बदमाशों ने लाश को तालाब में फेंकने की कोशिश की थी पर वह तो अच्छा हुआ कि पूरी लाश तालाब में डूब नहीं सका। न जाने कैसे उसके पैर मुंडेर पर लटके रह गये।

मिसेज चड्ढा ये सारी बातें एक सांस में बतला गयीं। वह भी संवादहीन बनी सारी बातों को सुनती रही—बिलकुल स्तब्ध-सी। उसके मन में उपजी शंकाएं और गहरा आयीं। रंजीता की दुर्घटना का क्या कारण हो सकता है? कैसे हुआ यह सब?

पिछले दिनों रंजीता कॉलेज की हर गतिविधियों में भाग लेने के लिए उत्सुक जान पड़ती थी। इसके लिए देर-सबेर वह कहीं भी जाने को तैयार रहती। कहीं उसका इस प्रकार एक्टिव होना तो उसकी दुर्घटना का कारण नहीं बन गया? देर-सबेर लौटते

समय कहीं गुंडां ने

उसके दिमाग में रंजीता को लेकर एक के बाद एक बात ताजा हो आयीं।

पिछले वर्ष ही रजीता ने उसके कॉलेज मे प्रवेश लिया था। वह एक सामान्य परिवार की लड़की थी। कॉलेज के आसपास बिखर जाने वाली तग गलियां म उसका घर है। वह एक विनम्र दीखन वाली लड़की थी

प्रारंभ में रंजीता सादगीपसंद लड़की जान पड़ती थी किंतु वह देख रही थी कि पिछल दिनां से उस सरल-सादी दिखने वाली लड़की में एक विशेष परिवर्तन आता जा रहा था। अब वह कुछ चटक-मटक कपडे पहनने लगी थी। कानां मे रोज-रोज बदल जाने वाले इयर-रिंग। कुछ-कुछ मकअप भी

उसकी कई बार इच्छा भी हुई थी कि वह रंजीता स पूछे कि आजकल ये सब परिवर्तन क्यों? पर एक छात्रा से यह प्रश्न पूछना उतना सरल नही। आजकल के छात्र छात्राएं कपड़े-पोशाक की बाता को निजी मामला समझते हैं। इसमें किसी की दखलदाजी उन्हें पसद नहीं। इसीलिए उसने भी इसे रजीता का निजी मामला समझकर उस पर कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की।

आध घटे बाद ही रंजीता की मृत्यु पर एक शोक-सभा करके कॉलेज की छुटटी कर दी गयी। सभी कक्षाओं की छात्राएं लगभग जा चुकी थी। लकिन उसकी कक्षा म अभी भी छात्राओ की भीड़ इकट्ठा थी। सभवत ये छात्राएं रजीता की मृत्यु की बाते कर रही थीं।

उसने सोचा—कुछ और करने से पहले उसे अपनी कक्षा मे ही जाना चाहिए। रंजीता की इस दुर्घटना का कोई-न-कोई संकेत कक्षा की छात्राओ का अवश्य पता हागा। ममता तो रजीता की घनिष्ठ मित्र है। कक्षा की पिछली सीट पर दोनो एकसाथ ही बैठा करती थीं। कम-से-कम ममता तो रजीता की सारी बातों को विस्तार से जानती हागी।

कक्षा मे प्रवेश करने पर उस दिन छात्राओं के शोर ने उसके कानों का नहीं बेंधा। कक्षा म सर्वत्र एक उदासी-सी फैली हुई थी। उस दिन उसके और छात्राओ के बीच गुड मॉर्निंग मॉर्निंग के माध्यम से अभिवादन और स्नेह के रिश्ते भी नहीं जुड़े। उसके कक्षा में प्रवेश करने पर सभी छात्राएं केवल चुपचाप खड़ी हो गयीं।

उसी ने कक्षा में फैले उस मौन को भंग किया ममता कहां है?

मैडम ! वह नहीं आयी। अब वह भी नहीं पढ़ेगी। —एक कोने से आवाज

आयी। यह रंजीता और ममता के ही पास बैठने वाली एक अन्य छात्रा है।

पर क्यो?

परसों रात में अचानक ही उसके पिता जी ने उसे उसके मामा के यहां अलीगढ भेज दिया है।

रंजीता की तो वह अच्छी मित्र थी!

हा दोनों साथ-साथ शाम को नौकरी भी करने जाती थीं।

नौकरी? कैसी नौकरी?

पता नहीं मैडम! पर दोनों मिलकर किसी नौकरी पर जाती थीं। कभी-कभी देर से भी लौटती। अब हम क्या कह सकते हैं?

उस छात्रा के यह सब बतलाते समय कक्षा की अन्य छात्राएं भी बिलकुल चुप नही थीं। अनेक छात्राएं परस्पर कान-से-कान सटाये हुए कुछ-न-कुछ बोलती जातीं। जहां तक वह समझ सकी—छात्राओं की उस फुसफुसाहट का विषय रंजीता की मृत्यु नहीं बल्कि रंजीता और ममता की शाम के समय की नौकरी से अधिक था। छात्राओं के बनते बिगड़ते मुह के भाव दोनों की नौकरी को लेकर अजीब-सी वितृष्णा उगल रहे थे। छात्रा के मुंह से नौकरी की बात सुनकर उसका मन भी तो कुछ ऐसे ही घृणा से भर उठा है

तो क्या उन दोनों ने कुछ वैसा ही धंधा और क्या तभी रंजीता और ममता की यह तड़क भड़क नयी नयी पोशाकें? और क्या इसलिए रंजीता की मृत्यु के बाद भयभीत हो ममता के पिता ने अपनी बेटी को मामा के यहां भेज दिया तो क्या यह सब सच हो सकता है?

वह चाहती तो इन सब बातों की पूरी जानकारी छात्राओं से प्राप्त कर सकती थी पर उसने कक्षा के सामने इन सबकी पूछताछ करना उचित नहीं समझा। अन्दर से एक अजीब वितृष्णा और बोझ का अनुभव करते हुए वह बाहर निकल आयी।

स्टाफ-रूम में अभी सभी अध्यापिकाएं रुकी हुई थीं। वे सभी रंजीता की दुर्घटना को लेकर काफी चिंतित थीं। उसकी दुर्घटना को लेकर उनमें एक गहरी बहस छिड़ी हुई थी। बहस के दौरान बातचीत बार-बार आजकल के सिनेमा वीडियो फैशन और ड्रग्स आदि के सन्दर्भों से जाकर जुड़ जाती।

उसे मिसेज वर्मा की बात ने जो प्राय ही कम पर काम की बात करती हैं सबसे अधिक प्रभावित किया। वे बार-बार बहस को कालेज के आसपास की तंग गलियों से जोड़कर अपनी बात पर जोर देना चाहतीं। इसी बीच उन्होंने उस तंग गली

में रहने वाली एक छात्रा के रहस्य का उदघाटन भी किया।

कुछ याद करते हुए वे बतला रही थीं जानती हो यह बात मैने आज तक छिपाये रखी। प्रसंग आने पर जबरन मुंह से निकल रही है। सुनीता को तुम सभी जानते हो। पिछले से पिछले वर्ष इस कॉलेज की छात्रा थी वह। उन दिनों सुनीता दिन-पर दिन गुम-सुम रहने लगी थी। उस इस तरह देखकर मैने उसस एक दिन पूछ ही लिया था— क्या बात है आजकल इतना सुस्त क्यों रहने लगी हो? क्या स्वास्थ्य ठीक नहीं है? —मेरा इतना पूछते ही उसकी आंखों में आसू छलछला आये मानो वह इस प्रकार की सहानुभूति के लिए ही प्रतीक्षा कर रही हो ! फिर क्या था वह फूट-फूटकर खूब रोयी। उसने रो-रोकर सब कुछ बतला दिया। गलत रास्ते को अपना लिया था उसने। छोटी-छाटी चीजो के लालच मात्र से। गरीब तो थी बेचारी। बाद मे लड़के उससे जबरदस्ती करने लगे। मना करने पर मारने की धमकी देते।

उसके मां-बाप को पता था यह सब? किसी ने उत्सुक्ता दिखलायी।'

पहले नही बहुत बाद में उन्हें इसका पता चला। मेरी आत्मीयता पाकर यह बात उसने मेरे द्वारा ही उन तक पहुंचायी थी।

फिर पुलिस को रिपोर्ट की उन लोगो ने?

संभवत नहीं। बदनामी से जो डरते थे।

और वे लड़के थे कहां के? सुनीता ने कुछ बतलाया?

कहती थी यहीं आसपास की गलियों के ही थे।

अब सुनीता कहां है?

पता नहीं। सुना है उसके पिता का कही दूसरे शहर में ट्रांसफर हो गया है। वे सब सपरिवार वहां चले गय हैं।

मिसेज वर्मा की बात सुनकर सब स्तब्ध थे। वह स्वयं भी स्तब्ध। पर उसने मिसेज वर्मा की बात को पूरी तरह आत्मसात् भी किया था। जितना अधिक वह मिसेज वर्मा की बात को समझने की कोशिश करती उसका मन किसी गहरे तूफान में डूबता जाता—यदि उसने उन दिनों रंजीता के अदर एकाएक विकसित होने वाले परिवर्तनों को गभीरता से लिया होता तो शायद वह भी उसे कोई रास्ता दिखा सकती थी। पहनना ओढ़ना उसका निजी मामला था तो क्या हुआ दिशा निर्देशन तो वह कर ही सकती थी। छोटों की कई बाते निजी होते हुए भी बड़ों को उनके लिए ध्यान तो रखना ही पड़ता है। उनको लेकर कुछ तो कर्त्तव्य बनता ही है।

उसी समय कॉलेज का चपरासी दौड़ता हुआ स्टाफ-रूम में घुसा था। वह कुछ समाचार लेकर आया था मैडम जुलूस!

कैसा जुलूस? एक सम्मिलित स्वर स्टाफ-रूम में गूंज उठा।

उन्हीं लड़कों का चपरासी पहले से ही उत्तेजित था उसकी उत्तजना और बढ़ती जा रही थी।

कौन-स लड़के? —फिर वही सम्मिलित स्वर!

उन्हीं लड़कों का जिन्होंने रजीता का पूरे आठ लड़के थे। यहीं के। झुमरी-महल की पहाड़ी के पीछे सब कुछ हुआ। वे सभी पकड़ लिये गये हैं। गली-गली म घुमाये जा रहे हैं।

चपरासी की बात सुनकर व सभी गट की ओर दौड़ पड़ीं। सड़क पर दो पुलिस कान्स्टेबलों के साथ आठ लडको को सड़क पर घुमाया जा रहा था। सभी के हाथ मे हथकड़ी थी। लड़कों के सिर शरम क मारे झुके जा रहे थे।

सड़क पर अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठा हो गयी थी। इधर-उधर बने मकानों क छज्जों पर भी कौतूहलवश लोग खड़े थे। लड़कों को देखकर सभी अवाक् से दिखते। सभी आँखें फाड़े उन लड़कों को देख रहे थे।

वह और कॉलेज की सभी अध्यापिकाएं स्वयं भी उन लड़कों को देखकर जितनी स्तब्ध रह गयी थी सभवत रजीता की मृत्यु से भी उतनी नहीं। एक तो वे सभी लडके बहुत बड़े नहीं थे। वे केवल अटठारह से बाइस के बीच की उम्र से अधिक नही जान पड़ते थे। दूसरे वे सभी पडोस के ही कॉलेज के छात्र थे।

उन सबके समीप ही चपरासी खड़ा था और वह स्वयं ही उन लड़कों के बारे मे बतला रहा था पड़ास के कॉलेज के हैं सब। कॉलेज में तो हंगामा मचा हुआ है। सुबह स पुलिस आयी है। सुनते हैं यह घटना कॉलेज के समय दिन में ही हो गयी थी। कॉलेज के प्रिंसिपल तो बहुत ही परेशान हैं।

चपरासी बहुत-सी सूचनाएं बटोर लाया था और वह उन्हें एक-एक करक बतला देना चाहता था सुना है इस मुहल्ले में एक गैंग है। वह यह सब धंधा करता है। थोड़े थाड़े रुपये मे लड़कियां खरीदी जाती हैं और फिर दुगने तिगुने पैसां में और कहीं भेज दी जाती हैं। ये लड़के उसी गैंग से मिले थे—लड़कियों को फुसलाने का काम यही करते थ। इसके लिए इन लड़कों की भी बंधी तन्ख्वाह होती है।

चपरासी लगातार बोले जा रहा था पिछले दिनों एक महिला की लाश भी यहीं के झुमरी महल के खंडहरों में मिली थी। कहते हैं लाश पंद्रह दिन से वहां सड़ रही थी।

यह तो जब आसपास दुर्गंध फैली तब कही जाकर बात की तहकीकात की गयी। आश्चर्य की बात तो यह है कि लाश का पता लगाने फिर भी वहां कोई नही पहुंचा।

वे सभी पूरी तरह मौन हो चपरासी की बातें सुन रही थी—बिना किसी प्रत्युत्तर के। बहुत प्रयास करने पर भी उनकी इंद्रियां कुछ भी साचने के लिए तत्पर नही।

ऐसी शिथिलता की स्थिति मे उसका माथा भी भारी हो आया था। वह घर लौट जाना चाहती थी। कभी-कभी शरीर में घिर आनेवाले ऐसे भारीपन मे उसे पूरे आराम की आवश्यकता होती है। मिसेज चड्ढा को रंजीता की आवश्यक सूचनाएं देने के बाद उनसे घर लौट जाने का आग्रह करके वह जल्दी-जल्दी बस स्टॉप की ओर चल पड़ी।

पड़ोसी कॉलेज के लड़कों से आज तो बस पहले से भरी नहीं होगी। इतनी बडी दुर्घटना के बाद आज तो उनके कॉलेज में अनुशासन की कार्यवाही निश्चय ही कड़ी कर दी गयी होगी। आज लड़के—दूसरे-तीसरे पीरियड में भाग नहीं सके होंगे। —यह सोचते हुए उसे यह आश्वासन हो आया था कि वह बस में आज निश्चय ही बैठने की सीट पा सकेगी। सिर के भारीपन के समय उसका रास्ता बैठकर आराम से कट सकेगा।

बस-स्टॉप पर पहुचते ही उसका यह आश्वासन एक गहरे सन्नाटे में बदल गया। उस सन्नाटे में जिसमें उसने अपने साथ एक पूरी पीढ़ी को डूबता अनुभव किया था। बस में रोज की तरह स ही पड़ोसी कॉलेज के लडकों की भीड़ पहले से ही जमा हो चुकी थी।

परिवर्तन

किशन अपने गाव पूरे चार साल के बाद जा रहा है। इस बार गाव से आये उस पडोसी युवक ने उसकी संवेदनाओं को ऐसा झंझोरा कि वहां जाने से वह स्वयं को रोक नहीं सका।

पर इस बार भी वह गांव में अधिक टिकने वाला नहीं। हर बार की तरह जल्दी ही लौटने की कोशिश करेगा। आखिर उसे गांव में गांव के उस घर म मिलता ही क्या है जिसके लिए वह वहां रुके? कुछ भी तो नयापन नहीं ! कही ताजगी नहीं कोई परिवर्तन नहीं। उसके पच्चीस साल पूरे होने को आये जब से होश सभाला है हर बात का वही पुराना ढर्रा।

गाव की ओर बढ़ती हुई बस ने रफ्तार और पकड़ ली। किशन के अंदर भी एक प्रवाह उमड आया। आंखों के सामने घृणा को उगलते हुए गांव के एक-के-बाद-एक दृश्य तिरने लगे

उसके गांव की वे गलियां पैर रखते ही उबकाई उपजाती गंध भिनभिनाती मक्खियां उसकी गली के बच्चे आज भी अपन घरों के सामने बनी खुली नालियां में ही मल-मूत्र त्यागते हैं अपन बचपन में वह भी इन्हीं नालियों में मल-मूत्र किया करता था पेट में गुड़गुड़ाहट होते ही भागता हुआ आता और जाधिये का नाड़ा खाल इन्हीं नालियों पर बैठ जाता मन में न कोई शर्म न लिहाज ऐसे कोई सस्कार ही नहीं।

और गांव का रहन-सहन उसके अपन घर का ही स्तर दूसरों पर दीन-हीन प्रभाव डाल जाता है घर पर जब भी जाओ पिता जी लाल गमछा पहने दरवाजे पर तत्पर मिलेंगे दरवाजे पर पड़ी वह टूटी खटिया आज तक हट नहीं सकी इसी

खटिया पर बैठे पिता जी हर समय पड़ोसियों स बतियात रहते कैसे मैं-मैं करके बोलते हैं आवाज में जरा-सी भी शालीनता नहीं गांव में कथा बाचते-बाचते मानो गला भी फट गया।

और मां? उसका भी वही पुराना दर्रा हर समय मैली-कुचैली धोती पहने चूल्हा चौका बासन से छुट्टी ही नहीं गीली लकड़ियां को फूंक-फूंककर उसकी आंख कितनी खराब हो चुकी हैं सामन खड़ा आदमी भी तो उसे ठीक स दिखलायी नहीं पड़ता।

बस की उस सीट के कोने मे बैठा हुआ किशन स्वयं में ही बुरी तरह खीजने लगा

दुनिया कहां की कहा पहुंच रही है पर उसका गांव और घर वही का वहीं कोई परिवर्तन नही गाव के लोग उसके मां-बाप कितने घार पुराण पंथी पिछली बार ही जब वह घर गया था तो मां के लिए कितन शौक से बत्तियों वाला स्टाव खरीदकर ले गया। मां को कितना समझाया—अब वह चूल्हे में हर समय गीली लकड़ियां फूंकना बंद कर दे कभी-कभी स्टोव पर भी खाना बनाना सीखे स्टोव चूल्हे से भी अच्छा काम करगा—पर मां?—उसने उसकी बात ही नहीं सुनी

उसका तो वही दकियानूसी प्रतिवाद— ब्राह्मणां का घर और स्टोव पर खाना। छि छि छि । न जाने किसका छिया छिड़का तेल भरा होगा इसमे।

पिता जी भी चुप नही रहे थोथा ब्राह्मणत्व उनमें भी भमक उठा था डांटते हुए बोले— अब शहर जाकर तुम तो मलेच्छ बन ही गय। होटलों में इधर-उधर खाते-पीते डालत रहते हा। पर इस घर की पवित्रता तो खंडित मत करो। यहां मलेच्छों की तरह कुछ नहीं होगा। ब्राह्मण का घर चूल्हे-लकडी का खाना ही विशुद्व।

अब तक किशन की आखों में स्वयं भी कुछ भमकने लगा। मां-बाप के इन्हीं पुराणपंथी विचारों ने ही तो उसकी छाटी बहन बसंती की जिंदगी तबाह कर दी—उसे न पढ़ाया न लिखाया। तर्क यह था —स्त्री का कर्तव्य उसकी घर-गृहस्थी है उसे पढ़ने लिखने से क्या मतलब? चौदह वर्ष की अल्पायु मं ही बहन का विवाह भी हा गया।

इस बार मुख्य रूप से पिता जी का तर्क था— कन्या के ऋतु स्राव प्रारंभ होने के बा॰ जो पिता उसे अपने घर में रखे रहता है वह धर्म-विरोधी है।

फिर बहन के लिये वर की तलाश में भी पिता जी का अल्प-दृष्टिकोण उस लंबी चोटी वाले ब्राह्मण से अधिक कोई और वर ढूंढ ही न सका। पर पिता जी ने तो ऐसे वर को ढूंढ कर कोई बड़ी उपलब्धि पा ली थी। वर की स्तुति का गान दिन रात गाते रहते— ऐसा-वैसा लड़का नहीं देवी का तो परम भक्त बीस वर्ष की अवस्था में ही बड़ी बड़ी विद्या सीख ली है उसने देवी के नाम पर बड़े-बड़े चमत्कार दिखाता है

बहन के विवाह के केवल डेढ़ महीने बाद ही पिता के इस देवी भक्त चमत्कारी दामाद ने सचमुच ऐसा चमत्कार दिखाया कि एक दिन एकाएक कहीं गायब हो गया। पूरे छह साल हो गये आज तक लौटकर नहीं आया। कहते हैं साधु-सन्यासी बनकर कहीं भाग गया है अपने चमत्कार दिखाता हुआ लोगों को ठगता फिरता है। धूर्त-पाखंडी कहीं का ! बहन ससुराल में पूरे साल भर तक प्रतीक्षा करती रही। एक दिन ससुराल वाले हारकर उसे हमेशा के लिए मायके छोड़ गये। अब मां-बाप के भी उस घिसे पिटे घर में उसकी जिंदगी तबाह

किशन के विचारों ने कुछ करवट ली। अब वह गांव मां-बाप और अपनी छोटी बहन के बारे में नहीं सोच रहा। उसके अंदर स्वयं के प्रति सहानुभूति उमड़ आयी— अच्छा हुआ वह थोड़ा प्रयास करके पढ़ लिखकर किसी तरह गांव छोड़ आया नहीं तो वहां के दमघोटू वातावरण में उसकी भी बहन की ही तरह दुर्गति होती।

बस एक झटके के साथ एकाएक रुक गयी। शीशगंज है। इस लाइन पर आने वाला सबसे बड़ा गांव। बस की प्रतीक्षा में अच्छी-खासी भीड़ जमा है। किशन भी अपने अंदर उमड़ते आ रहे उस प्रवाह को एक झटका दे कुछ और प्रयास करने लगा। उसने बगल में रखे अपने बैग को एक ओर खिसकाते हुए सीट पर कुछ अधिक खुलकर बैठने की कोशिश की। मन में वितृष्णा भर आयी—शहर के लोगों से कितने गंवार दीखते हैं ये गांव के लोग ! उठने-बैठने का भी कोई सलीका नहीं। अभी बस में घुसते ही हड़कंप मचा देंगे। जरा-सी भी जगह दीखी नहीं कि उसमें घुसते चले जायगे। कपड़े और शरीर इतने गंदे कि कई बार तो पास बैठे आदमी के शरीर की दुर्गंध सही भी नहीं जाती।

देखते ही-देखते नीचे खड़े लोगों की भीड़ बस में बुरी तरह टूट पड़ी। अपने साथ लाये सामान—कनस्तर गठरी डलिया टोकरी की धर-पटक करते हुए वे लोग जहां स्थान देखते उधर लपक उठते। उसके सामने वाली सीट पर से अभी-अभी एक

यात्री उतरा था वह आदमी तेजी से लपका और पसरते हुए वहां बैठ गया। गंदी धोती और कुर्ता पहने तथा सिर पर भी एक गंदा चियडा-सा कपड़ा लपेटे वह आदमी—बुच्च देहाती ' पीछे आ रही अपनी स्त्री को चिल्ला चिल्ला कर बुला रहा है जल्दी-जल्दी आय जाही। ई हू जगह गंवाय का है का ।

एकदम दुर्बल-सी दीखने वाली उसकी स्त्री तीन बच्चों के साथ है। बच्चों की उम्र छह महीन से चार साल क बीच। स्त्री के भी वस्त्र निहायत गंदे और बदबूदार मानो महीनों स लगातार वह वही धाती ब्लाउज पहन रही है और उन्हे कभी धाया न गया हा। तीनां बच्च भी उसी तरह मैले-कुचैले दुबले पतले अस्वस्थ से। किशन के आसपास वास्तव म एक तीखी दुर्गंध फैल गयी।

स्त्री के पहुंचत हा वह आदमी उठ खड़ा हुआ। स्त्री भी उस सीट पर पसरते हुए बैठ गयी। उसका छोटा बच्चा गाद म है। अन्य दानां बच्च भी उसस बुरी तरह चिपटते जा रहे हैं। वे उसे इधर-उधर घेरकर खड़ हो गये। बड़े बच्चे के दोनो हाथ सभवत खुजली के पीले-पील दाना से भमद आये हैं। उसके बाद वाले ढाई साल के बच्चे की दायी आख फूली हुई कुप्पा एकदम लाल।

किशन मन ही-मन बुन्बुदाया— दरिद्र गंवार कहीं क ' खान पहनने की व्यवस्था ठीक से है नहीं और बच्चा हर साल एक '

गोद वाला बच्चा मां से सभल नही रहा। वह छटपटाता सा अधिक रोने लगा। स्त्री ने अपने ब्लाउज म लगे सीप क कुछ बटनों को खोला और अपना दायां स्तन खीचत हुए बच्चे क मुह मं ठूंस दिया। बच्चा जबर्दस्ती चिचोरत हुए च प च प करन लगा।

इस बार किशन भी सहज बना उस स्त्री को देखता ही रह गया कैसी हाती हैं गांव की स्त्रियां काई शर्म लिहाज नही '

स्त्री के पास खड़ वे दोनों बच्च भी शात नहीं। रिरियाते हुए से मां से और अधिक चिपटते जाते। बडा बच्चा बार-बार कभी दाय तो कभी बायें हाथ को खुजला रहा है। उसक हाथों मं संभवत तकलीफ अधिक हाने लगी है। अब वह खुलकर रोने लगा।

स्त्री पास मं खड़ पति के ऊपर झुझला पड़ी। बच्चे की ओर सकेत करती हुई बोली दाना पिराय रहा है। अब सभालत काहे नाहीं? हम किन किन का संभालीं?

पर बाप ने बच्चे को न अपने पास बुलाया और न ही किसी प्रकार सभाला। वह

उल्टे स्त्री पर झुंझलाने लगा ताहका कितनी बेर समझावा जब बचवा मूते तो ऊ की धारा में हाथ लगाय दिया कर। बचवा केर आपन मूत दुई चार बार पड़ी तो दाना खुद ही पराय जाई। पर तोहार बुद्धि तो मिरिस्ट। कछू समात नाहीं। बाप और झुंझला उठा। वह दूसरे बच्चे की ओर सकेत करने लगा और ई बचवा की अखिया मा'-ही ऊका थूक कितनी बार लगावा गवा। अब तलक दुई चार बार थूक लगाय दिया होता तो ऊ-की सूजन पराय न गयी हाती!

इस बार स्त्री ने तत्काल अपन पति के निर्देश का पालन किया। उसने अपनी गंदी उगलियां बच्चे के मुह में डाल दीं। थूक का एक बुक्का खींचकर उसे बच्चे की आख पर मलने लगी।

बाप अब और अधिक नहीं झुंझलाया। अब वह कुछ समझान की सी आवाज में जोर-जोर से कहने लगा अरे आदमी के खुद के थूक-मूत में बडा-बडा गुण। बड़ी-बड़ी बीमारी का अचूक इलाज ।

संभवत वह बुच्च-देहाती आदमी अपनी स्त्री को ही नहीं अपने इस ज्ञान से आसपास के लोगों को भी प्रभावित करना चाहता है पर किशन का मन अपने गाव की गली में फैली दुर्गंध जैसी उबकाई से एक बार फिर भर आया— कितने घिनौने हैं य लोग! शरीर कपड़ों से भी गदे और इनकी बातचीत भी एक मितली उपजाती हुई।

सामने की सीट पर ये दोनों यात्री बहुत पहले से बैठे हैं। समवत मित्र हैं और कुछ दिनों के बाद मिल रहे हैं। एक-दूसरे को नयी-नयी सूचनाएं देते हुए बातचीत में मग्न। उतने गवार नहीं दीखते। साफ सुथरे भी हैं। भाषा भी पूरी देहाती नहीं। किशन उन्हें सुनने लगा।

उस आदमी ने अपने मित्र को एक और सूचना दी तुमने कुछ सुना अपने राघ लाल के बड़ लड़कऊ के बारे मे?

क्या हुआ उसे? मित्र कुछ चौका।

नहीं रहा बेचा-रा।

कैसे? मित्र कुछ और चौंका। वह उस आदमी की ओर पूरी तरह मुड़कर बैठ गया।

सांप काट गया। काला नाग था पूरा दो फुटिया। घर के पिछवाड़े वाले छप्पर में छिपा रहा। दुर्भाग्य से उस रात लड़का भी वहीं खटिया बिछाकर सो गया। पता नहीं कब निकला और बाय पैर का अंगूठा चूस गया। सुबह तलाक तो लड़का

आधा स्याह।

राम राम राम, ! मित्र का हृदय करुणा से भर आया और फिर दवा-दारू और उपचार ?

खूब झड़वाया-फुंकवाया गया पर कोई असर नहीं। राधेलाल खटिया समत लड़कवा को उठाय-उठाय कहां नहीं गय। आसपास के गांव-गाव साधु-महात्मा जिसन जिसको बतलाया उसके पास गय। पर कोई जंत्र-मत्र टाना-टाटका असर नहीं किया। आखिर मं बचारा रात तलक हमेशा के लिए अचेत हो स्वर्ग सिधार गया।

मित्र न फिर से करुणा प्रकट की हां बस यही समझो जिसकी आ गयी उसे कोई बचा नहीं सक्ता। बचारे राधलाल हट्टा-कट्टा जवान लड़का !

वह यात्री फिर बोला भैया अब तो ऐसा लगता है—ई-सब घोर कलयुग का प्रभाव है। काई जंत-मंत्र जाप-ताप टोना-टोटका कुछ असर नहीं करता।

अधरा !

भयकर अधरा

किशन को लगा,उसके चारां ओर अधेरा किसी विकराल काले पक्षी की तरह दोनों बड़े-बड़े पख फैला कर खड़ा हा गया है। ज्ञान विज्ञान के इस युग में भी कितना अज्ञान—कितना अधविश्वास ! जवान लड़के को जहरीला सांप काट गया वैद्य नहीं डॉक्टर नहीं काई उपचार नही और बाप जंत-मत्र झाड-फूंक करवाने में ही लगा रहा क्या होगा इस देश का? ग्राम्य प्रधान भारतवर्ष का?

किशन अपन मन में एक बार फिर बुदबुदाया—गांव का आदमी कैसा भी हो रहगा निपट अज्ञानी कही कोई ज्ञान विकास परिवर्तन नही।

जत-मत्र टाना-टोटका और अधविश्वास की ये बातं उसे एक बार फिर से अपने घर की ओर घसीट कर ले गयीं। वह सोचने लगा—ऐसी ही बातों का भुगतान तो उसकी बहन भाग रही है। गाव स आय उस पडासी युवक ने उस दिन जो कुछ बतलाया अदर तक कितना झकझोर गया था !

उसका पड़ोसी युवक भी उसी तरह गाव से निकल आया है और अब पढ-लिखकर उसी के शहर मं नौकरी करता है। बहुत समझदार है। पिछले दिना किसी काम से गाव गया था। बहुत स समाचार ल आया है बहन की हालत की सूचना उसी ने ही दी थी। उस दिन मिला ता घटो बहन का हाल सुनाता रहा। उसी ने बतलाया

था— किशन ! अब तो तुम्हारी बहन को देखा नहीं जाता। बैठी-बैठी ही एकदम गुमसुम हो जाती है और बस शून्य में कुछ ताकती रह जाती है कितना भी हिलाओ डुलाओ कुछ बोलती ही नहीं पहले तो एसा फिट दो चार घंटे के लिए पड़ा करता था पर अब तो पूरे-पूरे दिन बहन इसी तरह बैठी रहती है उस समय में उसमें न जाने कहां का सामर्थ्य आ जाता है—दिन भर अन्न पानी का एक दाना मुंह में नहीं और उसे कोई भी घबराहट नहीं जब वह शून्य-सा कुछ देखती है तो उसकी आंखों में एक अजीब भयावहता का बोध टपकता है जैसे आस-पास अग्नि बरस रही हो कोई ज्वालामुखी फूट पड़ा हो।

पड़ोसी युवक ने उसके कंधे पकड़ लिए थे। उसका स्वर गहरी संवेदनाओं से नम हो आया था— किशन भाई ! सच बात तो यह है तेरी बहन का गम कोई एसा वैसा गम तो नहीं पति के लिए कहां तक वह जप-तप और व्रत करे पूरे छह सात होने को आये। पति लौटकर नहीं आया। उसके मन में कुछ तो बीतती होगी वह खुलाकर कहे भी तो किससे? गांव की रीति ऐसी ! मां-बाप के सामने दिल में उठने वाले तूफान को खोला भी कैसे जाये? यह तो लज्जा और शर्म की बात हुई ! और फिर हम लोगों के मां-बाप ऐसे कष्टों को गहराई से समझेंगे भी क्या?

हमारे यहां तो मां-बाप बचपन से ही अपनी लड़कियों के संस्कार में यही बातें ठूंसते हैं न कि एक स्त्री का पति ही उसका परमेश्वर है वही उसका जीवन है सब कुछ है पति पास में है तो उसकी सेवा कर वह कहीं चला गया है तो तपस्या और यदि दुर्भाग्य से पति इस लोक में नहीं है तो उसके नाम की माला जप भला ऐसे मां-बाप एक परित्यक्ता को कोई सही दिशा दिखा सकेंगे।

पड़ोसी युवक का स्वर कुछ तेज होने लगा था पर कुछ संभलते हुए वह फिर नम हो आया— अब तू ही बतला किशना। तेरे स्वयं के मां-बाप ने बहन की इस विपत्ति को कैसे लिया होगा? असल बात तो यह है कि अब वे भी ऊबने लगे हैं। मायके बैठी लड़की अब उन्हें भार मालूम पड़ने लगी है। पहले तो जब तेरी बहन को एसे फिट पड़ते थे तो कहते थे पति के व्रत जप-तप का कोई देव चमत्कार है अब कहने लगे हैं लड़की को कोई टोना-टोटका कर गया है उसे भूत प्रेत आने लगे हैं भूत प्रेत का बहाना कर उन्हें उतारने के लिए बहन को ऐसा मारते हैं कि बस ! डंडा झाड़ू जो हाथ में आया बहन के भूत प्रेत उतारने लगते हैं।

वह यह सब बातें सुनकर सुन्न रह गया था। युवक उसके कंधे बुरी तरह झकझोर रहा था मेरी बात मान किशना तेरी बहन को न कोई देव चमत्कार

न जादू न टोना न भूत और न प्रत और न ही काई फिट विट की बीमारी यह ता उसक अंदर का ही कोई गम है जो उससे अब सहन नहीं किया जाता और उसे इस तरह शून्य बना जाता है तुम लोगो द्वारा अपने प्रति बरती जाने वाली उदासीनता के कारण उसकी आखों से ज्वालामुखी जैसा क्रोध फूटने लगता है। आखिर तू भी तो चार साल हो गये बहन का दु ख-दर्द सुनने नहीं गया।

पड़ोसी युवक ने उसके कधे फिर से झकझार दिय थे— किशना मेरी बात सुन तू गाव जरूर जा बहन से जरूर मिल यह तेरा कर्त्तव्य बनता है। भाई-बहन का रिश्ता कितना आत्मीय हाता है किशना! बहन से मिलेगा—तेरे सामने उसका मन जरूर खुलेगा—उसे सुनने की कोशिश ता कर कि आखिर वह चाहती क्या है? तू उसे सुनेगा तो उसका मन हल्का होगा और रोग-शोक भी ।

बस को एक बार फिर झटका लगा और वह रुक गयी। इस बार ड्राइवर चिल्लाया माधोपुर आ गया।

अरे यह तो उसका ही गाव है!

पड़ोसी युवक की बातो मे डूबा हुआ किशन एकाएक चौक उठा। वह अपना बैग उठाकर शीघ्रता स बस से उतर गया। लगभग एक कास पैदल चलने के बाद उसके गाव की गलिया शुरू होगी। किशन जल्दी जल्दी चलने लगा।

दिन के दो बजे हैं। आसमान के बीचोंबीच सूरज पूरी तरह तप रहा है। सूरज के उस तेज प्रकाश मे पगडडी के दोनों ओर फैले धान के खेत अपनी गरिमा को और उद्दीप्त करन लग। किशन न सूरज की इसी उजास म अपनी गली में प्रवेश किया।

गली के मोड़ पर पहुंचते ही उस लड़के ने उसे यह सूचना सुना डाली किशना भइया अच्छा हुआ आप आ गये। आपकी बहन ता घर पर अच्छी मुसीबत डाल गयी। घर मं तो जाकर देखिए कितना रोना-रस्ट मचा है!

क्या हुआ मेरी बहन को? किसी मानसिक दबाव में आकर उसने कहीं आत्मघात तो नहीं कर डाला? पति के लिए पूरे छ वर्षों से व्रत जप-तप करने वाली तथा मां-बाप के संस्कारों से ग्रस्त अपनी छोटी बहन के लिए किशन बस इतना ही सोच सका। वह एकाएक घबरा उठा। उसके कदम और तेजी से बढ़ने लगे।

दरवाजे पर वही पुरानी टूटी हुई खाट पड़ी है। पिता जी उसी तरह लाल गमछा पहने उस पर बैठे हैं। मैली-कुचैली धोती पहने माता जी भी पास मं बैठी हैं। दोनों जार-जार स रो रहे हैं। किशन को देखत ही वे दानों और दहाड़ते हुए रोने लग अरे

हम तो टूट गये बसंती कैसा धोखा दे गयी चार दिन हुए घर से भाग गयी इसी गाँव के लड़के के साथ चार दिन से वह भी बदमाश गायब है आज ही खबर मिली है दोनों ने उस शहर में जाकर मन्दिर में शादी भी कर ली अब क्या होगा बसंती ने हम लोगों के माथे पर ऐसा कलंक लगाया हाय राम ।

माता पिता जी दोनों अपने माथे पर लग जाने वाले इस कलंक के लिए बुरी तरह पछाड़ खा-खाकर रो रहे हैं। किशन स्तब्ध खड़ा है—गाँव में इतने बड़े परिवर्तन को देखकर बिलकुल स्तब्ध हतप्रभ-सा।

लाल साडी

ड्राइगरूम में घुसते ही आंखों पर चढ़ी गोल्डन फ्रेम की भूरे शीशे वाली ऐनक को उतारते हुए साहब ने अंग्रेजी में कुछ कहा। साहब प्रसन्न दीख रहे हैं।

सामने सोफे पर बैठी मेम साहब सहसा उछल पड़ीं। उस ढीले-ढाले गाउन में उनका पूरा शरीर झूल गया। वे अग्रेजी-हिंदी दोनों मिलाकर बोल रही हैं। जहां तक वह समझ सका उन्होने यही कहा

सच कितना अच्छा बिजनेस रहा! सारा-का-सारा सामान बिक गया। भारतीय लोग बाहर की चीजों के लिए कितने लालायित रहते हैं!

मेम साहब उसी प्रकार फिर उछलीं। उनका पूरा शरीर एक बार फिर से झूल गया। इस बार भी उनकी अंग्रेजी हिंदीमिश्रित बात को वह जो समझ सका वह कुछ ऐसा ही

इस तरह से हम लोग यदि साल मे दो बार विदेश जाने का बंदोबस्त कर लें तो हर साल एक नयी गाड़ी तो खरीद ही सकते हैं।

अब तक साहब मेम साहब के बगल में आकर बैठ चुके हैं। वे कुछ समझाते हुए उसी तरह अग्रेजी में बात कर रहे हैं। इस बार मेम साहब उछलीं नहीं। उन्होंने अपनी दोनों मोटी-मोटी गठीली बांहों से साहब को लपेट लिया। अच्छा हुआ इस बार उन्होंने सारी बात केवल हिंदी में ही की। वह उसे पूरी तरह समझ सका।

साहब को अपनी बांहों में लपेटे मेम साहब कह रही हैं ओह डार्लिंग आज की पार्टी में तो जरूर ही चलना। वहां राज से मुलाकात होगी। आजकल उसका बिजनेस बहुत चमक रहा है। अपनी हर ट्रिप में कम-से-कम पंद्रह-बीस सोने के बिस्कुटों का बंदोबस्त कर लेता है। कितना होशियार आदमी है! उससे दोस्ती करना

हम लोगों को सच में फायदा पहुंचायेगा। मेम साहब का स्वर लड़ियाने जैसा है।

अब उसे चुपचाप किचन की ओर चल दना चाहिए। उसे कोल्ड कॉफी बनानी है। धूप स जब साहब बाहर से आते हैं तो उन्हें तुरंत काल्ड कॉफी चाहिए। जरा सी भी देरी होने पर मेम साहब के तेवर

वह कॉफी लेकर ड्राइगरूम के सामने खड़ा है। पूछता है अदर आ सकता हूं मेम साहब? साहब लागों की हिदायत है जब भी वे दोनों कमरे में अकेले हों वह पूछकर ही कमरे में आय।

संभवत अब तक मम साहब समल चुकी हैं। उनका बहुत धीरे से आदेश हुआ है हूं!

उसने सोफे के सामने पड़ी उस शीशे की टाप वाली टेबल पर कॉफी की ट्रे रख दी है। प्याले उठाने मे बहुत सावधानी बरतता है। थोड़ी-सी भी आवाज होने पर मेम साहब की फटकार पड़ सकती है कॉफी बनाते समय खटर-पटर क्या करता है! बड़े घरो की डिसिप्लीन नहीं आती? गंवार कहीं का !

मेम साहब उसे हमेशा इसी तरह किसी भी काम को फटकारते हुए ही समझाती हैं।

कॉफी देने के बाद उसकी इच्छा होती है वह थाड़ी देर वहां पर खड़ा होकर साहब लोगो की बातो को सुनता रहे। बड़ी बड़ी बाते करते है ये लोग। बड़े आदमी हैं। हर समय यूरोप अमेरिका की ही बातें। साल में एक-दा बार वहां जाते भी तो रहते हैं।

पर यह उसके साहब की विशेष हिदायत है कि वह जब भी उन दोनों के बीच किसी भी काम के लिए आये काम करके उसे तुरंत वहां से चला जाना चाहिए। उसे उन दोना के बीच अधिक देर तक रुकना नही है।

वह वापस चलन का है पर मम साहब उस बीच में ही टोक देती हैं जा कपड़े बतलाय थ उन्हें प्रेस करवा लाया ?

जी मेम साहब!

कितने पैसे लगे?

जी दस रुपये तीस पैसे।

बाकी मुझ लौटा।

वह अपनी जब स शेष पैस निकालकर मम साहब को दे देता है। मेम साहब उन्हें गिनकर रख लेती हैं।

कॉफी पीकर साहब लोग अपने बेडरूम में आये हैं। शाम को उन्हें पार्टी में जाना हागा उसी की तैयारी मे है। मेम साहब गोदरेज की अलमारी खोलकर बहुत गौर से अपनी साड़ियों को देख रही हैं। चुनाव कर रही हैं कि पार्टी में कौन-सी साडी पहनकर जाया जाय।

जब कभी भी मम साहब अपनी अलमारी खोलती हैं वह किसी-न-किसी बहान उनके बेडरूम में आता-जाता है। उसे मेम साहब की लाल नीली हरी पीली गुलाबी साड़ियों को देखना बहुत अच्छा लगता है। वह लाल साडी तो उसे बहुत ही अच्छी लगती है। जब भी उसे देखता है भाव-मुग्ध हा देखता ही रह जाता है।

अगले आषाढ़ में उसका विवाह है। उसकी इच्छा है विवाह के समय उसकी होने वाली भी मेम साहब की साडिया जैसी ही कोई दमदार साड़ी पहने। खास कर इस लाल साड़ी में ता उसकी दुल्हन का बदन सुबह सूरज की ताजा किरण की तरह खिल उठेगा।

उसकी हाने वाली बहुत सुदर है। गोरा गदगदा शरीर। बडी-बड़ी कजरारी आंखें। नाम है चमेली। चमेली के फूल की तरह ही तो महकती है उसकी चमेली! उसके गाव से एक कोस दूरी पर चमेली का गाव है। चमेली को वह लाल साडी पहनाकर ही ब्याहना चाहता है। जब जब वह मेम साहब की वह लाल साड़ी देखता अनायास ही इस कल्पना म डूब जाता—उसके आसपास तराताजा सूरज की किरण फूट पडी हैं वह उन किरणों से लिपटता ही चला जा रहा है!

फुरसत के समय जब भी वह कॉलोनी के अन्य नौकरों के साथ बैठता है मेम साहब की साड़ियां की बात अवश्य करता है। अपने उस अंतरग मित्र से ता उसन जी खोलकर सब कुछ बताया है—वह अपनी नवेली को मेम साहब की जैसी ही लाल साड़ी म ब्याह कर लायगा। लाल साडी म उसकी नवेली दुल्हन—बस !

उसका वह अंतरंग मित्र उसकी हर बार यह बात सुनकर प्रसन्न नही होता। जब कभी उसकी इस प्रकार की रट से ऊब भी जाता है तो वह तर्क करने लगता है तु अपनी नवेली को मेम साहब जैसी लाल साड़ी में कैसे ब्याह सकेगा?

पर क्यों तू ऐसा क्यो बालता है?

कहां से लायेगा वैसी साड़ी?

खरीदूगा खरीदकर पहनाऊंगा।

जानता है कितने पैसा की आती है मेम साहब की साड़ियां? उतना पैसा जुटा सकेगा?

वह तो मुश्किल   तो फिर?

कोई बड़ा काम करेगा पैसा कमायेगा?

वह भी तो मुश्किल इतना तो पढ़ा-लिखा नहीं कि कोई बड़ा काम मिल जाये

तो फिर क्या करेगा?

साड़ी तो लाऊगा ही।

तो क्या चोरी करेगा? चोरी करके अपनी नवेली को पहनायगा? मेमसाहब जैसी लाल साडी?

अ-बे चु प्प।

गोदरेज की अलमारी के पास खड़ी मेम साहब अब भी अपनी साड़ियों को उलट-पुलट रही हैं। एकाएक उसे संबोधित करते हुए वे जोरों से चिल्ला उठती हैं   मेरी लाल रंग की साडी प्रेस कराने ले गया था कि नहीं?

मेम साहब कपड़े तो सारे मां जी न ही गिनकर दिये थे। उसमें तो लाल साडी नहीं थी। मै तो लाल रग की साडी प्रेस कराने नहीं ल गया।

साहब की मा अपना नाम सुनकर अपन कमरे से ही कहती हैं   ले तो गया था लाल रंग की साडी। पूरी आठ साड़ियां नहीं दी थी?

वह सकपका उठा   नहीं मां जी साड़ियां तो केवल सात ही थी आठ नहीं थीं।

मां जी अपनी बात पर जोर देते हुए कह रही हैं   क्या कह रहा है तू? मैंने ता पूरी आठ साडिया दी थी और उसमें ताल साडी भी थी।

मेम साहब आप अलमारी म अच्छी तरह से देख लीजिए। कहीं कपड़ों के बीच में साडी दब न गयी हो। उसने मेम साहब से निवेन्न किया।

कपडा के बीच नहीं तेरे सिर पर होगी   मेम साहब गरज पड़ीं। उन्होंने उसकी आर बढ़ते हुए अपनी दानो आंखें तरेर दीं   बोल कहां डाल आया मेरी साड़ी? कही इधर-उधर तो नहीं कर दी?

अब तक मां जी भी कमरे स निकल आयीं। वे उसे समझाने का प्रयास करती हैं   यदि साड़ी कहीं खो गयी है रास्त में गिर गयी है तो साफ-साफ क्यों नहीं कहता?

मम साहब ने फिर से आखें तरेरी हैं   गिरा विरा नहीं आया इसने साड़ी इधर-उधर की है। अलमारी खालते समय इसका ध्यान हमेशा मरी साड़ियों पर रहता

था। राम जाने क्या नीयत ?

साहब बेडरूम में आराम कर रहे हैं। वे भी उठ बैठे हैं। उसे आ सु आवाज दते हैं सा ले इधर आता है कि नही?

वह कुछ अधिक सहम गया है। साहब की ओर कदम उठते ही नहीं।

साहब फिर जोर से चिल्ला उठे इधर आता है कि नही? चोर कहीं का! सोचता है कि चोरी करके भी बच जायेगा!

वह सकपकाया हुआ साहब के सामन खड़ा है साहब मैं केवल सात ही साड़ी लेकर गया था। मैने साड़ी नहीं चुरायी। मै झूठ नही बोलता।

तो क्या मै झूठ बोल रहा हूं? मेम साहब झूठ बोल रही हैं और फिर मां जी भी झूठ बोल रही हैं? जब मां जी यह कह रही है कि उन्हाने अपने हाथ से लाल साडी प्रस कराने को दी थी तो वह कहां चली गयी?

नहीं साहब! परमात्मा कसम। कपडा में लाल रंग की साड़ी नही थी।

अब परमात्मा की कसम खा रहा है! बराबर झूठ बोले जा रहा है। हद हो गयी साहब का चेहरा और तमतमा आया।

मां जी भी क्रोध मे आ चुकी हैं। वे भी हाथ पटक-पटक कर कहने लगी इठला-इठलाकर के नशे में चलता है। कही गिरा आया होगा साड़ी। अरे फिर से ठीक से याद कर—साड़ी कहा गयी! कहीं

मेम साहब बीच में ही बोल उठीं मां जी साड़ी कहीं भी खोयी नहीं है। साडी इसी न ही इधर-उधर की है।

अभी-अभी कही गयी बात को वे फिर से दोहराती हैं पर इस समय अपनी बात पर वे कुछ अधिक बल डालती हैं इधर मै यही देख रही थी कि जब भी मै अलमारी खोलती यह छोकरा इधर-उधर के बहान करके कमरे में आता जाता और अलमारी को घूर-घूरकर देखता रहता। इसकी नीयत बहुत दिनों से कुछ गड़बड़ थी।

साहब भी मेम साहब का समर्थन करत हैं इधर यह गडबड़ भी करने लगा है। परमों डिपो से दूध लेने गया ता कहने लगा जेब कट गयी। बीस का नोट ही गायब हो गया।

मेम साहब फिर से गरज उठीं य छोकरा ऐसे नहीं मार से कबूलेगा। ये लोग इसी के आदी हैं।

साहब का करारा हाथ उसके गालां पर जाकर गिरता है—तपाक् तपाक्।

इधर-उधर से एक क बाद एक—बराबर बिना सांस लिये सच-सच बतला दे साड़ी कहा कर आया? नहीं तो

साहब की वह मार अंदर तक चाट पहुचा गयी। उसकी आत्मा कराह उठी। घर पर भी उसके मां-बाप ने ऐस कभी नहीं मारा। इतना घोर अपमान! सिसकियो से उसका रुंधा हुआ कंठ रुक रुक कर कुछ कह रहा है मै-ने चो री न हीं की सा ह-ब। आ प-को वि श्‍ वा-स नहीं तो मैं साडी के दा-म चुका दूंगा।

बेहूदा कही का! गड़बड़ करने के बाद साड़ी के दाम चुकाने की बात करता है! मालूम भी है उस साडी का दाम क्या है? जिंदगी मे भी ऐसी साड़ी नही खरीद सकोगे।

उसकी इच्छा हुई कि वह साहब के मुह पर थूककर उसी समय वहा से चल दे। कितनी चुभती हुई बात साहब ने कह दी—वह जिंदगी भर ऐसी साड़ी नही खरीद सकता! क्या वह अपनी चमेली को साहब कितने बेरहम हैं! कितनी कठोर बात कहते हैं!

वह निश्चय करता है इसी समय साहब का काम छोड़कर कहीं चला जायेगा। साहब की ऐसी बात सहन नही हो सकेगी उससे। यह उसका निश्चय है बिलकुल निश्चय है।

अब वह साहब क सामन तनकर खड़ा है। अपना निर्णय सुना रहा है साहब मरा हिसाब कर दीजिए। मै अब और नौकरी नही करूगा।

देखा छोकर को! अब नौकरी छोडने की धमकी दे रहा है और फिर हिसाब किस बात का चाहिए? एक तो साड़ी चोरी कर ली ऊपर स हिसाब मांगता है! हिसाब मांगत हुए तुझे शरम नही आती? निकल जा घर से इसी समय साहब दहाड़त हुए गरज पडत हैं।

इस बार वह कुछ नही बाला। चुपचाप घर स चल देता है। उसके चलते समय मम साहब ही कुछ-कुछ बुदबुदायी है चोरी जा की है अब घर मे टिक रहने की हिम्मत कहां!

रात को साहब लाग पार्टी से बहुत दर से लौटे। वैस भी आज रविवार का दिन है। वे लाग फुरसत से नौ-दस बज तक ता अवश्य ही सोयगे। मां जी सोकर उठ गयी हैं। नौकर चला गया है। घर का सारा काम उन्हीं को करना होगा। मां जी सोचती हैं किसी तरह नौकर आकर एक बार माफी मांग ले तो वे उस बहू-बेटे स कहकर दाबारा रख लेंगी। यूं ही बैठ-ठाले सिर पर आफत आ गयी। घर का इतना सारा काम अकेले

हाथ स समेटना क्या संभव है? बहू-बेटों को क्या उन्हे तो घूमने से ही फुरसत नहीं। तैश में आकर नौकर को निकाल दिया।

इतने में ही सीढ़ी पर चढ़न की किसी की आवाज आयी है। मां जी का मुख-मंडल आशा से चमक गया—नौकर ही होगा। माफी मांगन आया होगा।

दूसरे ही क्षण मां जी मम साहब के बेडरूम की ओर मुंह करके जारों से आवाज दे रही हैं बहू प्रसवाला तुम्हारी लाल रंग की साड़ी लकर आया है।

मेम साहब अपने पारदर्शी स्लीपिंग गाउन म अगड़ाई लेते हुए कमरे से निकलती हैं। प्रेस वाला गौर स उनके शरार को घूरते हुए साड़ी बढ़ा देता है लीजिए यह साड़ी। कल आपका नौकर हमारे यहां भूल आया था।

मां जी के अदर नौकर के लिए सहानुभूति फूट पड़ी है। वे कुछ पश्चात्ताप के स्वर में बोलीं मैं तो पहले ही कह रही थी कि नौकर गलती से प्रेस वाले के यहां साड़ी भूल आया होगा। तुम लोगों ने यूं ही उस घर से निकाल दिया।

ऊंह! आपका यूं ही उसके लिए प्यार उमड़ आया है। नौकरों पर क्या विश्वास किया जाय! ये सब चोर होते हैं कहती हुई मेम साहब कमर मटकाती हुई अपने बडरूम में वापस चली गयीं।

मां जी देखती रह जाती हैं—भौचक बिलकुल भौचक्की रहकर। उमड़ती हुई नयी दौलत का नये पैसे का नशा ऐसा भी क्या!

नेतृत्व

वे लाग बहुत आक्रोश में थ। उनका कहना था मथुरिया की स्त्री की मौत का कारण ये मालिक लोग ही हैं। बे-चा रा स्त्री को शहर के अस्पताल में दिखाने के लिए पैसा नही जुटा सका। भोलानाथ के सामने कितना गिड़गिड़ाया ' पर । इसीलिए इस मौत का बदला मौत ही होगी।

उनकी उत्तजना और बढ गयी अब हम लोग मालिकों से बदला लेकर ही शात होगे। काका फिर यह मत कहियेगा कि तुम लोगो को अपने ऊपर किसी प्रकार का वश नहीं।

बिससर काका ने उन्हे फिर समझाया मालिको का शोषण दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है इसे कौन नही मानता ' हमें इसके खिलाफ लड़ाई लड़नी है। पर इस प्रकार की उत्तजना नारेबाजी और बदले की भावना से हम लोगो को अब तक क्या मिल सका है? उल्टे मालिको का और अधिक अनाचार। उसी का तो भुगतान भोग रहा है मथुरिया।

पर काका अब सहा नहीं जाता। पूरा गांव भूख से बिलख बिलखकर मरने लगा है। ऐसे ता एक-एक करके कितनी मौ त

बिससर काका ने बीच मे ही रोक दिया। इस बार उन्होने और अच्छी तरह से समझाने की कोशिश की थोड़ा सा धीरज रखो। भवानी एक दो दिन में पहुंचने वाला है। पढ़ा लिखा है। कायदा-कानून जानता है। और अब तो बड़ा नेता बनने जा रहा है। आते ही सारी स्थिति सभाल लेगा।

वे लोग चले गये थे। बिससर काका बहुत देर तक यही सोचते रहे—असलियत तो यह है कि इन युवको को कोई दिशा दिखाने वाला नहीं। इन्हें

सही नेतृत्व मिल जाय तो ये अपने गांव को अपने लोगों को कहीं का कहीं पहुचा सकते हैं।

चिंतन की इस प्रक्रिया में बिससर काका की आखों में कुछ निर आया है— अपना ही भवानी इकलौता पुत्र। एक-एक पैसा जुटाकर शहर में पढ़ाया है उसे। चार साल पहले वकालत पास कर चुका। अभी वह शहर में ही है और बड़ा आदमी बनना चाहता है। विधानसभा का चुनाव लड़ने जा रहा है। अपने ही जिले से खड़ा होगा।

बिसेसर काका सोच रहे हैं— पढ़े लिखे होने के कारण भवानी के लिए सब लोगों के अंदर कितना स्नेह कितनी श्रद्धा है! इसीलिए तो हरिजन बस्ती के सभी छोटे-बड़े उसे भवानी भैया कहकर पुकारते हैं। भवानी का नेतृत्व बस्ती के इन नवयुवकों को निश्चय ही सही दिशा दिखा सकेगा।

काका पूरी तरह आश्वस्त हैं— भवानी आते ही सारी परिस्थिति संभाल लेगा। कोई मामूली आदमी तो नहीं! नेता बनने जा रहा है। हर बात समझदारी की करता है। गांव मे जब भी आता यहां की दुर्दशा देखकर यही कहता है—अपने इस गांव में शोषण के खिलाफ बड़ा संघर्ष करना है। इसीलिए हम सबको अपनी क्षमता को छोटी बातों सवर्णों से आये दिन की लड़ाई नारेबाजी बदला लेने आदि में व्यर्थ न करके उस असली संघर्ष में लगाना है।

दरअसल उस गांव में पिछले महीनो से रोजी रोटी की समस्या खड़ी हो गयी है। गांव के सवर्णों ने खेत खलिहान के मालिकों ने हरिजन बस्ती के लोगो को काम मजदूरी देना बंद कर दिया है। नतीजा यह हुआ कि पहले तो कुछ दिनों तक हरिजन बस्ती के लोग घर में थोड़-बहुत जमा अनाज से जैसे-तैसे काम चलाते रहे पर उसके बाद तो यह नौबत होने लगी कि कितने ही घरों में अब चूल्हा जलना बंद हो चुका है। आसपास अथवा बाजार से पैसा उधारी का कुछ हो भी पाता है तो बस इतना ही कि कभी सत्तू तो कभी चबैना भर का इंतजाम हो सके। बच्चे तो भूख के मारे सारा दिन रिरियाते हैं।

बस्ती के कुछ लोगों ने तो यह भी सोचना शुरु कर दिया है कि एक दो बार और कहने-सुनने पर मालिक लोग काम-मजदूरी पर फिर से नहीं बुलाते तो वे लोग गांव छोड़कर शहर चले जायगे। गांव में ऐसे कब तक निभेगा?

मथुरिया के घर पर तो एक दूसरा ही संकट आ पड़ा। पत्नी को काफी दिनों से बुखार आ रहा था। इधर इस मुसीबत की मार से वह उसके लिए दवा-दारू भी न जुटा

सका। बुखार ऐसा चढ़ता कि पूरा शरीर दहकती भट्ठी। पत्नी न जाने क्या आय-सांय बकती ! बस्ती क ही वैद्य ने बतलाया बुखार बहुत बिगड़ चुका है। सन्निपात की स्थिति है। शहर क किसी बड़े अस्पताल में दिखाना होगा। गांव में रहकर तो स्त्री बच नहीं सकती।

मथुरिया कई दिनों तक अपने मालिक भोलानाथ के सामने गिड़गिड़ाता रहा मालिक स्त्री की जिंदगी का सवाल है। मजदूरी बहाल रखी जाये। आपका उपकार कभी न भूलूंगा। स्त्री को शहर के अस्पताल में दिखाना है। घर में फूटी कौड़ी नहीं।

कई बार मथुरिया ने हिम्मत बटोरकर अधिकार भाव से भी निवेदन किया पिछली मजदूरी के तीन सौ रुपये बकाया हैं मुसीबत म वे ही मिल जाते।

वह संकेत करता जो मालिक के य दूर-दूर तक फैले खेत लहलहा रहे हैं उसमें एक छोटे टुकड़े जमीन पर तो उसका भी हक बनता है। मालिक कुछ विचार करें। आप लोग तो बहुत उसूल के आदमी हैं।

इस तरह मथुरिया ने कितनी बार आग्रह किया। पर हर बार भोलानाथ की कड़कती आवाज उनकी बैठक की दीवारों को चीरती हुई पूरे गांव में फैल जाती चूड़े चमारों ! अब खुशामद-दरामद करने चले हो मालिकों की ! जब बात-बात पर अपने मालिकों स बराबरी करते हो उनसे बल्ला लेने के लिए छाती तानकर खड़े हो जाते हो तब तुम्हें अपनी हस्ती का अदाज क्यों नहीं होता? अब तो तुम लोगों को तुम्हारी हस्ती का सनक सिखाकर ही मालिक लोग चैन लेंगे।

वैसे तो इस गाव म हरिजन सवर्ण विवाद काफी समय स चला आ रहा है पर वर्तमान तनाव क पीछे हाल में ही होने वाली दो घटनाएं मूल मे थीं। मालिक लोग इन्हीं घटनाओं का सकेत करके बार-बार गरजते और मथुरिया जैसे हरिजनो का उनकी हस्ती की याद दिलाते। ऐसा हुआ कि ये घटनाए एक के बाद एक घटित हुई थीं। एक तनाव समाप्त होने भी न पाता कि दूसरा खड़ा हो गया। सवर्णों का कहना है कि हरिजन बस्ती क लोग उन्हें चुनौती देने पर तुल पड़े हैं।

तनाव कुछ इस प्रकार प्रारभ हुआ कि उस गांव में कोई हेयर कटिंग सैलून नहीं था। हरिजनों को तो विशेषकर बाल कटवाने आदि के लिए पेटी वाले नाई का इतजार करना पड़ता था। गाव के पिनकिया बाजार में जब सुंदर नाई ने पहला हेयर

कटिंग सैलून खोला तो हरिजन बस्ती के कुछ शौकीन युवक बहुत ही प्रसन्न हुए। इन्हें पेटी वाले नाई के न तो पुराने तरीके के काटे गये चिपके चपटे बाल पसंद आते और न ही देसी उस्तरे से बनायी गयी ऊबड़-खाबड़ हजामत। जब सुंदर नाई ने सैलून खोला तो ये युवक भी वहां आने लगे। सुंदर नाई अपनी बस्ती के युवकों का रुच-रुच कर काम करता। पूरे पैसे भी नहीं आधे पैसों में ही सब कर देता। हेयर कटिंग सैलून से जब महेशू किशन बबुना और मंगत फैशन वाले बाल कटवाकर नोकदार मूंछें तरशवाकर और चिकनी चुपड़ी दाढ़ी बनवाकर दमकते चेहरों के साथ निकलने लगे तो सवर्णों को उन्हें देखकर तिलमिलाहट हुई। इसलिए नहीं कि सुंदर नाई हरिजन बस्ती के लोगों का आधे पैसों में ही काम करता है सवर्ण तिलमिलाए इसलिए कि उनकी तरह अब हरिजनों को भी बन-ठनकर रहने का शौक होने लगा है।

इस बार भी सवर्ण बस्ती के मुखिया भोलानाथ ही कड़के थे इन सालों के इतने ठाठ-बाट ! पहले अपनी बस्ती में नाली के कीड़ों की तरह कैसे भिनकते रहते थे और अब हम लोगों की तरह सैलून में जाकर कुर्सी पर बैठकर बाल भी कटवाये जाने लगे हैं ! हजामत बनवायी जाती है ! हर बात पर बराबरी में तुल गये हैं !

भोलानाथ सुंदर नाई पर भी खूब भभके। कड़कती आवाज में उसे चेतावनी दी हरिजनों के बाल काटने तुरंत बंद कर दिये जायें। नहीं तो गांव में तुम्हारी खैर नहीं।

पर सुंदर नाई ने भोलानाथ की बात पर ध्यान नहीं दिया। दूसरे दिन ही महेशू किशन बबुना और मंगत जब सैलून पर पहुंचे तो उसने उनके बाल काटे मूंछें तराशीं दाढ़ी बनायी और चिकने चुपड़े चेहरे करके फिर से भेज दिये।

सवर्ण बस्ती में यह खबर तुरंत पहुंच गयी। इस बार तो भोलानाथ के आक्रोश की सीमा नहीं। पहले तो वे अपने घर के दरवाजे पर खड़े होकर लाल-पीले होते रहे फिर पड़ोस के कुछ लोगों को लेकर एकाएक सुंदर नाई पर धावा बोल दिया तुम लोग बहुत बढ़ते जा रहे हो। हम लोगों को चुनौती देने पर तुले हो तो लो चखो अपनी करनी का मजा !

यह कहकर भोलानाथ ने अपने साथ आये एक युवक को सुंदर नाई के सारे बाल काट डालने का आदेश दिया। कुछ अन्य लोगों ने उसके हाथ-पैर पकड़े कुछ ने टांगें।

सुंदर नाई रह-रहकर चिल्लाता भोलानाथ क्रोध से तमतमाये उसके बाल मुंड़वाते रहे।

सजा देने का यह क्रम यहीं पर समाप्त नहीं हुआ। बाल मूंड देने के बाद सुंदर नाई का पूरा चेहरा काली स्याही से लेपा गया। उसे एक गधे पर बैठाकर आसपास के इलाकों मे इधर-उधर कई चक्कर लगवाये गये। सुंदर नाई बार-बार छटपटाया पर उसकी एक न चली। अत मे उसे पवित्र करने के लिए गोबर लपकर नहलाया गया और कड़े आदेश दिये गय कि अन स वह सैलून में हरिजनों के बाल काटने का दुस्साहस न करे।

सवर्णों के इस सलूक से हरिजन बस्ती का एक-एक आदमी स्वय को अपमानित अनुभव कर रहा था। इस घोर अपमान का बदला लेने के लिए उन्होंने भी सवर्णों को तरह-तरह की धमकियां दी।

हरिजन बस्ती के वे चारो युवक—महेशू किशन बबुना और मंगत—तो उस दिन बहुत उत्तेजित हो उठे। उन्होंने सवर्णों को खुलकर धमकिया दीं हम बदला लेगे हर बात का बदला लेगे। सवर्ण करेंग एक तो हरिजन दो करके दिखलायेग।

हम किसी से कम नहीं। हमें कोई कमजोर न समझ।

गांव की हर चीज़ हमारी है। मदिर हमारे हैं तालाब हमारे हैं और अब सैलून भी हमारा है।

सवर्णों और हरिजनों के बीच यह झगडा इतना बढ़ा कि दोनों एक-दूसरे को मरने-मारने के लिए तैयार हो गये। दोनों पक्षों ने लाठियां तान लीं।

इसके तुरंत बाद ही उस गांव में दूसरी घटना हो गयी। ठीक पद्रह दिन के बाद विजय-दशमी का त्योहार पड़ा। हर वर्ष की भाति महामाया मन्दिर स विजयदशमी का जुलूस निकाला गया। हरिजनों न इस जुलूस में शामिल होने की फिर से जिद की। जुलूस अभी थोड़ी ही दूर पिनकिया बाजार के चौराहे तक ही पहुचा था कि उसमें एक हरिजन को देवी आ गयी। पूरा जुलूस एक बड़ हड़कंप में बदल गया। एक ओर विशेष कर हरिजन अपने आदमी के देवी चमत्कार को देखने के लिए एक-दूसरे पर चढ़े जा रहे थे और उधर सवर्णों के क्रोध का ठिकाना नहीं।

भोलानाथ बुरी तरह भमक रहे थे सा-ला है हरिजन—चूड़े चमार और भक्त बनते हैं दुर्गा देवी के भगवती क ! मन्दिरों में घुस जाने के बाद फिर भक्ति में भी सवर्णों को खुली चुनौती ! हर बात में हम लोगों को नीचा दिखान पर तुले हैं। भोलानाथ न भमकते हुए सवर्णों को भी ललकारा मै पूछता हू जुलूस में सवर्णों में से किसी को देवी क्यों नहीं आयी? उत्तर क्यों नहीं देत?

वे एक बार हरिजनों की ओर फिर लपके   चूड़े-चमारो ! तुम सबको एक-एक का दख लूगा। आखिर तुम लोग गांव छोड़कर जाओगे कहां !

इधर हरिजन भी चुप नहीं रह। उन्होने भी खुलकर जवाब दिया। इस बार जवाब-तलबी मे हरिजनो न एक बात और जोड़ दी। उन्होंने जोर-जोर से नारा लगाया

हम दुर्गा के सच्चे भक्त। दुर्गा हम पर आयेगी !

यह नारा ता सवर्णों को और भी आगबबूला कर गया। देखते-देखते यह तू-तू मै मै इतनी बढी कि दानों पक्षों ने फिर से लाठिया तान लीं। इस बार तो झगड़ा इतना बढ़ा कि जिला पुलिस का खबर करनी पडी। भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू-गैस छाडी गयी। पुलिस ने भीड़ पर लाठीचार्ज भी किया। करीब एक दर्जन से ऊपर लाग घायल हा गये। कुछ गिरफ्तारिया भी हुईं। घायल और गिरफ्तार लोगों में लगभग हरिजन ही थे। सभवत यह लाठीचार्ज सवर्णों के इशारे पर हुआ था।

इतना होने पर भी गाव के सवर्ण चुप नही बैठे। दूसरे दिन ही भोलानाथ के घर पर एक बड़े स्तर पर सवर्णों की बैठक बुलायी गयी। बैठक लगभग दो घटे चली। सबसे पहले भोलानाथ ही बोले   जब से इन छोटी जाति वालों को सरकार से बाहर से समर्थन मिलने लगा है इनके दिमाग चढ गये हैं। सीना तानकर हम लोगों को चुनौती देने निकल पड़े हैं।

भोलानाथ ने सबसे बडी चिता यह व्यक्त की   अब तो लगता है गाव मे वर्षों स चली आने वाली वर्ण व्यवस्था बहुत दिनों तक टिकने वाली नहीं।   उन्होन फिर स्वय ही अपनी चिता को आश्वस्त भी किया   पर सवर्ण आज से ही यह तय कर लें कि वे अब हरिजना को उनकी हैसियत बताकर ही चैन लेग।

बैठक के अत में मुख्य बात यह तय हुई कि गांव में जिस प्रकार से हरिजनों की सवर्णों के साथ बराबरी करन की हिम्मत बढ़ती जा रही है उनका पूरी तरह से बहिष्कार किया जाये। खेता खलिहानों मे हरिजनों को कुछ दिनों के लिए काम दना बिलकुल बद कर दिया जाय। मालिकों पर रहने वाले उनके पिछले उधार को पूरी तरह भुला दिया जाये। इसी तरह उनके किसी प्रकार के जमीन-जायदाद के मामलों को भी   ।

भोलानाथ ने बैठक को फिर से संबोधित किया   ये नीच जब भूख से बिलखने लगेगे कुछ ही दिना में सीना तानकर चलना भूल जायेंग। चूड़े-चमारों को अपनी हैसियत का पता होना चाहिए।

तो उन लोगा का तर्क था कि मथुरिया की स्त्री की इस असहाय मौत का कारण मालिक लोगों का शापण और अनाचार ही है। व चारो युवक—महशू किशन बबुना और मंगत—तो पूरे आवेश मे थे। उनकी एक ही रट थी कि इस मौत का बन्ला अवश्य लिया जायगा। वे हत्यारों को सबक सिखाकर रहगे पर बिसेसर काका ने उन्ह किसी तरह समझा-बुझाकर शात कर दिया था।

भवानी के आने की सूचना से वास्तव म बस्ती के लोग एक सहारे का अनुभव करने लगे। हरिजन लाग एक-दूसरे से कहते फिरते सवर्णों के शापण अनीति और अनाचार की एक एक शिकायत भवानी भैया से कही जायेगी। वे इन सबके खिलाफ काई ठोस संघर्ष छेडें। ऐस सघर्ष का परिणाम सारे शापणों से मुक्ति ।

हरिजन बस्ती के लोगो के मन मे एक प्रकार की आशा उठती और अदर तक गहरा जाती नेता बनने के बाद तो भवानी भैया अपनी बस्ती क लोगों को उनका छीना गया सब कुछ दिला सकेगे यानी मेहनत-मजदूरी उधार। सब कुछ। उनका सामाजिक न्याय और सम्मान भी।

मथुरिया ने भी कमर कस ली भवानी भैया के आत ही सारे कागज पत्तर तैयार करवाकर भोलानाथ पर मुकदमा ठोक दूगा। अब वह चुप बैठने वाला नही। भोलानाथ से वह अपनी जमीन का वह छोटा टुकडा लेकर रहेगा। उसके परदादा ने ता उस अपना कर्जा पाटने के लिए मालिक के पास केवल गिरवी रखवायी थी। उसके पिता के सामन तक कर्जा पाटा भी जा चुका है। अब उस जमीन पर उसका हक है।

मथुरिया बडे स्वाभिमान के साथ गर्दन ऊची कर हुकार भरता भवानी भैया क आने पर अब वह उस जमीन पर अपना जैतखब जरूर गाड देगा।

भवानी के आते ही गांव के चौपाल म हरिजना का एक बड़ा सम्मेलन बुलाया गया। इस चौपाल म पहले भी इस प्रकार के सम्मेलन हुए हैं पर इस बार क सम्मेलन में जिस प्रकार लाग जमा हुए पहले कभी नहीं। सहस्त्रों की संख्या में हरिजना की भीड उमड पडी। चौपाल के बीचाबीच लाल ईंटा के चबूतरे पर ऊंचा तख्त बिछाकर मच बनाया गया है। हरिजन-बस्ती के भावी नेता वहा क लोगा की आशा क केन्द्र भवानी भैया मंच की उस ऊचाई से ऊंच स्वर में बाल रह है। उन्हान बार-बार हरिजना का अपन लोगों का शोषण मे मुक्ति का आहवान किया। तालियों की गडगडाहट म कई बार ता

भवानी भैया का स्वर सुनायी भी नहीं पडता।

काका बीच-बीच में भाव विभोर हो जाते कितना अच्छा बोलता है भवानी ! आवाज कितनी बुलंद ! शरीर से थोड़ा गदगदा आन स रोबीला चेहरा भी कुछ अधिक गंभीर और कर्मठ ! ठीक नेता जैसा !

काका ने मन ही-मन भगवान से हाथ जोड़ दिये— हे परमात्मा बेटे को खूब लंबी उमर देना। अपने लोगों के लिए गांव के लिए देश के लिए उसे बडे-बडे काम करने हैं।

उधर भवानी भैया का भाषण भी आगे बढ चुका। शोषण स मुक्ति क अनेक आह्वानो क बाद अब भवानी भैया विधानसभा क आगामी चुनाव के मुददे पर आ टिके हैं मै तो इस बस्ती इस गांव की सेवा में अपना पूरा जीवन समर्पित कर देना चाहता हूं। आप लोग अपना बहुमूल्य वोट दकर मुझ एक बार अपनी सवा का अवसर तो दीजिए !

इसी बीच उस जनता क नेता भवानी भैया न कुर्ते की जब से सफेद रूमाल निकाला और दोनों आखो क कोने पोछ डाले। समवत अन्दर कुछ अधिक गहरा गया। उन्होने निवदन की मुद्रा मे दोनो हाथो को फिर से जोड़ दिया अपने लोगों का दुख-दर्द देखकर अब तो मन बेचैन हुआ जाता है। जिस प्रकार से यहा हरिजनो पर शोषण अनीति का जहर फैलता जा रहा है उसे देख सुनकर भला कौन चैन से रह सकेगा ! मै प्रतिज्ञा करता हूं इसी क्षण स प्रतिज्ञा करता हूं कि जब तक इस गाव मे हरिजन-बस्ती के लोगों को चूड़ा-चमार कहना बंद नहीं होता मै मै पैरो में किसी प्रकार का जूता-चप्पल नही पहनूंगा।

यह कहकर भवानी भैया ने शीघ्रता स अपने दानों पैरों से पेशावरी जूते निकाले और मच की दूसरी ओर खिसका दिय।

इसके बाद उन्होने हाथ जोड़कर एक बार फिर अपनी प्रतिज्ञा को दोहराने की कोशिश की लेकिन वे कुछ कह न सके थे। मूक बने टकटकी बाधे कुछ देखत रह गय।

सम्मेलन में आयी वह भीड़ भी अपने नेता को यह सब कहत-करते देखकर एकाएक स्तब्ध । अभी-अभी जो कुछ भवानी भैया ने किया और कहा है उसकी भाषा वह पूरी तरह समझ नही सकी।

भवानी भैया अपनी प्रतिज्ञा के लिए कुछ कहत-कहते जो अकस्मात रुक गये उसका एक निश्चित कारण था। प्रतिज्ञा को लेकर पैरों से कीमती पेशावरी जूते

उतारते समय उनकी स्वयं की अतल की गहराइयां से कुछ उमड आया था। यह सब कुछ ऐसा कि उनकी समस्त इंद्रियां भी निजी कर्तव्यों को भूलाकर एक बार उसी म स्तब्ध रह गयी थीं।

भवानी भैया की आंखों के सामने एक के बाद एक दृश्य तिर रहे थ गांव में सदियों स चला आने वाला शोषण हरिजन बस्ती के भूख से बिलखते लाग !

आये दिन मथुरिया की स्त्री की तरह तड़प-तड़प कर होने वाली असहाय मौतें !

यहां के लोगों का सुंदर नाई की तरह घोर अपमान !

तालाब मंदिर जुलूस उत्सव आदि स्थानों में हरिजनों का तिरस्कार ! उन पर निरर्थक बातों के लिए जुल्म !

कितनी घोर अनीति—अपनी ही मेहनत मजदूरी उधार और कभी-कभी अपने ही खेत और जमीन के बाद भी बस्ती के लोगों का निस्सहाय हो मालिकों के सामने हाथ जोड़े गिड़गिड़ाते रहना !

और भी तरह-तरह का अज्ञात अशिक्षा विवशता

शोषण और अनाचार के एक नहीं अनेकों दृश्य !

इन सभी दृश्यों पर स्तब्ध भवानी भैया की इंद्रियां अपनी समस्त शक्ति को बटोरते हुए युग की एक जटिल समस्या का हल ढूंढ़ने का प्रयास कर रही थी। अभी अभी ऊंचे स्वर में संभाषण देती हुई उनकी वाणी भी। इसीलिए भवानी भैया कुछ कहते-कहते सहसा मूक हो उठे थे।

पर ये सब बाते अनुभूति के धरातल पर जितनी गहराई से उभरी थीं भवानी भैया ने उन्हे उतनी ही तत्परता से एक झटके के साथ फिर से अंदर की ओर वैसे ही धकेल दिया। अब भवानी भैया समस्त इंद्रियो की शक्ति को अपनी ओर बटोरते हुए स्वयं को समझाने लगे—अरे भवानी ! फिर कहां उलझ गये?

कहां के य गांव कहां की बस्ती कहां के ये निर्धन असहाय हरिजन !

और कैसी ये सब अट शंट बातें ठोस लंबा संघर्ष !

हरिजनो की रोटी-रोजी क लिए दीर्घकालीन संघर्ष करना तो गाधी जी जैसे नताओं का काम था जिन्हे किसी प्रकार का चुनाव नहीं लड़ना था।

जिस बड़ा आदमी बनना हो नेता बनना हो चुनाव जीतना हो उसे इन सब

बातों से क्या मतलब?

चुनाव जीतना है तो कुछ ऐसा ही करो—यानी भोली-भाली जनता को कुछ बहलाने वाली बातें !

जादू की तरह तत्काल असरदार !

यहां बैठी भोली भाली जनता को बहलाने के लिए अभी-अभी जो प्रतिज्ञा की है उससे बढ़कर और बात क्या हो सकती है भवानी।

भवानी भैया ने एक बार फिर से अपने श्रोताओं के आगे हाथ जोड़ दिये। इस बार उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा को और गहरे और बड़े स्तर पर दोहराया है। प्रतिज्ञा करते समय उनका स्वर और तेज हो उठा। वे पूरे स्वर में चिल्ला रहे थे मैं हृदय से प्रतिज्ञा करता हूं कि जब तक इस गांव में हमारे हरिजन बस्ती के लोगों को चूड़ा-चमार कहना बंद नहीं होता मैं पैरों में किसी प्रकार का जूता चप्पल नहीं पहनूंगा धूप बरसात जाड़े में मुझे कितनी भी तकलीफ क्यों न हो नंगे पैर ही गांव भर में डोलता फिरूंगा इस तरह आपकी सेवा के लिए मेरा यह तुच्छ शरीर समर्पित हो जाता है तो मैं अपना जीवन सफल समझूंगा स्वयं को उपकृत मान सकूंगा।

उधर इस अंतराल में बिसेसर काका के पूरे चेहरे पर एकाएक काला स्याह धब्बा उभर आया था। वे बुरी तरह व्याकुल हो उठे ब-चाओ मेरे भवानी को बचाओ! अरे मेरे भवानी को शहर लील गया ब चाओ!

पर भवानी की उस चीखती आवाज में बिसेसर काका का वह रुदन कोई सुन नहीं सका।

□ □

क्षमा गोस्वामी

अग्रणी लेखिका। हिंदी के महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं से संपर्क। निरंतर रूप से समसामयिक समस्याओं पर विश्लेषणात्मक और विचारोत्तेजक रचनाओं का प्रकाशन। रेडियो-वार्ता के रूप में भी कई रचनाएं विशेष प्रशंसनीय रहीं।

साहित्य के क्षेत्र में भी उतनी ही गहरी अभिरुचि। नगरीकरण और हिंदी-उपन्यास ग्रंथ आलोचकों के मध्य बहुचर्चित। ग्रंथ में नगरीकरण की प्रक्रिया और हिंदी उपन्यास पर पड़े उसके बहु-आयामी प्रभावों का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है।

मुक्ति-बोध की काव्य-भाषा को लेकर शीघ्र ही एक अन्य रोचक ग्रंथ का प्रकाशन।

कहानी-कविता लिखने में भी अभिरुचि। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से कुछ ऐसी कलात्मक रचनाओं का प्रकाशन भी। कहानी संग्रह के रूप में एक पीढ़ी का दर्द प्रथम प्रयास।

संप्रति जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से पी-एच डी । इसी विश्वविद्यालय से एक अन्य शोध-योजना में संलग्न।